अप्रैल-जून 2024 (वर्ष -4 , अंक -16)

ISSN 2436-5017

हिंदी की गूँज

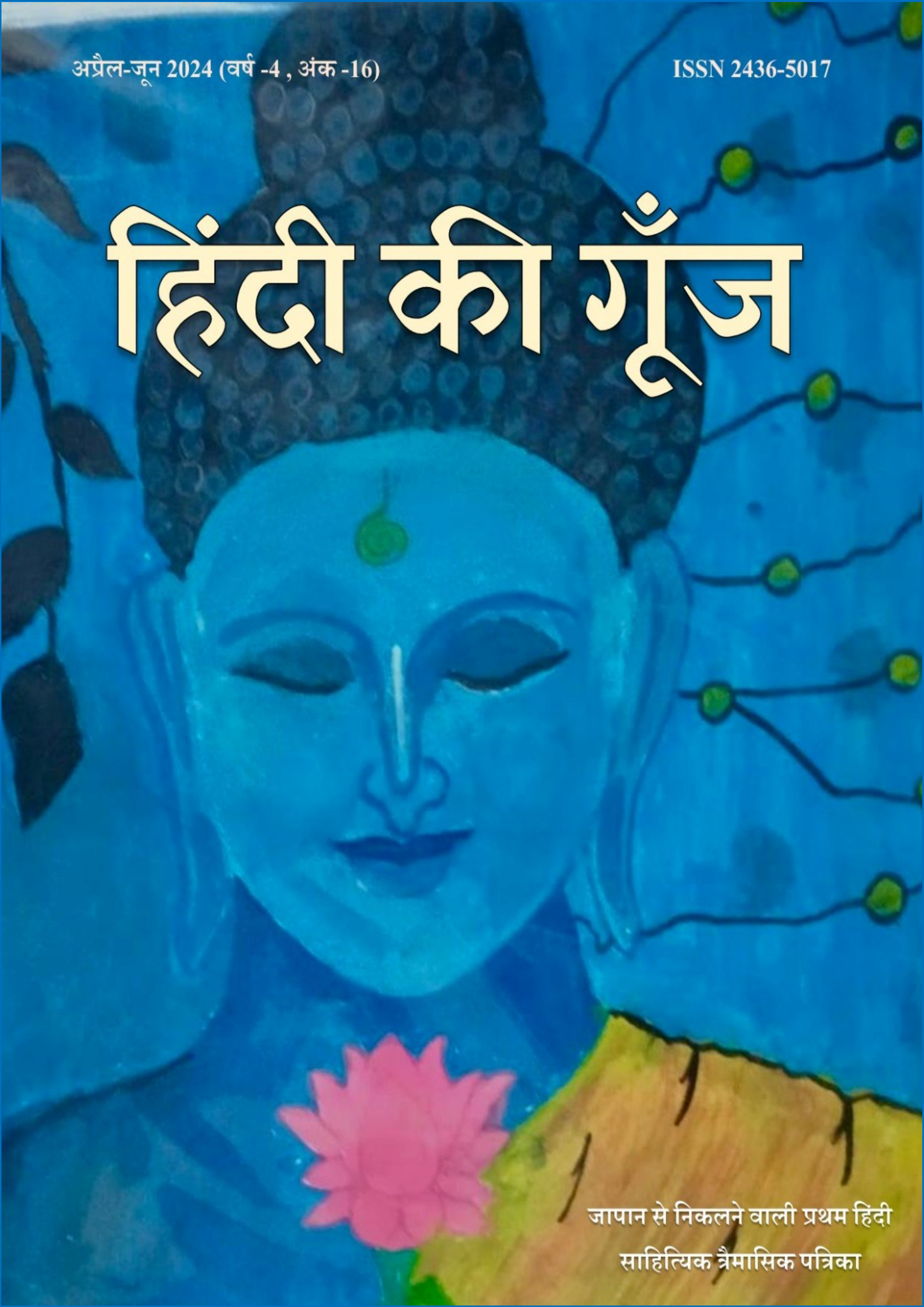

जापान से निकलने वाली प्रथम हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

विश्वरंग कार्यक्रम की तस्वीरें
रविंद्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, भोपाल

संपादक मण्डल

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक,
रमा शर्मा,जापान

संरक्षक
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क(अमेरिका)
डॉ विदुषी शर्मा, नई दिल्ली,भारत

हिंदी की गूंज की शाखाएँ
संरक्षक इंद्रजीत शर्मा जी
1 – न्यूयार्क
129-15, 101 एवेन्यू, रिमंड हिल, न्यूयार्क
+1(917)273-9744

मास्को रसिया में
सुश्री श्वेता सिंह उमा
Address Office:
Proezd Zavoda Serp 1 Molot
10 BC, Integral,Moscow
Russia-111250
Ph:+79254027789

स्वेडन
सुरेश पाण्डेय
Backgarda Vagen 11 tr14341
Varby Sweden
+46 731013196

मॉरीशस
श्रीमती कल्पना लालजी
Lamari Road
Vacoas Mauritius
+230 57133341

लंदन में
श्यामलाल पुरी
16, Upper Woburn Place
London WC1H 0AF
Ph: +44 7432 220184

आस्ट्रिया में
सुश्री सुनीता चावला
Laaerberg Strabe 32/2/71

भारत पानीपत में
सुश्री कंचन सागर
1094, सेक्टर 13/17, हुड्डा ,पानीपत
(हरियाणा) भारत
Ph: 93554 72819

संपादक
प्रो० स्वाति पाल (जानकी देवी महाविद्यालय)
विनोद पाण्डेय (गाजियाबाद)

सह संपादक
कविता गुप्ता (उत्तर प्रदेश)
डॉ विवेक शर्मा (जानकी देवी महाविद्यालय)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल जी
डॉ स्नेहसुधा नवल

विदेश प्रतिनिधि
श्यामलाल पुरी,लंदन
श्वेता सिंह उमा, मॉस्को
मोनी विजय,नेपाल
सुनीता चावला,आस्ट्रिया
कल्पना लाल मॉरीशस

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ सतीश शास्त्री, हरिद्वार
कंचन सागर,पानीपत
विजयापंत तुली,उत्तराखंड
सुनीता श्रीवास्तव, इंदौर
अंशु जैन, देहरादून

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला,अमेरिका

विशेष सहयोगी
ओमप्रकाश सपरा
राकेश छोकर
डॉ सुनीता चौहान
(बोध गया विश्वविद्यालय)

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा,महू

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज, बोध गया विश्वविद्यालय

रक्षा कवच प्रतिनिधि
श्री जय प्रकाश मिश्रा (पुलिस अधीक्षक),
पटना, बिहार

कानूनी सलाहकार
प्रवल माधुरी शर्मा
जयपुर,राजस्थान

मुख्य कार्यालय
टोक्यो, जापान
व्हट्सअप नंबर –
जापान
00818061658299
भारत
9289641577

Twitter @hindikigoonj
इंस्टाग्राम : @hindikeejoonj
@punjabidigoonj
YouTube: hindikigoonj, Tokyo, Japan
YouTube: punjabidigoonj, Tokyo,Japan
फेसबुक पेज :@ हिन्दी की गूंज,टोक्यो,जापान

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

पत्रिका की सदस्यता लेने,रचना भेजने हेतु संपर्क करें
9289641577

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक हैं।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं । संपादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका जापान के ISSN नंबर के साथ हर तीन माह बाद प्रकाशित होती है।

अनुक्रम

संपादकीय
अपनी बात – रमा शर्मा/5
अपनी बात – विनोद पाण्डेय/5

कहानी/लघुकथा
संघर्ष–अजय शर्मा/ 8
बल्लू नायक की बेटी– डॉ सुनील जाधव/9–10
जीना सीख रहे हैं–डॉ बी निर्मला/12
डॉ मरीज तुम्हारे हवाले– डॉ शकील सिद्धकी/17–18
कोर्ट–प्रो पंढरीनाथ पाटिल 'शिवांश'/18
चकोर–रचना श्रीवास्तव /19
उड़ान–रश्मि सहाय/19
बेटी–बेचवा–पूर्णिमा राघव शर्मा/19
गरीब की भावना– अंजना सिंह सेंगर/20
एक तलाक ऐसा भी– निर्मला मूंदड़ा/21
माँ–पूनम गौतम/21
छोटा कलाकार– अमित कुमार कौशल/22–23
जुर्म–प्रगति गुप्ता/23–26
सुगंध–सुमन मालिक तनेजा/28
ढकोसला– सुखमिला अग्रवाल'भूमिजा'/28
संवेदना–गीतेश्वर बाबू 'घायल'/28

धारावाहिक उपन्यास
तलाश अस्तित्व की– अजय शर्मा/11.12

कविता/गीत/गजल
रंगिनी–तेजकरण नारोलिया/13
सबके अपने राम– डॉ रामनिवास 'मानव'/13
सिया में राम की– डॉ पंकजवासिनी/13
कविता–आशीष श्रीवास्तव/14
कर्मवीर का जीवन दुस्कर– सीमा वर्णिका/14
आँगन–मंजु श्रीवास्तव 'मन'/14
मौसम–संगीता ठाकुर/15

कह मुकरी
ना सखि भँवरा–वैशाली रस्तोगी/14
न सखि मटका–डॉ नितिन उपाध्ये/14
ना सखि सावन–प्राची गर्ग/15

कविता/गीत/गजल
जिंदगी की तपन–श्रीधर त्रिपाठी/15
धरती की पूंजी के हिस्सेदार– रामा तक्षक/16
माँ–संजय वर्मा 'दृष्टि'/16
मुझे आने दो इस जगत में– खुशबू सागर /16
पुरानी तस्वीर– अंशु जैन/26
पता भी नहीं चलता– बिलाल पठान/27
कर हर मैदान फतह– अर्चना मुकेश मेहता/30
गजल–अतीश मिश्रा'बुन्नू'/30
गजल– ओम प्रकाश प्रजापति 'ओम'/30
रिवाज चल पड़ा है धौंस जमाने का– कर्नल आदिशंकर मिश्र 'आदित्य'/30
सांई से विनय विनती– लीना शारदा /31
दोहे–मंजू गुप्ता/31
माँ - प्रो स्वाति पाल/31
ख्वाब–प्रो स्वाति पाल/31
वंदे मातरम का पद्यानुवाद– प्रशांत अवस्थी प्रखर/32
बेटियाँ जाने कब बड़ी हो जाती हैं–कृति अवस्थी/32
गजल–सूक्ष्मलता महाजन /32
हिन्दी–नितिन तिवारी/48
काँपता सूरज– शेफालिका श्रीवास्तव/48

बाल कविता
आसमान में नटखट बादल– विहान गर्ग/29
मैं हूँ सुंदर परी–हिमांशी शर्मा/29
गर्मी आई–मन्नत शर्मा/29

राम कथा धारावाहिक
राम का चिंतन - शशि महाजन /20

पुस्तक से
वहश्ते दिल 33–37

पुस्तक समीक्षा/पुस्तक चर्चा
प्रीति श्रीनिवासनः एक सशक्त दिव्यांग - गरिमा भाटी "गौरी" /38–40

संस्मरण
बालिका वधू–उत्तरा शर्मा/40
यमराज या रक्षक – डॉ सुनीता श्रीवास्तव/47

शोध आलेख
आध्यात्मिक अनुसंधान - डॉ अजय शुक्ल/41–45

स्वास्थ्य
व्रत–उपवास–सुनीता चाँदला/46

यात्रा वृतांत
आस्ट्रेलिया की राजधानी कैनब्रा–विनीता तिवारी/46

व्यंग्य
आज की माँ? - सुरेश मेहरा 'राज'/48

रिपोर्ट
सविता चड्ढा द्वारा लिखी पुस्तक"हिंदी पत्रकारिता भूमिका और समीक्षा" का लोकार्पण और उनकी कहानियों पर चर्चा–सविता चड्ढा /6

भोपाल में अन्तरराष्ट्रीय महोत्सव "विश्वरंग" का यादगार आयोजन – डॉ. जवाहर कर्नावट/6–7

बाल चित्रकार
कुवेश सिंह – कवर पृष्ठ
मसवनी – 8 /अभिराज जैन – 12
गुरबानी कौर बिंद्रा – 13
खुशी कौशल–15/दिव्यंका शर्मा – 16
रसगुणजीत कौर – 16
अग्रिम गुप्ता – 16/हिताक्षी जैन – 18
गोपाल – 21 /निवान साहू – 26
कनिका मांडलोइ– 27
प्रणन्या – 28 / विहान गर्ग – 29
आद्विक सोनकर – 29
चार्वी तिवारी – 29
आश्वी अवस्थी – 30
विहान वैभव – 30/इलाक्षी जैन – 32
साक्षी सिंह– 48
मायरा अरोड़ा– 50
रितिका जाटव – 50
धनिष्ठा मित्तल – 50
भूमिका – 50 /ज्योति कौर – 50
नाइशा चौरसिया – 50

अपनी बात

रमा पूर्णिमा शर्मा

विनोद पांडेय

हिन्दी की गूंज दिनों दिन आगे बढ़ रही है और हिंदी का झंडा हर जगह फहरा रही है। इस सब में मेरा अकेली का नहीं आप सबका भी साथ है इस में । अब तो बच्चे भी जुड़ गए हैं हिंदी की गूंज के साथ । विश्व भर से बच्चे अपनी कविताएँ भेजते हैं अपने बनाए हुए चित्र भेजते हैं और बच्चों के बनाए गए चित्र को ही 2 वर्षों से हिंदी की गूंज पत्रिका का कवर पृष्ठ बनाया जा रहा है। हिंदी की गूंज के वार्षिक सम्मान समारोह में सिर्फ बड़ों को ही नहीं बच्चों को भी सम्मानित किया जाता है उनको जापान की ओर से सम्मान पत्र, मोमेंटो और नकद राशि दी जाती है। हिन्दी की गूंज और मेरा भी यही मानना है बच्चों अगर आप मेरे साथ हैं मेरी हिंदी की गूंज के साथ हैं तो हिन्दी की गूंज की पताका को विश्व में फहराने से कोई नहीं रोक सकता न ही झुका सकता है । क्योंकि बच्चे ही तो हमारा भविष्य हैं अगर ये हिन्दी के साथ है हिन्दी की गूंज के साथ है तो हिन्दी विश्व भर में हैं दिनों दिन आगे बढ़ेगी । तो बच्चों आओ अपनी कविताएँ भेजो अपने स्वर अपने चित्र भेजो पेंटिंग्स भेजो हिन्दी पढ़ो आगे बढ़ो आगे बढ़ो।

ये तो बच्चों के नाम सन्देस था बाकी सबको भी मेरा एक संदेश है कि हिन्दी की गूंज में एक नया अध्याय और जुड़ रहा है इसमें अब कहानी ,लघुकथा और कविता इन तीनों विधाओं में , रचनाओं का चुनाव किया जायेगा और जिसकी सबसे सर्वश्रेष्ठ मान की चुनी जाएगी संपादक मंडल द्वारा तथा कुछ और जो गुणीजन है उनके द्वारा इन तीनों विधाओं के लेखकों को भी सम्मानित किया जाएगा तो आप बढ़ चढ़कर अपनी रचना भी चाहिए और इस प्रतियोगिता में जरूर हिस्सा लीजिए ये हर माह आपने भेजनी हैं और पता नहीं कब आपका नंबर लग जाए कब आप जीत जाएं । ये कब हो जाए और किसका नंबर लग जाए कोई नहीं जानता। निर्णय निष्पक्ष होगा और सबको नकद राशि भी मिलेगी कितनी और क्या ये सब को बता दिया जाएगा बस आप हिंदी की गूंज के साथ जुड़िए इसमें अपने सुझाव भी भेजी जो आपकी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे आपकी तस्वीर के साथ और अगर आपको कुछ लगता है कि इसमें कमी है वो जरूर बताइए और जो कुछ अच्छा ही है वो भी जरूरत बताएँ । पत्रिका आपकी अपनी हैं इसे दिल से अपनाएँ और आगे बढ़ायें।

❑❑

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान
hindikeegoonj@gmail-com
9289641577, +818061658299

इस संसार में हर कोई दुखी है, सदैव सुख विरले को ही संभव है । सुख और दुःख पर विजय प्राप्त करने वाला महान हो जाता है । कहानी में , कविता में , संस्मरण में ,उपन्यास में ऐसे उदहारण मिल जाते हैं । सुख दुःख ही जीवन है । हर साहित्य का यही सार है । समाज और साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं । आज भी जब समाज में अच्छी बुरी कोई हलचल होती है तो साहित्य जगत से प्रतिक्रिया आनी शुरू हो जाती है । सोशल मीडिया जब नहीं था तब समाज में हुई हलचलों को फैलने में बहुत समय लगता था लेकिन आज समाज में जरा भी हलचल हो तो हंगामा हो जाता है । सोशल मीडिया पर सामाजिक घटनाएँ फैलती जल्दी हैं लेकिन स्थाई नहीं रह पातीं इसके विपरीत अगर कोई सामाजिक घटना साहित्य लेखन में शामिल हो गयी तो उस घटना को स्थायित्व मिल जाता है और फिर ऐसी घटनाएँ इतिहास की हिस्सा हो जाती है । खैर हम हिंदी की गूँज का इतिहास बनाने के लिए प्रयत्नशील है और यह कारवाँ आगे बढ़ता ही जा रहा है । यह अंक आपको सौपते हुए बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा है । पत्रिका पहले से बेहतर है लेकिन इसे और बेहतर बनाना है । आप सभी से निवेदन है कि कुछ सुझाव जो हम और बेहतर बनाएं हम सब पहुँचाने की कोशिश करें । एक बार फिर आप सभी से इस अंक के प्रकाशन में हुई देरी के लिए माफी चाहते हैं और उम्मीद करते हैं कि इस अंक को भी हर अंक की तरह आप सभी का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिलेगा । बहुत से नए कदम उठाए हैं पत्रिका के लिए जिन्हें रमा शर्माजी ने बताया है आपको । आपके सुझावों का इंतजार रहेगा ।

❑❑

संपादक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान

रिपोर्ट

सविता चड्ढा
नई दिल्ली

'हिंदी पत्रकारिता भूमिका एवं समीक्षा' का लोकार्पण

सविता चड्ढा द्वारा लिखी पुस्तक''हिंदी पत्रकारिता भूमिका और समीक्षा'' का लोकार्पण और उनकी कहा. नियों पर चर्चा संपन्न–
''हिंदी पत्रकारिता भूमिका एवं समीक्षा' का लोकार्पण पंजाब केसरी की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा,श्री अनिल जोशी, श्री ऋषि कुमार शर्मा ,डॉ. मुक्ता, ओमप्रकाश प्रजापति एवं मनमोहन शर्मा जी के कर कमलों से संपन्न हुआ। लेखिका सविता चड्ढा ने उपस्थित सभी माननीय अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करते हुए कहा कि उनका लेखन अपने पाठकों और शुभचिंतकों शुभकामनाओं और आशीर्वाद से ही संभव हो पता है । उन्होंने अपने प्रकाशकों का भी आभार व्यक्त किया सदैव उनकी पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए तत्पर रहते हैं।
'' नारी अस्मिता व अंतरवेदना की कहानियां'' संग्रह पर चर्चा के प्रारंभ में मंच संचालन करते हुए डॉ. कल्पना पांडेय 'नवग्रह' ने कहा '' सविता चड्ढा की कहानियाँ नारी सशक्तिकरण के लिए अंतरात्मा से उठी हुई वो आवाज है जो न केवल एक दूरदृष्टि देती है बल्कि संवेदनाओं के तार भी झंकृत करती है। दिशा देती , खुद से पहचान कराती भावपूर्ण कहानियाँ।''

डॉ पुष्पा सिंह बिसेन ने कहा सविता चड्ढा की शख्सियत, व्यक्तित्व और कृतित्व बहुत विशाल है। उन्होंने सभा को सूचित किया कि वह सविता चड्ढा के संपूर्ण व्यक्तित्व पर पर एक खंडकाव्य लिख रही है । इस सुखद सूचना को सुनकर सभी ने कर्तल ध्वनि से उनके निर्णय का स्वागत किया ।

इस अवसर पर उमंग सरीन, शकुंतला मित्तल , डॉ .शुभ्रा,अमोद कुमार ,डॉ कविता मल्होत्रा,शारदा मित्तल , अमोद कुमार ,अंजु क्वात्रा,सरोज शर्मा ,वीना अग्रवाल ने सविता चडढा के कहानी संग्रह पर अपने विचार रखे
''नारी अन्तर्वेदना की कहानियाँ'' वेदना,और पीड़ा को झेलते हुए भी स्वाभिमान रख कर संघर्ष करती उन नारियों की कहानियां हैं,जो संघर्ष में ही समाधान खोज अपना जीवन मार्ग तलाशती हैं।

❑❑

डॉ. जवाहर कर्नावट
भोपाल

भोपाल में अन्तरराष्ट्रीय महोत्सव ''विश्वरंग'' का यादगार आयोजन

रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा आयोजित 5वां अन्तरराष्ट्रीय महोत्सव 'विश्वरंग' 21 से 24 दिसम्बर 2023 तक विश्वविद्यालय परिसर में सम्पन्न हुआ। विश्वरंग भारतीय भाषाओं, कला,साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में एक अद्वितीय वैश्विक आयोजन है। इस वर्ष के विश्वरंग में देश विदेश के 500 से अधिक विद्वान, साहित्यकार, शिक्षाविद, कलाकार सम्मिलित हुए और सभी को अपनी रुचि और कौशल के अनुरूप 50 से अधिक सत्रों में प्रस्तुति देने का अवसर मिला।

विश्वरंग की शुरुआत 21 दिसम्बर की शाम को विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी एवं विश्वरंग के निदेशक श्री संतोष चौबे के करकमलों द्वारा टैगोर प्रतिमा पर पुष्पांजलि, लोक कलाओं और लोकनृत्यों के मनभावन प्रदर्शन और पुस्तकों के लोकार्पण से हुई। विश्वरंग सचिवालय और प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केन्द्र द्वारा सात देशों (ब्रिटेन, सिंगापुर, रूस, कनाड़ा, फिजी, यूएई, नीदरलैंड) के चयनित रचनकारों की पृथक–पृथक पुस्तकें जारी की गईं जिसका संयोजन श्री संजय सिंह राठौड़ ने किया।
इस अवसर पर वनमाली सृजन पीठ के निदेशक श्री मुकेश वर्मा, विश्वरंग के सह निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई, डॉक्टर सिद्धार्थ चतुर्वेदी, संयोजक डॉक्टर जवाहर कर्णावट, कुलपति प्रो. रजनीकांत, यूएसए से श्री इंद्रजीत, श्री अनूप भार्गव, नीदरलैंड से रामा तक्षक, जापान से रमा पूर्णिमा शर्मा,पुर्तगाल से शिवकुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विश्व रंग का मुख्य उद्घाटन समारोह 22 दिसंबर को पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक के मुख्य आतिथ्य तथा डॉक्टर राधावल्लभ त्रिपाठी पूर्व कुलपति केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री अतुल कोठारी राष्ट्रीय सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, डॉ माधुरी रामधारी महासचिव विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस तथा श्री अनिल जोशी अध्यक्ष वैश्विक हिंदी परिवार के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस समारोह में डॉक्टर जवाहर कर्णावत द्वारा संपादित 55 देश में हिंदी की रिपोर्ट विश्व रंग कैटलॉग तथा विश्वरंग पत्रिका का लोकार्पण भी किया गया।

समारोह में भारतीय भाषाओं के सात विद्वानों डॉक्टर धनंजय वर्मा (हिंदी) डॉक्टर जानकी प्रसाद शर्मा (उर्दू) श्री मनोरंजन व्यौपारी (बांग्ला) श्री वसंत आबा डहाके (मराठी) सुश्री सुजाता चौधरी (उड़िया) प्रो. कोलकपुरी एजाक (तेलुगु) एवं

श्री महादेव टोप्पो (हिंदी एवं कुडुख) को विश्व रंग सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री निशंक ने टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र का शुभारंभ भी किया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन श्री विनय उपाध्याय ने किया ।

22 दिसम्बर को ही प्रसिद्ध विचारक श्री पवन वर्मा और श्री अनिल जोशी का ''हमारा भाषाई वैविध्य हमारी ताकत'' विषय पर व्याख्यान हुआ। इसी दिन देश–विदेश के विद्वान वक्ताओं ने विभिन्न सत्रों में हिंदी शिक्षण के अनुभव को साझा करने के साथ ही ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता, शिक्षण में साहित्य, कला और सिनेमा की भूमिका, सामाजिक संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण, शिक्षण में अधुनातन टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सल हिंदी टेक्स्ट आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श किया। इस विमर्श में भारत से डॉक्टर सुरेश ऋतुपर्णा, श्री राकेश दुबे, श्री नारायण कुमार, श्रीमती कुमुद शर्मा, डॉ. रेखा सेठी, डॉ. खेम सिंह डेहरिया, श्री बालेंदु दाधीच, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, श्री वरुण कुमार, डॉ. गरिमा श्रीवास्तव, श्री रविंद्र कात्यायन, श्री विजय मिश्रा, प्रो अमिताभ सक्सेना, डॉक्टर जितेंद्र श्रीवास्तव, प्रो सत्यकेतु सांकृत, श्री राजेश कुमार के अलावा श्रीमती जय वर्मा (यूके) शिवानी भारद्वाज (स्वीटजरलैंड) डॉ. पुष्पिता अवस्थी (नीदरलैंड), अनूप भार्गव (यू एसए) प्रो. उल्फत मुखीबोआ (उज्बेकिस्तान) श्री शिव कुमार सिंह (पुर्तगाल), सुश्री प्रगति टिप्पणी (रूस) की सक्रिय भूमिका रही। इसके अलावा वनमाली सभागार में डॉ. दिव्या माथुर की पुस्तक ''तिलिस्म'' डॉ. पुष्पिता अवस्थी की पुस्तक ''सेपरेटेड इमोशंस'' डॉ जवाहर कर्णावट की ''विदेश में हिंदी पत्रकारिता'' फिल्म पर भी चर्चा हुई।

दिनांक 23 दिसंबर की शुरुआत श्री देवेंद्र मेवाड़ी का व्याख्यान ''हमारी धरती का भविष्य'' से हुई। सिनेमा और ओटीटी के लिए लेखन, एशियाई कहानी का परिदृश्य, कहानी लिखने की कला, अनुवाद का वर्तमान परिदृश्य, समकालीन प्रवासी साहित्य, उपन्यास की वैश्विक अवधारणा, लोकप्रिय साहित्य पदावली स्वर आदि विषयों पर विस्तार से बातचीत हुई। इस बातचीत में देश के प्रख्यात लेखक श्री अजय ब्रह्मत्मज, निलेश मिश्रा (पॉड कास्टर) श्री विनोद तिवारी, श्री हरि भटनागर, श्रीमती सोमा बंदोपाध्याय, श्री ओम शर्मा, श्री विजय कुमार, उषा किरण खान आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। संध्या को प्रतिभा सिंह बघेल एवं समूह के गायन ने समा बांधा।

विश्वरंग के अंतिम दिन 24 दिसंबर की शुरुआत ''भारतीय चित्रकला का सच'' विषय पर श्री अशोक भौमिक के व्याख्यान से हुई। समानांतर सत्रों में ''भारतीय भाषा में अनुवाद'', ''लोक वाचिक परंपरा का सांस्कृतिक पक्ष'', ''कथेतर गद्य का भविष्य'', ''समकालीन कविता'' आदि महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। प्रवासी भारतीय रचना पाठ का आयोजन श्री मनोज श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हुआ जिसमें अतिला कोतलावल (श्रीलंका), वंदना मुकेश (ब्रिटेन), स्नेह ठाकुर (कनाडा), रमा पूर्णिमा शर्मा (जापान), मृदुल कीर्ति (ऑस्ट्रेलिया), अभिषेक त्रिपाठी (आयरलैंड), विनोद दुबे (सिंगापुर), ऋचा जैन (लंदन), राम तक्षक (नीदरलैंड), जय वर्मा (यूके), अनूप भार्गव (यूएसए) आदि ने अपने वक्तव्य से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। विश्वरंग का समापन साधौ बैंड की प्रभावी प्रस्तुति से हुआ।

इस प्रकार विश्व रंग महोत्सव 2023 देश–विदेश के भाषा साहित्य कला और संगीत प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। इस उत्सव में न केवल प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया अपितु सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और वैश्विक समझको बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्वरंग के निदेशक श्री संतोष चौबे की परिकल्पना और मार्गदर्शन तथा उनकी टीम के अथक परिश्रम से विश्वरंग के आयोजन ने नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया।

❑❑

अजय शर्मा
जयपुर,राजस्थान

संघर्ष

"चिल्लाओ मत।सारा घर सिर पर उठा रखा है। तंग आ चुकी हूं मैं तुम्हारी इस रोज–रोज की किच–किच से।", अनिता ने तेज आवाज में अपने पति आलोक से कह तो दिया, लेकिन ऐसा महसूस हुआ जैसे अंतर्मन में कोई कांच तड़क गया हो और उसकी किर्चें बिखर कर उसके समूचे व्यक्तित्व को घायल कर गई हों।

यों देखा जाए तो आलोक हमेशा से ऐसा नहीं था। अतीत के झरोखे से झांकती अनिता विश्वविद्यालय के उस हरे भरे विशालकाय परिसर में भ्रमण करने लगी, जहां वह हिंदी साहित्य में परास्नातक अध्ययन पूर्ण करने के लिए प्रविष्ट हुई थी। आलोक के अध्ययन का विषय था –दर्शनशास्त्र। भारतीय सभ्यता व संस्कृति की स्वर्णिम धरोहर का अध्ययन करने के अलावा प्रशासनिक परीक्षाओं में बैठकर अपना भाग्य आजमाने का विचार भी इसके मूल में था। पिछले कुछ वर्षों से यूपीएससी व राज्य सेवा परीक्षाओं में दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी अच्छी सफलताएं प्राप्त कर रहे थे।

एक संपन्न माता–पिता की इकलौती और लाड़ली संतान आलोक भी शायद इन्हीं मधुर सपनों में डूबा हुआ अपनी मंजिल की तरफ बढ़ता जा रहा था। इसी अवधि में दोनों की मुलाकात एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान हुई थी। आलोक, अनिता के कत्थक नृत्य को देखकर अपनी सुध बुध खो बैठा। और अनिता 'भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विषय में वर्तमान पीढ़ी का दृष्टिकोण' व्याख्यान माला में आलोक के प्रभावशाली व्यक्तित्व और अकाट्य तर्क शैली को देखकर व सुनकर मंत्रमुग्ध रह गई थी। बस, बधाई देने की पारस्परिक मुलाकात का यह औपचारिक क्षण आगे चलकर कभी ना साथ छोड़ने वाले कसमों वादों व जीवनसाथी बनने के सपनों में कब परिणित हो गया ,पता ही नहीं चला।

समय मानो पंख लगाकर उड़ता जा रहा था। आलोक की एम ए दर्शनशास्त्र पूरी होने के बाद से ही उसने प्रशासनिक परीक्षाओं में बैठना शुरू कर दिया था। वही हिंदी साहित्य से परास्नातक अध्ययन पूर्ण करने के बाद अनिता ने नेट जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण करके विश्वविद्यालय से ही 'समकालीन साहित्य में नारी चेतना की प्रवृतियां' विषय पर शोध कार्य आरंभ कर दिया था। एक दूसरे के लिए बेकरारी इस कदर बढ़ी कि दोनों ने अपने लक्ष्य भुलाकर एक होने का निर्णय ले लिया। लेकिन आलोक के धनाढ्य पृष्ठभूमि वाले माता–पिता ने इस रिश्ते को कभी भी मन से स्वीकार नहीं किया।

कुछ दिन तो मधुमास और उसकी सुखद स्मृतियों में ही बीत गए। अनिता की गोद में अन्वी नामक एक सुहानी परी आ गई थी। अब धीरे–धीरे जिंदगी का यथार्थ सामने आने लगा। आलोक के माता–पिता की अनिता के प्रति नापसंद खुलकर जाहिर होने लगी। हालात इतने बिगड़े कि आखिरकार उन दोनों को घर से अलग होकर अपना आशियाना बनाना पड़ा। आलोक अब तक अपनी जिंदगी में स्थापित नहीं हो पाया था। धीरे–धीरे उसका एक नया रूप सामने आने लगा– पराजित, टूटा हुआ और पलायन वादी आलोक। उच्च सरकारी पद के सपने टूट गए थे और वह एक निजी विद्यालय में निम्न वेतनमान पर कार्य करने के लिए विवश हो गया था। अनिता पर चिल्लाना, अन्वी पर हाथ उठाना, पड़ोसियों और दुकानदारों से अनावश्यक झगड़ा मोल लेना, उसकी आदत बन गई थी।

जाने कब तक अनिता बैठे–बैठे सूजी हुई लाल आंखों से अतीत के गलियारों में भटकती रहती कि अन्वी ने उसकी तंद्रा तोड़ी," मां उठो ना।बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दो।"दोपहर के 2:00 बज गए थे। अन्वी स्कूल से घर आ गई थी। फटाफट गरम फुल्के सेंक कर उसको खाना परोस ही रही थी कि अचानक अन्वी ने कहा, "जानती हो मम्मी, आज हमारे सर ने क्या कहा? उन्होंने कहा कि हर इंसान को अपने आप से तीन सवाल पूछने चाहिए। पहला ,मैं कौन हूं? दूसरा, मैं इस संसार में क्यों आया हूं? और तीसरा, मैं इस क्षण क्या कर रहा हूं?"

अन्वी के मुंह से निकले इन वाक्यों ने मानो पल भर में अनिता के अंतर्मन को प्रकाशित कर दिया। सच ही तो कह रही है मेरी छोटी बच्ची। आखिर मैं भी तो परमात्मा का एक अव्यक्त अंश हूं और इस अंश का सम्यक उद्भासन ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। हर जीवित प्राणी का लक्ष्य है। फिर मैं क्यों हार मान कर बैठ गई। अपना दीपक खुद बनूंगी। अपना पथ खुद आलोकित करूंगी। पराई रोशनी की आस कभी नहीं करूंगी।

रसोई का काम समाप्त करके अनायास ही अनिता गोदरेज की अलमारी के ऊपरी हिस्से में रखे अपने शैक्षणिक व प्रशैक्षणिक दस्तावेजों को संभाल रही थी। कल सुबह जाकर शहर के एक प्रतिष्ठित बालिका महाविद्यालय में हिंदी साहित्य की प्रवक्ता के रूप में अपने जीवन संघर्ष की शुरुआत करता उसका उज्ज्वल व्यक्तित्व उसकी आंखों में प्रतिबिंबित हो रहा था। ढलती हुई शाम का सूरज भी मानो अपनी किरणों के साथ यह संदेश बिखेर रहा था कि एक सपने का अंत, जीवन का अंत नहीं है। जीवन हर हाल में जीवन है... जीने के लिए... रहने के लिए... चलते रहने के लिए...

❑❑

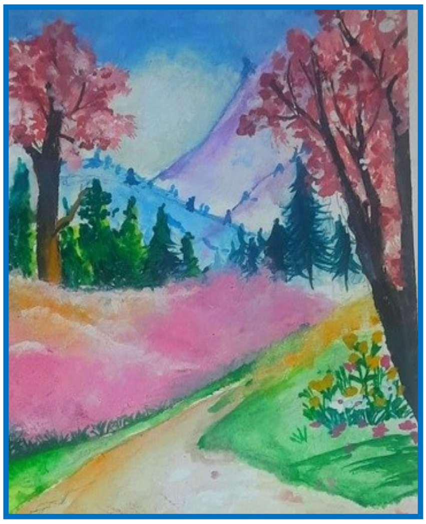

मंसवनी
कक्षा–5
उम्र– 10 वर्ष

बल्लू नायक की बेटी

अंतिम भाग

डॉ सुनील जाधव
नांदेड़ , महाराष्ट्र

बल्लूनायक को 13 संतान थी। जिनमें सबसे छोटी और लाड़ली बेटी मल्लुकी थी। बल्लूनायक प्रजा वत्सल और दानी भी थे। वे खुलकर अपनी प्रजा में धन और धान्य दिया करते थे। प्रजा के साथ उनसे जुड़े 16 नायक भी उन्हें अपने ईश्वर की तरह पूजते थे। उनकी आज्ञा उनके लिए पत्थर की लकीर हुआ करती थी। वे 60 साल के होने के बावजूद भी जवान युवकों के भांति दिखाई देते थे। उनकी मजबूती का कारण उनकी दिनचर्या थी। जिसमें व्यायाम, योग, शस्त्र–अस्त्र चलाने का अभ्यास आदि हुआ करता था। ,क सुबह वे तलवार से अभ्यास कर रहे थे कि, उस समय एक युवक आया और उसने अपनी बात बल्लूनायक के सामने रखी। बल्लूनायक क्रोध से आगबबूला हो गये। किन्तु उसकी निर्भीकता से प्रभावित हुए। उन्होंने उसे तलवार द्वंद्व की चुनौती देते हुए कहा, ''युवक, मुझे तुम्हारी निर्भीकता पसंद आयी। कोई भी पिता अपने बेटी के लिए योग्य वर की तलाश करता है। उसे परखता है और तब ही वह अपनी बेटी को उसे सौंपता है। मुझे भी तुम्हें परखना होगा। तुम अच्छा बोलते हो, तुम में निर्भीकता है, किन्तु मुझे यह देखना है कि, क्या तुम वीर योद्धा हो। इसके लिए तुम्हें मुझसे तलवार द्वंद्व में पराजित करना होगा। तुम यदि मुझे पराजित करने में कामयाब हो गये तो मल्लुकी का हाथ मैं तुम्हें सौंप दूंगा। यदि तुम्हें मंजूर हो तो आओ अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालो।''

“माफ करना मैं अपने से बड़ों पर तलवार नहीं उठाता। किन्तु तुम ने मेरे सम्मुख चुनौती रखी। मेरी वीरता का परिचय तुम्हें देना अब मेरे लिए आवश्यक हो गया है, तो सावधान द्वंद्व के लिए तैयार हो जाओ।” दोनों की तलवारें चमक उठी। सारे तांडे में तल. वार की खन–खनाहट को साफ–साफ सुना जा सकता था। दोनों को युद्ध करते देख तांडो के लोगों को आपस में दो सिंह लड़ने का आभास हो रहा था। बल्लूनायक तलवार के शक्तिशाली प्रहार किए जा रहे थे। सुखा भी अपनी वीरता का परिचय दे रहा था। किन्तु अनुभवी और बलवान बल्लूनायक जिसने अपने जीवन कभी किसी से पराजय स्वीकार नहीं किया थी, आज वह कैसे पराजित हो सकता था। उसने एक ऐसा प्रहार किया की सुखा की तलवार बीच में से टूट गयी। इस से पूर्व द्वन्द्व आगे बढ़ता इतने में एक अजनबी आवाज ने इस द्व द्व को रोक लिया था।

“रुको, बल्लूनायक ये मेरा बेटा है। सुखा.... मांडण राठोड़ का बेटा है। जिसके साथ तूने अपनी बेटी मल्लुकी की सगाई बचपन कर दी थी।”

इस रहस्य के उद्घाटन से बल्लूनायक के सामने समस्याओं का समाधान हो चुका था। बल्लूनायक सुखा की वीरता से बेहद प्रभावित था।

“मांडण, तेरा बेटा कोई मामूली युवक नहीं। यह तो तेरे जैसा ही योद्धा है रे। मैं ऐसे ही जंवाई के सपने देखा करता था। तूने मेरे सपनों को साकार कर दिया। आ मित्र मेरे गले लग जा। जल्द ही मल्लुकी और सुखा का विवाह हम करवा देते हैं।” मल्लुकी छुपकर यह सारा दृश्य देख रही थी। इस दृश्य से वह खुशी से झूम उठी थी। वह अपने रोम–रोम से अपने बाबा को धन्यवाद देना चाहती थी। उसे उसका प्रियकर मिला गया और बचपन की सगाई वाला प्रियकर के रूप में ही पति भी मिल गया था। तांडे में खुशी का माहौल था कि, ऐसे में एक मुगल सिपाही के आने की सूचना उन्हें मिली। पता चला की उनके नाम से एक पत्र बादशाह ने भेजा है। उसमें बड़े सम्मान के साथ उन्हें दिल्ली बुलाया गया हैं।

बल्लूनायक कभी भी उतावली में निर्णय नहीं लेते थे। वे पंचों के पास गये और सलाह ली। पंचों में उन्हें बताया की बादशाह ने उन्हें बड़े सम्मान के साथ बुलाया है तो स उन्हें उनका मान रखने के लिए जाना चाहिए। हो सकता है कि, आपकी ईमानदारी, नेकी, दानशीलता, वीरता के कारण हमें वे 'सर ए हिंदी' का ताम्रपट दे दें। किन्तु बल्लूनायक के बड़े बेटे माइदास ने इसमें किसी षड्यंत्र को महसूस किया और अपने पिता को सजग करने का प्रयास किया। किन्तु बल्लूनायक अपने पंचायत पर विश्वास करते थे। उन्होंने उनकी बात मानी और बादशाह के दरबार चले गये।

बल्लूनायक को बादशाह द्वारा बुलाये जाने का असली कारण पता नहीं था। उसे सम्मान दरबार में लाया गया। जैसे ही वे दरबार में गये बादशाह ने बल्लूनायक को सामने दे खकर कहा, ”मैं तुम्हें चौबीस हजार की जागीर, मुगलों के अधीन पाँच हजार एकड़ जमीन, दिल्ली में विशाल महल बनाने की अनुमति देता हूँ। जहाँ तुम अपना आलीशान जीवन जी सकते हो। मेरा जासूस फकीर के भेस में नवरात्रि के समय तुम्हारी बेटी को देखा आया और उसने बताया कि, तुम्हारी बेटी मल्लुकी मेरी सभी बेगमों से भी खूबसूरत हैं। इसे तो हमारे राज महल में हमारी बेगम बनकर रहना चाहिए। बस जब से मल्लुकी की खूबसूरती के बारे में सुना है, मेरे रातों कि निंद और दिन का चौन खो गया है। इसीलिए तुम्हें अपनी मल्लुकी को मुझे सौंपना होगा। मैं उसे अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ।” किन्तु बल्लूनायक को जैसे ही बादशाह की मंशा पता चली तो, वह क्रोधित हो गया और अपनी सिरोही नामक तलवार को बाहर निकालना चाहता ही था कि, उनके परामर्श दाता चोखाराय ने उन्हे रोक लियाद्य और अपने नायक को समझाते हुए कहा ”हम इस वक्त दुश्मन के इलाके में हैं। वे ला खों हैं और हम सिर्फ पांच। यह तलवार चलाना इस वक्त मूर्खता होगी। हमें पहले तैयारी करनी चाहिए और बाद में हम इनसे निबट सकते हैं।”

बादशाह ने धमकी दी ''नायक, चुपचाप हमारा उपहार स्वीकार करों या हम तुम्हारे तांडो को नेस्तनाबूद कर देंगे और तुम्हारा सर कलम करके मल्लुकी को हम अपनी बेगम बनायेंगे द्य निर्णय तुम्हारा है, बादशाह का सम्मान पाना है या इस दुनिया से बिदा होना है।” बात को आगे बढ़ता देख माइदास ने अपनी चतुरता का परिचय देते हुए कहा, ''बादशाह, हम अपना कोई भी काम अपने पंचायत को बिना पूछे नहीं करत. ेाकृपया हमें उनसे सलाह –मशवरा करने की अनुमति दें।” बादशाह ने उन्ह. े धमकी से भरा हुआ आदेश दिया कि, जल्दी मल्लुकी को हमें सौंप दें।

बल्लूनायक क्रोध को अपने भीतर दबाएं अपने तांडे में लौट आए। सबने उनकी आँखों में क्रोध और

आँसुओं को देखा। जब सारे तांडे को यह बात पता चली तब सबने मिलकर यह तय किया कि ''हमारे प्राण भले ही जायेंगे पर मल्लुकी नहीं जाएगी।'' एक स्वर में नारा गूंज उठा था द्य मल्लुकी मात्र नायक की बेटी नहीं थी, बल्कि वह सारे तांडे का मान–सम्मान थी । सोलह नायकों की बैठक हुई। तय किया गया कि, मेवाड़ के सांभर झील के किनारे स्थित जंगल में छपामार युद्ध की तैयारी की जायेगी। इधर तैयारी चल रही थी, तो उधर दिल्ली में बादशाह मल्लुकी से विवाह करने ले लिए बेताब बैठा था।

बादशाह ने जो मोहलत दी थी अब वह समाप्त हो चुकी थी। किन्तु बल्लूनायक का कोई जवाब नहीं मिल पाया था। ऐसे में बादशाह को सैनिकों से पता चला कि, बल्लूनायक का तांडा अपने नियोजित स्थल पर नहीं है। बादशाह क्रोधित हुआ उसने दरबार में ऐलान किया कि "जो मल्लुकी को लायेगा उन्हें बहुत बड़ी जागीर दी जाएगी।" मीर जाफर ने मल्लुकी को लाने की चुनौती को स्वीकार किया। वह बारह हजार सैनिकों के साथ मल्लुकी को लाने के लिए निकल पड़ा। उसने कुछ समय में बल्लूनायक को ढूंढ निकाला और बारह हजार सैनिकों के साथ बल्लूनायक पर टूट पड़ा। बल्लूनायक के साथ भीषण युद्ध हुआ। प्रत्येक बंजारे ने अपनी वीरता का परिचय दिया। उसके सामने मीर जाफर के सैनिक गाजर मूली की तरह कटते जा रहे थे। मीर जाफर अधिक समय तक टिक नहीं पाया। बल्लूनायक के सिरोही नाम तलवार से मीर जाफर का सर धड़ से अलग कर दिया। बादशाह को जब यह बात पता चली तो, वह क्रोध से आग बबूला हो गया। मीर जाफर के किस्से ने सारे सैनिकों में एक तरह का भय बैठ गया था। बादशाह हार मानने के लिए तैयार नहीं था। उसने फिर से मल्लुकी को लाने की चुनौती दरबार में रखी। इस बार मेहरम खान ने चुनौती को स्वीकार किया। मेहरम खान पहले से दोगुने सिपाही के साथ मल्लुकी को लाने के लिए निकल पड़ा था। बंजारे मरना जानते थे पर झुकना नहीं। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते थे। भीषण युद्ध हुआ। बल्लूनायक के सिपाही यमदूत की तरह मेहरम खान की सैना को नरक भेज रहे थे। जब मेहरम खान बल्लूनायक के सामने आया उसने बल्लूनायक की सिरोही नाम तल. वार देखी। उसकी चमक से वह पहले ही भयभीत हो चुका था। वह उस तल. वार का सामना नहीं कर पाया। तल. वार ने सीधे मस्तक से होते धड़ को काट दिया। वह जमीन पर दो भागों में विभाजित हो चुका था। इस दृश्य को दे ख जो कुछ सैनिक बचे थे भय से काँपते हुए वहाँ से भाग गए। इस युद्ध में सुखा ने भी अपनी वीरता का परिचय देते हुए कई सौ सैनिकों को मौत के घाट उतर दिया था। जिसमें वह घायल भी हुआ था। लेकिन मल्लुकी का प्यार उसे मौत के दरवाजे से वापस खींच कर ले आया।

बल्लूनायक ने दो युद्ध तो जीत लिए थे किन्तु, उसके सामने एक और चिंता ने सर उठा लिया था। इस युद्ध में भारी मात्रा में बल्लूनायक के सैनिक शहीद हो चुके थे। तांडे के लोग अब तीसरे युद्ध के लिए तैयार नहीं थे।

बल्लूनायक ने पंचायत के सामने अपनी बात रखी ''मैं बादशाह की मंशा कभी भी पूरी नहीं होने दे सकता। मल्लुकी को किसी भी हालत में मैं उसे नहीं सौंप सकता। पर हमारे हजारों सैनिक शहीद होने से हमारी बहुत क्षति हुई है। तांडे के लोग अब तीसरा युद्ध नहीं चाहते हैं। वे भयभीत हैं कि, तीसरे युद्ध में कोई नहीं बचेगा। मैं क्या करूँ? एक और अस्मिता है तो दूसरी और मेरे लोग।" बल्लू नायक की बात सुनकर पंचायत और 16 नायकों ने निर्णय लिया कि, हमें अपने लोगों से अधिक हमारी अस्मिता प्यारी है। हम मर जायेंगे पर झुकेंगे नहीं। चहूँ ओर एक ही आवाज गूंज उठी थी।

मल्लुकी ने जब सारा दृश्य देखा और अपने पिता तथा अपने लोगों की बातें सुनी तो उससे रहा नहीं गया। उसने युद्ध का विरोध करते हुए कहा ''बाबा, मेरे लिए हजारों सैनिकों ने अपने प्राण त्याग दिए। हजारों माताएँ, बहने ढावलो (सैनिकों) को याद कर रो रही हैं द्य उन्हें पता नहीं कि, अब अगले युद्ध में उनका बेटा, पति, भाई घर वापस लौटकर आएगा या नहीं। इसीलिए मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं स्वयं बादशाह के दरबार में जाकर उसे समझाऊँ। मुझे पता है कि, यह तुम्हारी अस्मिता है । पर मैं वचन देती हूं कि तुम्हारी अस्मिता पर कोई दाग नहीं आयेगा।"

बल्लूनायक को मनाने में मल्लुकी कामयाब हुई और वह बादशाह के दरबार में पहुँच गई। बादशाह ने मल्लुकी के बारे में मात्र सुना था पर कभी देखा नहीं था। मल्लुकी बादशाह के सामने निर्भीक होकर अपने वाक चातुर्य के साथ कहती है कि "बादशाह, तुम मेरे पिता समान हो। इस महल की रानियाँ मेरी माँ समान हैं।" मल्लुकी ने एक ही झटके में अपने वाक चातुर्य का परिचय देते हुए भरी सभा में बादशाह को अपने पिता और रानियों को माँ के रूप में संबोधित किया। इससे सभी रानियाँ प्रभावित तो हुई ही साथ में सभा में बैठे सभी सेनापति, सैनिक, मंत्री, अधिकारी मल्लुकी के इस वाक चातुर्य से प्रभावित हुए और सभा एक साथ तालियों से गूंज उठी थी। सभा में ऐसी तालियाँ कदाचित ही गूंजा करती थीं। आज एक अरसे के बाद दरबार में तालियाँ गूंज उठी थी। जिस कारण बादशाह जो अब तक क्रोधित था। अब दरबार और रानियों को मल्लुकी के पक्ष में जाता देख उनके क्रोध ने अब प्रसन्नता का स्थान ले लिया था। मल्लुकी के चेहरे का तेज और वाक चातुर्य देख और सुनकर दरबार को लगा कि, यह कोई दिव्य संत–फकीर, महात्मा है, जिनकी ऐसी वाणी का स्रोत में सारा दरबार उसमें डूबकर तृप्ति का आनंद ले रहा था। वाणी की धारा निरंतर प्रवहित हो रही थी।

"हे महान राजा! तुम इस विश्व के रक्षक हो। अपनी जनता से पिता के समान प्यार करने वाले राजाओं के राजा, पिता समान बादशाह बल्लुनायक बिंजरावत की बेटी मल्लुकी का सलाम कबूल करें।" कहते ही बादशाह ने प्रतिक्रिया स्वरूप कहा "बेटी, सलाम कबूल हैं।" कहते ही सारे दरबार में तालियाँ गूंज उठीं।

बादशाह मल्लुकी के वाक चातुर्य से प्रभावित हुए और उसका सम्मान करते हुए हरी चुनरिया देकर उसे अपनी बेटी स्वीकार किया। हाथी पर बैठा कर उन्हें अपने घर भेज दिया। बंजारा तांडो और व्यापार पर लगी सारी पाबंदियों को हटा दिया गया था। मल्लुकी ने बिना शस्त्र,अस्त्र उठायें बादशाह के विचारों को बदल दिया था और बंजारों को सम्मान से जीने का अधिकार भी दिलवा दिया था। तांडो में मल्लुकी के इस वाक चातुर्य की खूब प्रशंसा हुई। धूम–धड़ाके के साथ उसका स्वागत किया गया। पंचायत की रजा मंदी से मल्लुकी का विवाह उसके प्रियकर सुखा से करवा दिया गया।

❑❑

तलाश अस्तित्व की

अजय शर्मा
जयपुर, राजस्थान

अध्याय–5

जिंदगी में अनायास ही घटे इस घटनाक्रम से यश का मन कुछ अव्यवस्थित सा हो गया था।अब उसे अपने ऑफिस जाने के प्रति भी उत्साह नहीं रह गया था। वैसे भी 'सॉफ्ट ड्रिंक्स कैंपेन फेलियर' प्रकरण के बाद वहां पर भी कुछ नीरसता सी आ गई थी।सभी लोग अपनी –अपनी खाल बचाने के चक्कर में ही लगे रहते थे। ऐसे में यश अपनी मनोदशा परिवत.र्न की गरज से अपने गांव, राजस्थान आ गया।कई दिनों के बाद माता–पिता और बहन से मुलाकात की बात सोच कर उसका मन हर्षित हो रहा था। उसने अपने आने की पूर्व सूचना भी उनको मोबाइल पर दे दी थी। वह सभी लोग भी बेकरारी से उसका इंतजार कर रहे थे।जैसे ही यश अपने घर के दरवाजे पर पहुंचा ,उसकी आंखें भीग गईं। वातावरण में पसरे हुए सन्नाटे को उसने स्पष्ट अनुभूत किया । मेघा अभी छोटी थी। वह अपनी पढ़ाई लिखाई में ही व्यस्त रहती थी। बचपन की गलियों से गुजर रही थी। माता–पिता जिन्होंने जीवन भर काफी संघर्ष किया था और केवल तकलीफ और अभाव ही देखे थे।अब समय चक्र के समक्ष झुक गए प्रतीत होते थे।

अब उनकी आकांक्षा यही थी कि 32 वर्ष की उम्र पार कर रहा उनका बेटा यश अपना घर बसा ले।उसकी जिंदगी में एक ऐसी सुंदर, सुशील, होनहार लड़की आ जाए जो उसके जीवन, घर, परिवार , रिश्तों सभी को एक मजबूत आधार दे दे। मेधा की पूरी जिंदगी भी अभी सामने पड़ी थी। उसकी शिक्षा–दीक्षा, बचपन, युवावस्था, स्कूल ,कॉलेज , विवाह, और भावी जीवन की संपूर्ण जिम्मेदारी भी यश और उसकी जीवन.संगिनी की ही होगी।उम्मीद और आशंका के चक्रवात में तिरोहित हो रहे थे वे लोग ।

यश को स्वस्थ और प्रसन्नचित्र देखकर उनकी जान में जान आई । बेटे को गले लगाया। बहन ने प्यार भरी शिकायत की।वह सब के लिए बहुत सारे उपहार लेकर आया था। उसने पूरा घर नई और आधुनिक चीजों से भर दिया। माता–पिता भी चमत्कृत थे कि आखिर इस समृद्धि का राज क्या है? यश ने बताया कि उसके काम और व्यवहार की वजह से ही कंपनी ने उसे बहुत बड़ा प्रमोशन देकर, उच्च वेतन वृद्धि करते हुए उच्चतम पद पर सुशो.भित कर दिया है।वे तो उसे विदेश भेजकर अंतरराष्ट्रीय कारोबार की देखरेख का जिम्मा भी देना चाह रहे थे। किंतु यश भारत में रहकर ही अपनी मातृभूमि की सेवा करना चाहता था। इसलिए उसने बाहर जाने का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।

यह बात जानकर उसके माता–पिता का कलेजा ठंडा पड़ा और उनको असीम संतोष की अनुभूति हुई।''बेटा ,अब हमारी अंतिम इच्छा और पूरी कर दो ।शादी करके घर बसा लो ताकि हम लोग भी गंगा नहा लें।''रात को खाने पर यश की मां ने प्यार से कहा।''हां हां बेटा, यह देखो कुछ अच्छी लड़कियों की तस्वीरें है। तुम्हारी मां ने संभाल कर रख रखी हैं। तुमको इनमें से कोई पसंद हो तो बता देना। या तुम्हारी अपनी कोई पूर्व निर्धारित पसंद हो तो वह बता देना। हमें तो हर हाल में तुम्हारी खुशी ही स्वीकार्य है।''यश के पापा के स्वर से खुशियां छलकी पड़ रही थी।

एक साधारण स्कूल शिक्षक अपने बच्चों को जीवन भर भला क्या खुशियां दे पाया था? लेकिन अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य की मूलभूत आवश्यकताओं का अवश्य ध्यान रखा था।अपनी प्रतिभा, मेहनत, लगन और समर्पण के बल पर यश आईआईटी से इंजीनियरिंग पूर्ण करके एमएनसी में उच्च पदस्थ हो गया था। पिता के मन के किसी कोने में संतोष था कि जो तकलीफ और संघर्ष उन्होंने देखे ,शायद अगली पीढ़ी के नसीब में ना हो।उसके सामने केवल एक उज्ज्वल और उद्देश्य पूर्ण भविष्य हो। मजबूरी और लाचारी भरा जीवन नहीं।

खाना खाकर यश छत पर घूमने चला गया था ।उसे अपने अंदर एक अपराध बोध भी सताने लगा था।उसके जीवन में कुछ समय पूर्व जो घटनाक्रम घटित हुआ था।उसके बारे में उसने अपने माता–पिता को कुछ भी नहीं बताया था। आखिर उसका भविष्य किस दिशा की ओर उसे ले जा रहा था, उसे खुद भी यह समझ नहीं आ रहा था।जब मन ने प्रश्नों के उत्तर देना बंद कर दिया तो हार कर वह अपने कमरे में आकर बिस्तर पर लेट गया और जल्दी ही गहरी नींद के आगोश में चला गया।

जब आंख खुली तो सूरज निकल आया था। मम्मी और पापा गरमा गरम चाय पर उसका इंतजार कर रहे थे। मेधा अपने स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई थी।जल्दी ही फ्रेश होकर वह अपने माता –पिता के पास बैठक के अंदर आकर बैठ गया और चुपचाप चाय पीने लगा।

“तो फिर तुमने क्या सोचा बेटा?'', पिता ने आशंकित स्वर में कहा। एक पल चुप रहकर यश अचानक खड़ा हुआ और दोनों के पांव छू कर बोला,'' पापा और मम्मी, मैंने ईश्वर को तो नहीं देखा ले.किन आप लोग ही मेरे इस जन्म के जागृत भगवान हो।आपकी इच्छा को पूरा करना ही मेरा परम धर्म है। मैं आपके सुख और संतोष का कारण बनना चाहता हूं। मेरे विवाह के विषय में अंतिम निर्णय आपका ही, मुझे स्वीकार्य होगा।आप केवल मुझे सूचित करना। मैं एक अच्छे बेटे की तरह आपकी हर इच्छा और आज्ञा का मान रखूंगा।

“;'। की यह बात सुनकर उसके पापा और मम्मी दोनों की उम्र के लगभग 10 वर्ष और बढ़ गए थे। अपने चश्मे को उलट कर आंखो में आ गए पानी को चुपचाप पोंछते हुए उसके पिताजी ने उसकी मां से कहा,''देखा यश की मां । यह है मेरी जिंदगी भर की कमाई ,मेरा बेटा, जो मेरी खुशी के लिए नतमस्तक है। अब बस अपने अरमान पूरे कर लो। फिर मत कहना कि मैंने आपको अवसर नहीं दिया।दोनों मां–बेटे मिलकर एक अच्छी सी लड़की सेलेक्ट करो और जल्दी ही यश को विवाह बंधन में बांधने की तैयारी कर लो।''

“सब कुछ आपकी इच्छा के अनुसार और हमारे घर के सांस्कृतिक मूल्यों व परंपराओं के अनुसार ही होगा पापा।'', यश ने कुछ देर की चुप्पी के बाद कहा।,''बस एक प्रार्थना यह है कि

मैं इस समय अपने कैरियर के बहुत महत्वपूर्ण मोड़ से गुजर रहा हूं। बड़ी मुश्किल से समय निकालकर आपसे मिलने आ पाया हूं।आप लोग मुझे थोड़ा सा अपने काम को मन लगाकर करने की मोहलत दे दीजिए।आप लोग अपनी तैयारियां अवश्य करते रहिए। मुझे बस कुछ समय तक और काम करते रहने की इजाजत दे दीजिए।''

''अरे हां हां ,ठीक है बेटा ।काम तो जिंदगी भर चलता ही रहेगा ।अब तेरी जिंदगी के सुहावने दिन शुरू होने जा रहे हैं। अब एक सुंदर और सुशील बहू आ जाएगी और वही तुझ को निर्देशित किया करेगी। हमें तो बस अपनी छोटी सी ड्यूटी पूरी कर लेने दे।''यश की मां की खुशी उनके चेहरे से छलकी जा रही थी। यश चुपचाप उठा और बाथरूम में चला गया। नहा धोकर कुछ नाश्ता किया और उसके बाद उसने अंदर आकर 30 लाख रुपए पिताजी के हाथों पर रख दिए।

''अरे बेटा, यह क्या? इतने सारे पैसे कहां से आए?'' शायद जीवन में पहली बार एक साथ इतने रुपयों को अपनी हथेली पर स्पर्श करके यश के पिता ने कहा।''पापा सब आपका आशीर्वाद है ।बताया था ना कि मेरा प्रमोशन हो गया है ।अब सैलरी पैकेज कई करोड़ों में होगा। अब हमारे तकलीफ के दिन बीत गए हैं।'', यश को अपने ही शब्दों पर यकीन नहीं आ रहा था। जाने किस रौ में बहते हुए उसने कहा था और फिर बाहर निकल गया था अपने कुछ पुराने साथियों से मिलने। यश के पापा के दोनों हाथ दुआ और शुक्रिया की मुद्रा में भगवान की तरफ उठ गए थे। एक सुंदर, सुखमय और समृद्धिशाली भविष्य का स्वप्न उनकी आंखों में तैरने लगा था।

एक संक्षिप्त मुलाकात की और यश वापस घर आ गया था ।गांव में जिंदगी अभी भी वहीं पर ठहरी हुई थी जहां पर वह छोड़ कर गया था ।उसके पुरानी संगी –साथी जीवन की वास्तविकताओं का सामना करते हुए, यथार्थ के कठोर धरातल पर संघर्ष कर रहे थे।

यश की प्रसन्नता व कामयाबी से सभी खुश थे।यश ने भी सब का उत्साह ही बढ़ाया था और सबको मिठाई भी खिलाई थी। अपनी कामयाबी के चर्चे ना करके उसने उनके जीवन के दुख दर्द को जानने की ज्यादा कोशिश की थी ।यही वजह है कि वह सबकी आंखों का तारा था।

दो–चार दिन रुक कर ही यश ने लौटने का विचार बना लिया था ।कहा था कि काम की व्यस्तता के कारण रुकना संभव नहीं होगा। माता–पिता की आंखों में आंसू थे ।मेधा से भी खुलकर ज्यादा बातचीत नहीं हो पाई थी। लेकिन जाना तो था ही।आखिर रवाना हो गया था वापस अपनी मंजिल की तरफ, जहां एक अनजाना और अनदेखा भविष्य उसका इंतजार कर रहा था।

❑❑

जीना सीख रहे हैं

अनुवादक,(कन्नड़ कथा)
डॉ बी निर्मला , मैसूर,कर्नाटक

संजीव,सुशीला मेरे दूर के संबंधी हैं।पास ही गांव में रहते हुए भी, मेरा वहां जाना नहीं हो पाया। पहले कभी कभार एक दो बार हो आया करती थी।इस बार उसी गांव में मेरी सहेली के घर कार्यक्रम का प्रोग्राम बना, सोचा इस बार जरूर उनसे मिलकर आऊंगी।

संजीव भाई की दो संतानें थी एक बेटा और एक बेटी।दोनों पढ़ने में बहुत ही होशियार।बेटी एम बी बी एस पासकर,एम डी करने अमेरिका गई, प्रेम विवाह कर वहीं बस गई। बेटा भी इंजीनियरिंग बनकर जर्मनी में बस गया। इस बुढ़ापे में,दोनों ही गांव में रह रहे थे।

सोचा कि बड़े लोगों से मिलने हेतु कुछ लेकर जाना चाहिए, फिर खयाल आया कि,दोनों बूढ़े हो चुके हैं, शायद डायबिटीज के मरीज भी,इसलिए थोड़ी सी मैसूर पाक मिठाई और थोड़ी सी नमकीन लेकर,यह सोचते हुए कि इनसे बात चीत कर,सहेली के घर कार्य खत्म कर वापस अपने शहर लौट जाऊंगी उनसे मिलने निकल पड़ी।

11 बज चुके थे।कॉलिंग बेल बजाई,सुशीला ने दरवाजा खोलते हुए, अरे विद्या तुम, आओ, आओ,अंदर आओ, बहुत दिनों बाद आई हो कहकर, हार्दिक स्वागत किया।अंदर से आवाज आई, एक कप चावल लिया है, पानी कितना डालना है?यह सुनकर मैंने सुशीला की ओर प्रश्न करने हेतु देखा,फिर सुशीला ने धीरे से कहा,' सुनो जी,विद्या आई है,कॉफी बनाकर लेते आना'। यह देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, पूछा, क्या हुआ?तभी संजीव भाई लोटे में कॉफी ले आए,हम सभी कॉफी पीने लगे। कॉफी पीते हुए सुशीला कहने लगी ....देखो बेटी,हमारी उम्र हो गई है, इनकी उम्र 80 वर्ष और मेरी उम्र 78वर्ष हो चुकी है।अब जाने की तैयारी में दिन गिन रहे हैं कौन पहले जायेगा पता नहीं।अंतिम क्षणों में बच्चे आयेंगे,यह सब झूठ है।उनका जीवन उनका, सबका अपना अपना जीवन है।ऊपर जाने के बाद उनकी क्या हालत होती है?किसी को भी पता नहीं।भूमि पर जो बचे हैं उनको,तो जिंदा रहना पड़ेगा ना.... इसलिए जिंदगी,जीना सीख रहे हैं,कहते हुए अपनी बात खत्म की।

क्या,जीना सीख रहे है? इसका क्या मतलब है? इतने साल सांसारिक जीवन में, जीने के लिए कुछ भी सीखा नहीं? इसका मैं क्या अर्थ समझूं....तब संजीव भाई ने अपनी बात स्पष्ट कर समझाया।''अगर मैं जीवित रहा,तो मुझे भी थोड़ा बहुत खाना बनाना आना चाहिए और रोजाना खाना बनाने के लिए किसी को यहां आना नहीं पड़ेगा।इसलिए,चावल, सांभर, चाय, कॉफी बनाना सीख रहा हूं..... और इसको भी जो अभी तक नहीं सीख पाई,जैसे एटीएम से पैसा निकालना, ऑनलाइन बिल्स जमा करना,ऐसी चीजें सुशीला सीख रही है।जब अकेले रह जायेंगे,तब कैसे जीयेंगे? यह सोचकर हम दोनों जीना सीख रहे हैं।ऐसा कहकर संजीव भाई चुप हो गए।

पता नहीं क्यों,कॉफी कड़वी नहीं थी,पर कड़वी लगी,बची हुई सारी कॉफी मैंने एक घूंट में खत्म कर दी।

'कॉफी' कड़वी नहीं थी,इस दंपत्ति ने जो बात कही,वो कड़वी सच्चाई थी।बड़े ही भारी मन से मैं उनसे विदा लेकर बाहर आई।

जिंदगी जीना सीख रहें हैं' ये शब्द ,मेरे कानों में अब भी गूंज रहे हैं।

❑❑

अभिराज जैन
14 वर्ष ,कक्षा 9,
चंडीगढ़

तेजकरण नारोलिया,
भोपाल

रंगिनी

भोर भई सूरज की लाली,
नभ मंडल में बिखर गई,
छोड़ घरोंदा रंगिनी अपना,
अंबर माही विचर गई।
कलियां खिलकर कुसुम हो गई,
दिनकर अभिवादन में,
चमक रही है शबनम देखो,
नियति नटी के आंगन मे।
अंधकूप सी काली रात्रि,
आंखों में सपने घोल गई,
तिमिर सरोवर सूख गया,
जब क्षितिज के पट वह खोल गई।
तारा गण की माया नगरी,
जगत जाल में सिमट गई।
छौड़ घरोंदा रंगिनी अपना,
अंबर माही विचर गई। ।।1।।
जब प्रभात की बेला आई,
शीतल मंद समीर बहे,
झरने झरते कल–कल करते,
खग कलरव का गान कहे।
सरिता सर में निर्मल जल,
दर्पण जैसा लगता है,
जिसमें अंबर देख रहा मुख,
नीलिमा सा संवरता है।
अथाह नीर में क्रीड़ा करती,
मीन सुखी हो संवर गई।
छौड़ घरोंदा रंगिनी अपना,
अंबर माही विचर गई। ।।2।।
शरद् ऋतु की धूप मखमली,
ठिठुरन को सहलाती है,
सर्द हवाएं बैरन बन कर,
पल पल हमें डराती है।
निर्मम् नीर की शीतलता,
छूने पर इठलाती है,
भृकुटि ताने खड़ा भास्कर,
किंचित सहम न पाती है।
सूरज भी निस्तेज हुआ,
मानो चांदनी बिखर गई।
छौड़ घरोंदा रंगिनी अपना,
अंबर माही विचर गई। ।।3।।
शरद् ऋतु अब सिमट गई,
बासंती पवन के आने से,
तरूवर मानो बने तपस्वी,
हरितपर्ण गिर जाने से।
बीत गया पतझड़ का मौसम,
हरितपर्ण छा जाने से,
मानो मन उल्लास भरा हो,
दुविधा के मिट जाने से।
धरती का शृंगार हुआ या
यौवन में निखर गई।
छौड़ घरोंदा रंगिनी अपना,
अंबर माही विचर गई। ।।4।।

❑❑

डॉ. रामनिवास 'मानव'
नारनौल

सबके अपने राम

नित्य तीज–त्योहार का, यहां मनाते हर्ष।
उत्सव–धर्मी देश है, अपना भारत वर्ष।।

घट–घट में भी राम हैं, घर–घर में भी राम।
राम हमारी अर्चना, राम ही तीर्थ–धाम।।

सीता के भी राम हैं, शबरी के भी राम।
तुलसी और कबीर के, सबके अपने राम।।

गूंज रहा घर–गांव में, रघुपति राजा राम।
आज हुआ है राम से, बड़ा राम का नाम।

कृत्य कृत्य हम हुए सदा,
लेकर जिसका नाम।
रोम–रोम में वह रमा, समझ उसी को राम।।

हुए राममय अब सभी, क्या दक्षिण, क्या वाम।
लगे समूचा देश अब, भव्य अयोध्या धाम।।

करवट बदली देश ने, जागा सोया जोश।
राम–नाम का विश्व में, हुआ पुनः जयघोष।।

जब–जब पश्चाताप से, जीवन हुआ हराम।
मरा–मरा के मंत्र से, तब–तब उपजे राम।।

बिना तपे सोना बना, कब कुंदन अभिराम।
वन–वन भटके तब कहीं, राम बने श्रीराम।।

❑❑

गुरबानी कौर बिंद्रा
आयु– 13.5
कक्षा– 9
एंजलस वैली स्कूल
राजपुरा

डॉ पंकजवासिनी
पटना, बिहार

सिया मैं राम की

आशंकाओं के कोहरे
और हिंस्र पशुओं से भरे
बीहड़ वन की कंकरीली –पथरीली
राहों पर सदा साथ–साथ
चलती परछाई– सी
तुम्हारे पग–पग की अनुगामी मैं सीता हूँ
ऐश्वर्य –संबलित राजवधू से
वनवासिनी संन्यासिनी बनी
तुम्हारे एकनिष्ठ दिव्य प्रेम को पाने वाली
परम सौभाग्यशालिनी स्त्री हूँ मैं !!
निज जीवन के प्रेमपगे तेरह बहुमूल्य वर्ष
मेरे नाम कर दिया तुमने ...
(जहां पुरुष निष्ठा का एक वर्ष भी नहीं दे पाते!)
राम! तुमने मुझ पर कभी शक नहीं किया
अन्यथा हर ली गई
पत्नी की मुक्ति के लिए
साधनहीन वनवासी होते हुए भी
अथाह सागर को बाँधने का
असाध्य कार्य कर
स्वर्ण नगरी की सामर्थ्य रखनेवाले
दशानन से युद्ध करना
स्वीकार न करते तुम!
राजा राम की पत्नी की
जब अग्निपरीक्षा हो रही थी
तब देखा था मैंने अविरल बहते
तुम्हारे अदृश्य आँसुओं को
और जब गर्भावस्था में
राजा राम को अपनी पत्नी का
परित्याग करना पड़ा था
(जनता की एक खुशी के लिए)
तब पल –प्रतिपल अहर्निश विकल
अपने राम को ,परम निष्काम को
देखा था मैंने जार –जार रोते !
पल – पल मृत्यु का संत्रास झेलते !!
वियोग का हर एकांत क्षण
जीया तुमने अपनी सिया संग !!
और जब अश्वमेध यज्ञ करने का
समय आया तब
तुमने अपनी निष्ठा जतला दी ,
सर्वसमक्ष :
मेरी स्वर्ण मूर्ति को
अपने पार्श्व में बिठाकर !!!
तभी तो
मैं तुम्हें अपना अपराधी
नहीं मानती राम !
तुम मेरे हृदय में बसे हो ...
मर्यादा पुरुषोत्तम राम !!!

❑❑

अशीष श्रीवास्तव
टोक्यो, जापान

कविता

नजर लक्ष्य पर रहे ,
गिरो और संभलते रहो।
हवाओं को जोर लगाने दो,
तुम चिराग हो जलते रहो।
जिस राह चलोगे मंजिल को ,
पत्थर भी होंगे काँटे भी,
कभी दूधिया पूनम रात भी होगी,
कभी अमावसी सन्नाटे भी ,
ओझल ना हो लक्ष्य दृष्टि से ,
सतत निरंतर चलते रहो।
हवाओं को ......
असफलताओं के स्वान तुम्हें,
जब काटेंगे और नोचेंगे,
ना लाना मन में की जग वाले,
क्या बोलेंगे क्या सोचेंगे,
धरा में दबे नवांकुर जैसे,
फूलते रहो, फलते रहो,
हवाओं को.....
लगेगी ठोकर पाँव में जब,
बहे न अश्रु , रोना नहीं ।
और निकलेगा रक्त पाँव से,
किन्तु उसे धोना नहीं ।
लगा माथे पर लाल रुधिर को,
विजय तिलक मलते रहो।
हवाओं को ....

❑❑

वैशाली रस्तौगी
जकार्ता,इंडोनेशिया

ना सखि भंवरा

रूप सजीला उसका न्यारा,
मेरी दुनिया सुंदर प्यारा
मन भावन वो चंचल बंदा
क्या सखि साजन,ना सखि चंदा
*
देख जिसे नैना नहीं थकते,
आते जाते मन में रहते
आंखों में जैसे हो बादल
क्या सखि साजन,ना सखि काजल।
*
छत पर लेकर उसको आती
आसमान की सैर कराती
थामू कैसे बहुत मलंग
क्या सखि साजन ना सखि पतंग ।
*
पीट पीट कर उसे मनाऊं
देकर पानी उसे रिझाऊं
हंसते हंसते जड़ती चाटा
क्या सखि बेटा,ना सखि आटा।
*
रूप सलोना उसका भाता,
नादानी ही करने आता
स्वर से उसके गूंजे कमरा
क्या सखि साजन,ना सखि भंवरा।

❑❑

डॉ. नितीन उपाध्ये
दुबई

न सखि मटका

सारे जग की सैर कराता
कभी हंसाता, कभी रुलाता
कभी तो लगता है परजीवी
क्या सखि साजन,न सखि टीवी

मक्खन जैसा नरम मुलायम
ऊपर मलमल अंदर रेशम
उस पर नजरें रखती सखियाँ
क्या सखि साजन न सखि तकिया

उसके बिन मैं खा नहीं पाँऊ
ढोलकी उसके साथ बजाऊँ
मुझे है कहता शोर न मचा
क्या सखि साजन न सखि चमचा

कभी तो सर पे चढ़ जाता है
कभी नदी में तैराता है
टूटे पल में ध्यान जो भटका
क्या सखि साजन न सखि मटका

❑❑

सीमा वर्णिका,
कानपुर उत्तर प्रदेश

कर्मवीर का जीवन दुष्कर

कड़ी धूप है आग बरसती, सन्नाटा है छाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर, भला चैन कब पाया।।
स्वेद मृदा को तर रखता है, श्रम फल आए मीठा।
मार प्रकृति की कर देती है,अक्सर इसको सीठा।।
ताप शीत जल सहा कृषक ने,अन्न आदि उपजाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर, भला चैन कब पाया।।
सीमाओं पर सैनिक देते, अडिग रात दिन पहरा।
देश सुरक्षित हरदम रखते, घाव झेलते गहरा।।
लगा जान की बाजी उसने, अरि को धूल चटाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर, भला चैन कब पाया।।
श्रमिक बहा कर नित्य पसीना, अल्प राशि तब पाए।
भूखा प्यासा वह बेचारा, पकड़ उदर सो जाए।
पले अभावों में निज जीवन, सबका घर बनवाया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर , भला चैन कब पाया।।
कड़ी धूप या ऋतु ठिठुराती, करती सेवा नारी।
कभी अन्नपूर्णा बन जाती, शिशु पाले महतारी।।
नेह सूत्र से सबको बाँधा, सबने है बिसराया।
कर्मवीर का जीवन दुष्कर, भला चैन कब पाया।।

मंजु श्रीवास्तव'मन'
वर्जीनिया

आँगन

बीस गुजारे बरस जहाँ, वो आँगन सब से ज्यादा प्यारा !
स्मृतियों के गलियारों में, आज भी ताजा है वो सारा !!

माँ की डांट,लाड़ दादी का,भाई की घुड़की, बहन की झिड़की !
जीवन पथ रोशन करती वो पापा की आंखो की खिड़की !!

चारपाई पर बैठ के हुक्का गुड़गुड़ करते दादा जी !
माँ का हाँथ बटाने को कुछ मटर छीलते चाचा जी !!

वो छोटा तुलसी का चौरा, जिसपर दीप जलाती माँ !
छूट गया बस उस आँगन में, जैसे पीछे छूटी माँ !!

फेरे लिये उसी आँगन में और देखा था ध्रुवतारा !
पाई जीवन में सब खुशियाँ, पर दिल उस आँगन पर वारा !!

आँगन छूटा ,देश भी छूटा,सात समंदर पार आ गये !
पर सँग आँगन और भारत की मिट्टी ले साभार आ गये !!

प्राची गर्ग
जकार्ता, इंडा.

ना सखि सावन

बागों में वह मंडराये है,
कांटे पार भी कर जाये है,
पुष्प गंध से हुआ बावरा,
क्या सखि साजन? ना सखि भंवरा।

वन में इत उत भागा जाये,
कस्तूरी वो ढूंढ ना पाये,
कैसे हो यह अद्भुत मिलन,
क्या सखि साजन? ना सखि हिरन।

सूखी प्यासी धूप में ताके,
सीना चीर गगन में झांके,
छाये तो धरती हो वृंदावन,
क्या सखि साजन? ना सखि सावन ।

❑❑

संगीता ठाकुर,
काठमांडू, नेपाल

मौसम

आइस्ता मौसम फिर बदलने लगा है
दीर्घ से लघु दिन फिर होने लगा है
कुछ बदला–बदला सा कुछ
जाना पहचाना
पर्वों का उमंग फिर उमरने लगा है
आइस्ता मौसम फिर बदलने लगा है।

तप्त गर्मी गई ठंढ घर आ गई है
शीतल बयार तन फिर से छुने लगा है
नभ में सूरज का उगना और
चंदा का खिलना
फिर कोई अजनबी का आहट कान
सुनने लगा है
आइस्ता मौसम फिर बदलने.... ।

दृश्य बदला रंग रूप बदला
मन के बगिया में पुष्प कुछ
अलग सा खिला है
आपके मिलने से मन गीत गाने लगा है
आइस्ता मौसम फिर बदलने लगा है।।

❑❑

श्रीधर त्रिपाठी
दिल्ली

जिंदगी की तपन

ए जिंदगी अजब तेरी तपन ।

कितने तेरे पात,कितने पतझड़
और कितने अंधड़ !
कष्ट तेरी तपनों का सहते सहते
पूरा होता भी क्या कभी कोई सपन
तभी जिंदगी ने तरेरी अपनी चितवन
बोली प्रश्न तेरा नहीं है
जरा भी कठिन
तनिक अपनी मन की आँखें खोल
दूर हो जाएगी स्वयं ही तेरी
सब उलझन
जिंदगी तो पगले कभी भी नहीं
तपन और तपन
यह तो है केवल प्रभु सृजित

एक अद्भुत उपवन

प्रकृति का है जैसा नियम
कभी गर्मी की तपन
तो कभी सर्दी की ठिठुरन
कभी घनघोर वर्षा
तो कभी जल की बूँदों को
तरसे ये नयन
कभी अंधड़ और पतझड़
तो कभी नव पल्लवों से
लहलहाता ये उपवन ।
जिंदगी भी कुछ ऐसी ही है
रे पगले !
जिसमें हर क्षण होता है नव–सृजन
तपन ही तपन को याद कर
कैसे भूला तू तेरे इस जीवन में
उतरे कितने कितने
मधुर मधुर गुंजन
बचपन की वो अठखेलियाँ
खिलखिलाहटों के वो अनगिनत पल
सजाया जिन्हें देकर
माँ ने प्यार के अपने अद्भुत स्पंदन
कहानी यहीं तो खत्म नहीं होती
कैसे भूला तू मित्रों के साथ बिताए
मधुर उच्छृंखल मस्ती के वो नर्तन
तपन ही तपन की सोच में कहाँ तू
विस्मरण कर बैठा
जीवन– संगिनी के साथ साथ बिताए
वो मधुर प्यार भरे अनुपम स्पंदन
कभी असफलताओं की
तपन थी तो क्या
अनगिनत सफलताओं का
सृजन भी नहीं था
कभी समय ने दुत्कारा था तो क्या
कभी उतना ही पुचकारा भी न था

जिंदगी और प्रकृति
ये दोनों ही है प्रभु के अद्भुत सृजन
क्यों व्यर्थ तू भिगोता अपने नयन
हर क्षण हर पल यहाँ
नित रूप बदलता ये जीवन उपवन
नव जीवन का यहाँ हर क्षण
एक पौधा उदय होता, खिलता
बड़ा होता जाता
फल और फूल भी लगते
वहीं किन्हीं पलों में अंधड़,
पतझड़ भी यह है झेलता जाता
फिर एक दिन मिट्टी में यहीं
विलीन भी हो जाता
अंत मे जिंदगी फिर से
जरा मुस्कराई और बोली
नहीं है रे यहाँ कोई तपन
सब है केवल तेरे ही
मन की उलझन
बस सदा ही केवल मुस्कुरा
और कर हर क्षण प्रभु का सुमिरन
जीवन की ये तपन भी
तब करने लगेगी तेरे संग नर्तन
याद रख फिर से
जिंदगी तो सदा से ही
हर पल हर क्षण एक नव सृजन
नहीं है कोई तपन !
नहीं है कोई तपन !

❑❑

खुशी कौशल
15 वर्ष,कक्षा 10–ए
महर्षि मारकंडेश्वर इंटरनेशनल स्कूल
अम्बाला

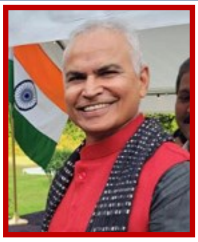

रामा तक्षक,
नीदरलैंड

धरती की पूँज़ी के हिस्सेदार

पापा तुम कितनी संपत्ति
छोड़ कर जाओगे ?
यह सब किसी और का है बेटा।
किनका ?
बंदर, छिपकली, मकड़ी, मक्खी,
मधुमक्खी, ततैया और वनमानुष।
ये सभी धरती की पूँजी के हिस्सेदार हैं।
यह हमारा तुम्हारा नहीं है।
यह उन पेड़ पौधों का है
जिनको तोड़, गुरिल्ला
कुलांचे मार खेलते और खाते हैं।
कीड़े, मकोड़े, दीमग, मेंढ़क, कछुआ।
मनुष्य ने सदियों, सदियों से
छीना और खाया है।
उसके, और की, उत्तप्त भूख क
भी शांत नहीं होगी।
मानव इस अस्तित्व का सबसे बड़ा
भिखारी है।
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर में,
पत्थर ने बैठ,
परमात्मा का नाम पा लिया है।
लूट, खसौट और साजिशों की चालें,
धर्माधिकारियों की चौखटों की

चूलों से ही

पिचकती सी धार ले निकलती हैं।
मनुष्य सबसे बड़ा गुनहगारी है।
चीत्कार के सपने भी वहीं बुने जाते हैं।
ताकि परमात्मा के दरवाजे पर
भक्त बन मत्था टेकने लोग पंक्ति में
गर्दन नीची झुकाए,
हाथ में दान लिए खड़े हों।

❑❑

संजय वर्मा " दृष्टि"
मनावर जिला–धार
(म.प्र)

माँ

बेसहारों का होता ,सहारा माँ का घर ।
मिले आचंल जैसा सुख,गोद में हो जब सर।

घड़ी आये जब दुख की ,रखना उसको साथ।
ईश्वर से ऊँचा दर्जा ,नमन कर जोड़ कर हाथ

हर धर्म की माँ ओ के ,ममता के एक रूप ।
आँचल से ढांक देती ,जब सर पर हो धूप ।

मिलती है मंजिल हमे,लक्ष्य हमे हो याद ।
सफलता की छत्रछाया,श्रम करने के बाद ।

रहे खुद भूखी फिरभी , दे पेट भर खाना ।
भाव है उसका ऐसा ,खिला खुश हो जाना ।

❑❑

खुशबू सागर
भागलपुर,
बिहार

मुझे आने दो इस जगत में

मैं हूँ इस जगत की धरती
मैं हूँ इस जगत का आसमा
फिर क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में।
मैं हूँ जिंदगी के
खिलते सुबह का सूरज
मैं हूँ जिंदगी के
ढलते शाम का चाँद
फिर क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में।
मैं हूँ माँ , मैं हूँ पिता
मैं हूँ भाई , मैं हूँ बहन
फिर क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में।
मैं हूँ एक पत्नी , मैं हूँ एक नारी
मैं हूँ प्रकृति, मैं ही हूँ सृष्टि
मेरे ना होने से, दुनिया बेकारी
फिर क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में।
मैं हूँ बेटी, मैं ही हूँ बेटा
क्यों नहीं समझते हो?
फिर क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में।
क्या कुसूर है मेरा
मुझे आने दो इस जगत में,
नहीं तो एक दिन
रह जाएगी एक अधूरी कहानी
जिसमें मैं रहूंगी ही नहीं
तो तुम कहाँ से रहोगे ?
जगत विरान हो जाएगी
इसलिए फिर कहती हूँ
क्या कुसूर है, ' एक बेटी का '
उसे आने दो इस जगत में।

❑❑

दिव्यंका शर्मा

कक्षा 3,आयु 8वर्ष

लिटिल एंजेल स्कूल ग्वालियर (एम. पी)

रसगुणजीत कौर
आयु 15 वर्ष ,कक्षा 10 –ए
ए. के. एस. आई. पी. एस
मोहाली,पंजाब

अग्रिम गुप्ता
कक्षा–8 आयु–13 वर्ष

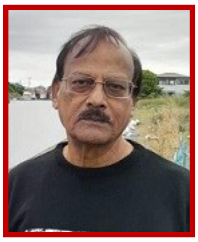

डॉ मरीज तुम्हारे हवाले

भाग –1

डॉ शकील सिद्दीकी
मुंबई

नीतू की ऑखें उसकी आँखों से फिसल होठों पर रुक गयीं, मानो पथरा गयी हों उसकी खामोश निगाहें और गुलाबी होठों की जुम्बिश ने उसे बेचैन कर दिया । वह समझ नहीं पा रही थी कि इस मरीज में क्या है? जो उसे बेचैन कर रहा है । वह बार बार रतन ठाकुर और रतन सिंह के भंवर में थी । एकाएक उसे लगा कि उसकी धमनियों का रक्त जम जायेगा , अगर वह खड़ी रही तो गश खा कर गिर पड़ेगी । मरीज का मास्क उतारते ही वह अपने आप को संभाल नहीं सकी। मास्क की वजह से मरीज रतन ठाकुर उसे देख नहीं पा रहा था लेकिन उसे आभास हो गया कि जरूर कोई ऐसी बात है जिसने डाक्टर को बेचैन कर दिया । उसने सोचा शायद मेरे पैर की कुछ ऐसी कैफियत हो जिससे मेरी हालत पर वह इतना विचलित हो गयी है । इसके पहले कि वह कुछ पूछे डाक्टर रितु अपने चौम्बर में आ कर धम्म से सोफे पर गिर पड़ी । इसमें कोई शक नहीं कि रतन ठाकुर ही रतन सिंह है । वही बांकपन , नश्तर मानिंद ऑखें और मदहोश करती मुस्कराहट। जिस नश्तर को वह अतीत के सागर में फेक आयी थी आज उसने फिर उसके जिगर को चाक कर दिया । जवान हॉस्पिटल की डाक्टर रितु जवान आज सवेरे से बहुत व्यस्त थीं । बस आखिरी पेशंट को देखना था उसने उसे बुलाया ।आर्मी के रिटायर्ड कर्नल रतन सिंह ठाकुर व्हील चेयर पर आये । उनके साथ एक महिला थीं । सरसरी निगाह में उन्होंने उस महिला को उनकी पत्नी समझा । कोरोना की वजह से वह महिला, मरीज और डाक्टर मास्क में थे इस लिए कोई किसी को जान नहीं सका । महिला ने उन्हें बेड पर लिटा दिया और उनकी रिपोर्ट दिखाई ।

'' यह मेरे भाई कर्नल रतन सिंह ठाकुर हैं । सेना से रिटायर हुए हैं कश्मीर इलाके में ऑपरेशन के दौरान एक बार इनका पैर बर्फ की चट्टान में फँस गया था , शायद कुछ नस डैमेज हो गयी है , बहुत दर्द रहता है और चलने से मजबूर हैं ''। महिला ने अपने भाई का परिचय दिया । उसके आँखों की चमक उसके साहस और शौर्य को दर्शा रहे थे । पर्दा खींच उसने कर्नल से मास्क उतारने को कहा ।बस उसे देखते ही अतीत के कोरोना ने उसके दिल दिमाग पर लाक डाउन लगा दिया। जिन्दगी ठहरी सी लगी लेकिन माजी को रोकना नामुमकिन था । एक भगोड़े सैनिक की तरह वह कर्नल के कोर्ट में खड़ी थी कोर्ट मार्शल के इंतजार में । मैं मुजरिम थी रतन सिंह और नीलम दीदी की जिन्हें छोड़ भाग आयी थी । उसी अतीत ने मुझे पच्चीस साल बाद रतन के सामने खड़ा कर दिया अपनी सफाई देने के लिए ।

बीएचयू में मैं यानि नीतू सेठी और रतन साथ साथ बीएससी कर रहे थे । मेरे पिता नंदन सेठी चंदौली विधान सभा क्षेत्र से विधायक थे । गोदौलिया में उनका एक बड़ा साड़ी का शोरूम भी था । बनारस के मशहूर समाजसेवक और राजनीति के चतुर खिलाडी थे । राजनीतिक विरासत की रक्षा के लिए एक बड़ी फौज भी थी । बनारस में उनदिनों कई माफिया या दबंगों का बोलबाला था । औसानगंज में भूषण सिंह, मलदहिया में भोला यादव, बड़ी बाजार में जब्बार हाजी । सभी गैंग के लोग अपने इलाके के किंग थे । गैर कानूनी उगाही और रंगदारी में हर कोई दूसरे के इलाके से परहेज करता था । भूषण सिंह की मेरे पिताजी से पुरानी रंजिश थी । कई बार झड़प भी हो चुकी थी, लेकिन दिल्ली में पहुँच की वजह से भूषण मेरे पिता से खौफ खाता था क्योंकि आशापुर से चौबे पुर तक मेरे पिता के समर्थक थे ।

छरहरा बदन,गरूर से लबरेज मस्त चाल, घने लहराते बाल और क◌ातिल मुस्कराहट रतन सिंह को सबसे अलग बना देता था । क्लास में हमारी कोई जान पहचान नहीं थी ।बस अक्सर हम दोनों गेट तक पैदल चल कर आते, बिना किसी वार्तालाप के । वह सड़क के उस पार चलता मैं इस पार। यह संजोग था या जानबूझ कर हो रहा था कि हम दोनों एक ही टाइम पर साथ साथ चलते लेकिन कोई भी सड़क के बीच की दस फीट की दूरी क्रॉस नहीं कर रहा था, दोनों के मन में यही द्वन्द था कि पहल कौन करे ? रतन सिंह जौनपुर के पास कानुवान गांव का रहने वाला था । उसके पिता कप्तान सुजान सिंह 71 की लड़ाई में शहीद हो गए थे । एक बहन नीलम और मां कामिनी थीं ।नीलम एमए कर रही थीं और ज्योति कुञ्ज हॉस्टल में रहती थीं । रतन ब्रोचा हॉस्टल में था । रतन का इरादा बीएससी कर सेना ज्वा. इन करना था और उसके लिए मेहनत कर रहा था ᐟ साथ चलते चलते इतना तो था कि मौन वार्तालाप चल रहा था क्योंकि दोनों एक दूसरे के कदमों की ताल अपनी धड़कन से माप रहे थे । और एक दिन ऐसा भी आया जब मौन को शब्द मिल ही गए । रितु ने देखा कि उस दिन रतन के हाथ में पट्टी बंधी है , तुरंत विचार कौंधा कि गरम खून के ठाकुर ने जरूर किसी से मारपीट की होगी , लेकिन वह क्यों बेचैन और आशंकित हुई खुद नहीं जान रही थी ? अकस्मात् उसने दस फीट कि दूरी लाँघ दी और पहुँच गयी रतन के सामने,

'' चोट कैसे लगी? किसी से झगड़ा किया है क्या?'' रितु ने दोनों सवाल जड़ दिए ।

रतन भी इस आकस्मिक पूछताछ और जिज्ञासा से दंग रह गया । सवाल का जवाब सोच ही रहा था कि दूसरे सवाल की गोली दाग दी गयी ।

'' ठाकुरों का कोई भरोसा नहीं, जरूर किसी को मारा होगा और चोट लगा लिया होगा ।''

रितु की बेताबी ,बेचैनी से रतन मुस्कुराये बगैर नहीं रह सका ।

'' अरे बाबा बोलने दोगी तभी बता सकता हूँ, कोई मारपीट नहीं की, यह तो रूम के दरवाजे में दब गया ।''

उसके जवाब पर हम दोनों जोर अट्टहास करने लगे । '' मुझे एकदम झगड़ालू समझा है क्या? उसने सवाल किया ।''

'' नहीं ऐसी बात नहीं है, बस घबरा गयी थी ।'' मैंने शरमाते हुई कहा ।

छोटा सा जख्म दे कर नियति ने शायद हम दोनों की नियति सुनिश्चित कर दी थी ।वह क्षणिक वार्तालाप अब लम्बी मुलाकातें, भ्रमण

।एक दूसरे में इतना तल्लीन हो गये कि बेखौफ होटल, गार्डन और सारनाथ की सैर पर जाने लगे । अब दोनों का एक ही लक्ष था बीएससी करना । इसके बाद रतन को सेना अधिकारी और रितु को डाक्टर बनना था । एक दूसरे की चाहत और मोहब्बत की कश्ती में चलते चलते दो साल बीत गए और एग्जाम भी हो गया ।अब समय आ गया था कि लुकाछिपी को सरेआम कर दिया जाय । यहीं से समाज धर्म, जाति और हैसियत का आगमन होता है क्योंकि फैसला दोनों परिवार को करना होता है जिन्हें चाहत या किसी पसंद , नापसंद से कुछ नहीं लेना होता है , वह तो अपने नफे, नुकसान, प्रतिष्ठा और सम्मान के तराजू पर तौलते हैं । एक दिन नीलम दीदी ने दोनों को हॉस्टल में बुलाया । अपनी मोहब्बत की कामयाबी से लबरेज लेकिन आशंकित रितु उनसे मिलने हॉस्टल में आयी ।

'' दो साल से तुम दोनों की धमाचौकड़ी चल रही है,तुम्हें क्या लगता है किसी को मालूम नहीं होगा । तुम लोगों की हर हरकत का हिसाब मेरे पास है । तुम दोनों से जानना चाहते हैं कि इसे कहाँ तक ले जाना चाहते हो ?''

नीलम दीदी की बातों में कोई खलिश या उलाहना नहीं था बल्कि वह तो हम दोनों के अगले कदम के लिए मार्गदर्शन था ।मैं कुछ देर तक कुछ नहीं बोल पायी, नारीसुलभ लज्जा, राज खुलने से चेहरे को सुर्ख कर गया ।

'' मैं भी इस रिश्ते के लिए गंभीर हूं । मेरे घर वालों का क्या रवैया होगा बता नहीं सकती । इसलिए मुझे दो दिन का समय चाहिए, उनसे बात करने और समझाने के लिए ।'' रितु ने अपनी शंका बताई ।

रितु जानती थी की ठाकुर खानदान में शादी के लिए उनका परिवार कभी तैयार नहीं होगा । उसके पिता की ठाकुरों से पुरानी दुश्मनी थी और सभी ठाकुरों को वह एक जैसा ही मानते थे । रतन के सैनिक खानदान के कारण उसे विश्वास था कि वह पिताजी को समझा लेगी ।दो दिन बाद मिलने का वादा कर रितु चली गयी । अतीत का झंझावात रितु को झकझोर रहा था, उसे पता ही नहीं चला की कब नीलम दीदी उसके पीछे खड़ी मुझे लड़ खड़ाते देख रही थीं मेरे कंधे पर किसी ने हाथ की कोमलता महसूस हुई ।

❑❑

प्रो. पंढरीनाथ पाटिल "शिवांश"
गंगामाई महाविद्यालय, नगांव, धुले

कोर्ट

कुणाल कटघरे में खड़े होकर जज साहब को बता रहा था कि "सा. `नल मेरी पत्नी हैं , पर उसने मुझ पर और मेरे परिवार पर दहेज उत्पीड़न कानून की धारा 398 के तहत जो मुकदमा चलाया हैं। वह पूरा फर्जी मुकदमा हैं । आजकल शादी के लिए लड़की मिलना ही कठिन हैं । जिसके चलते कौन दहेज माँग रहा हैं जज साहब ? और कौन दे रहा हैं ? तीस वर्ष पूर्व तक लड़की वाला दूल्हा खोजते फिरता था। अब लड़क` वाले दुल्हन खोज रहे हैं । जब दुल्हन मिल जाती हैं तो उसे ईश्वर का प्रसाद समझकर माथे पर लगाया जाता हैं । उसे कौन दहेज के लिए तकलीफ देगा साहब ? अपने ही नसीब को कौन अपने ही हाथों तोड़ेगा ? कौन जेल जाना चाहता हैं ? यह पूरी सोची समझी साजिश हैं जिससे हमें परेशान किया जाए, बर्बाद किया जाए ।"

इतना कहकर कुणाल रोने लगा । उसके वकील ने उसका ढाढ़स बँधाते कहा "आज जो भी सच हैं कोर्ट को बता दो कुणाल ! फिर समय मिले ना मिले । कुणाल आगे कहने लगा " जज साहब ! पुलिस ने मेर परिवार के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया । रुपयों की माँग की । मेरे बूढ़े माँ–बाप की खातिर मैंने वो सब किया जो कर सकता था । फिर भी जेल जाना ही पड़ा । जेल से छूटते ही पिताजी ने शर्म के मार` आत्महत्या कर ली , तभी से माताजी की हालत बहुत बुरी हैं , वो सरकारी अस्पताल में आखिरी साँसे गिन रही हैं । बहन को बहनोई ने इसलिए छोड़ दिया कि इस झूठे केस में उन्हें भी जेल जाना पड़ा । बहन रोज मुझे कोसती रहती हैं । जेल जाने के कारण कंपनी ने मुझे काम से निकाल दिया । अब ना मेरे पास पैसा हैं ना इज्जत ! क्या करूँ इस शादी को बचाकर ? सब कुछ बर्बाद कर अब सोनल मेरे घर आना चाहती हैं । क्या करूँ उसे घर ले जाकर ? अपने हाथों से अपना घर जलाने वाली और उसे ही बचाने की चेष्टा करने वाली मूर्ख औरत मुझे नहीं चाहिए जज साहब । मैं किसी भी हाल में इसे कबूल नहीं करूँगा फिर चाहें तो आप मुझे फाँसी ही दे दीजिए । अब मेरे पास स्वाभिमान के बगैर कुछ भी नहीं। जिसने मुझे झूठा, मक्कार, बेईमान और नपुंसक कहा उसके साथ मैं कतई जीवन जीना नहीं चाहता।"

सोनल को पछतावा हो रहा था कि उसने परायों के बहकावे में आकर उसके ही घर को बर्बाद किया था। अब मैंके में उसकी भौजाई भी छल रही थी । उसकी हालत नौकरानी से भी बदतर थी । अब वह अपना दहेज उत्पीड़न वाला झूठा केस पीछे लेकर अपने पति कुणाल के घर जाना चाहती थी ।

जज साहब के सामने पूरा केस खुल गया था । पर क्या फैसला दे ? उनके चेहरे पर दुःख के भाव नजर आ रहे थे । अंततः जज साहब ने फैसले को सुरक्षित कर अगले महीने तारीख दे दी ।

❑❑

हिताक्षी जैन

आयु –12 वर्ष

रचना श्रीवास्तव
कैलिफोर्निया

चकोर

उस घर के सामने पार्क में एक लड़का रोज आता और पेड़ के नीचे खड़ा हो कर चार बजे का इंतजार करता। चार बजते ही उस घर की बालकनी में दूधिया से रंग की एक नाजुक सी लड़की आती ,कभी अपने बाल सुखाती, कभी वहाँ के गमलों में पानी देती और कभी अरगनी पर कपडे फैलाती। लड़का प्रतिदिन नियम से आता। पेड़ के नीचे खड़ा होता और लड़की को दे खता। यही सिलसिला कई हफ्तोंतक चला। अब उसके दोस्तों को भी इस लड़की के बारे में पता चल गया। अब अक्सर उसके दोस्त भीलड़के के साथ आते और सभी पेड़ के नीचे खड़े हो चार बजे की प्रतीक्षा करते। अब वह चुपचाप लड़की को नहीं देखता, लड़कों के कहने पर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने की शालीन कोशिश भी करने लगा,पर लड़की अपना काम कर के चुपचाप चली जाती। यह सिलसिला भी बहुत दिनों तक चलता रहा। अब दोस्त उसको बात करने के लिए उकसाने लगे। कहने लगे के कब तक यूँ दूर दूर से देखेगा, जा न उससे बात कर ले। एक दिन लड़के ने बहुत हिम्मत की और सड़क पर कर उस इमारत के सामने पहुँचा और फाटक खोल के अन्दर आ गया। लड़की अपनी बालकनी में अरगनी पर कपड़े डालने की तैयारी कर रही थी। लड़के ने देखा कि वहां तो अरगनी है ही नहीं, डोरी टूटकर जमीन पर गिरी पड़ी थी, लड़की इससे अनभिज्ञ रोज के अभ्यास से कपड़े डालने के लिए टटोल कर डोरी की तलाश कर रही थी। लड़के को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, उसकी इच्छा हुई कि जमीन पर गिरी डोरी को वापस बांध दे, पर इस डर से कि उसकी मौजूदगी का एहसास होते ही लड़की डरकर चिल्ला ना पड़े, उसने यह विचार त्याग दिया। उसने आँख भरकर लड़की को देखा और उदास मन से वापस आ गया।

दोस्तों को बोला , "पास से देखने पर मुझे लड़की बिल्कुल नहीं जमी, बेमतलब समय खराब किया।अब कभी यहाँ नहीं आना है, चलो चलते हैं।" सभी वहां से चले गए। यह कई दिन पहले घटा था।

खास बात यह कि वह लड़की अभी भी रोजाना चार बजे बालकनी में आकर अपने रोज के काम करती है और वह लड़का भी प्रतिदिन पेड़ के नीचे खड़े हो कर चुपच. ाप उसको निहारता रहता है.

❑❑

रश्मि सहाय
ग्रेटर नोएडा

उड़ान

पंख होते तो उड़ आती रे ..मुस्कुराया विनय। ये जब–जब उड़ने की बात होती है स्त्रियां ही क्यों नजर आती हैं? बंधन तोड़ने में भी?

माना कि दशकों से स्त्रियों को वो महत्व नही मिला जो मिलना चाहिए था पर अब तो जमाना बदलरहा है। हर जगह स्त्रियां––

और उड़ने का मन तो पुरुषों का भी होता ही है, खुले आकाश में पंख फैला कर, अपनी आकांक्षाओं काआकाश विस्तृत करते हुए।

ईमानदारी से कहना क्या पुरुषों को इतनी छूट होती है? कभी धनाभाव, कभी जिम्मेदारियों का अहसास उन्हें उड़ने से रोक नही देता? लेकिन विनय, वो तमाम बाधाओं को दूर करताहुआ, अपने पं खों की शक्ति को तौलता हुआ उड़ने को तैयार था।

तिरछा होकर हवा में लहराने की एक्टिंग करते हुए आकाश की ओर मुँह उठाये वो अपनी इसहरकत पर खुद ही हंस पड़ा।

' राजनीति सेवा नही व्यवसाय है', को शुरू से ही जेहन में रखने वाला विनय इस बार फिर सफल रहा था और भारी मतों से विजय प्राप्तकरके वाकई हवा में ही उड़ रहा था।

उड़ते हुए उसे दिख रहे थे सैकड़ों खुले हुए हाथ जो उसे उड़ने दे रहे थे। तभी उसकी तंद्रा भंग हुई, ध्यान से देखा वो हाथ उसे उड़ा नही रहे थे, रोके हुए थे, अपनी–अपनी फरमाइश लिए हुए। सब की मांग, ये विभाग, वो विभाग––

ये कानून निरस्त करो, वो कानून में ऐसे सुधार करो और विनय की हवाई उड़ान वहीं रुक गई। वो अकेला नही उड़ सकता था उसके साथ कइयों की उड़ाने जुड़ी हुई थीं। अब उसके उड़ने की गति धीमी हो चुकी थी और शायद बोझिल भी––

❑❑

पूर्णिमा राघव शर्मा
मुंबई

बेटी–बेचवा

सकट का बायना ननद को देने गयी तो उनकी खुशी चेहरे से छलकी पढ़ रही थी मानो कुबेर काखजाना हाथ लग गया हो!एकांत मिलते ही मैं खुद को रोक नहीं सकी,'' दीदी,आज कोई लौटरी लगगयी क्या जो आप ...''बात पूरी नहीं कह पायी थी कि दीदी ने मेरे हाथ में तीन–चार तस्वीरें रख दीं,जो एक सुन्दर सलौनी किशोरी की थीं और शायद विदेश से ! एक तस्वीर में वो मृगनैनी केक काट रही थी,दूसरी में अपनी माँ को केक खिला रही थी और तीसरी में एक सज्जन जो शायद उस किशोरी केपिता लग रहे थे वो उसके कंधे पर एक हाथ रखे दूसरे हाथ से उसे कार की चाबी पकड़ा रहे थे ! लड़की का चेहरा आश्चर्य मिश्रित खुशी से दमक रहा था !

'' दी,यह मिष्ठी है ना ?'' दीदी मुस्कुरा उठीं एक अनकहे गर्व के साथ ! मिष्ठी..उनकी सौत की पोती थीऔर आज जिस पादान पर वो पहुँच सकी है वहां तो उसकी सगी दादी भी नहीं पहुंचा सकती थीं !सुनंदादी ..मेरी ननद,एक दुहाजू को ब्याही गयी थीं क्यूँ कि उनकी पीठ में कूबड़ था !जीजाजी ने उनसे शादीइसी शर्त पर की थी कि वो अपनी सौत की तीनो संतानों को पालेंगी और अपने बच्चे के लिए नहींकहेंगी ! दीदी,ने भी नौकरी ना छोड़ने की अपनी शर्त रखी थी और साधारण रस्म के साथ उनकी शादीचार जनों की उपस्थिति में कर दी गयी !

तीनो बच्चों की शादी उन्होंने अपनी नौकरी से कर्जा लेकर की थी ले. किन ''विमाता ''का ठप्पा उनकेमाथे से कभी नहीं मिट सका बल्कि एक लांछन और लग गया था ! दरसल,छोटे बेटे की पत्नी एकबच्ची को जन्म देने के दस दिन बाद चल बसी थी ! बड़े बेटे से 2 बेटियां और बेटी से भी 2 बेटियां थींऔर अब पांचवी बेटी का खर्चा उठाने की कुव्वत परिवार में किसी में नहीं थी !दूरदर्शी दीदी ने उस नन्हीसी जान को बिना किसी से पूछे सुदूर आस्ट्रेलिया में बसी अपनी बेऔलाद भतीजी को देकर उसकीगोद भरी थी,जिनके पास पैसा बेशुमार पर औलाद नहीं थी !

मुझे सोच में डूबे देख दीदी हंस कर करुण स्वर में बोलीं ,'' विमाता के साथ बेटी–बेचवा सही, क्या फर्कपड़ता है मुझे ?

❑❑

शशि महाजन
नाइजीरिया

राम का चिन्तन

भाग 2

राम, सीता , और लक्ष्मण चित्रकूट पर मंदाकनी नदी के किनारे चांदनी रात का रस ले रहे थे , पवन धीरे धीरे बह रहा था। पिछले कुछ दिनों से सोने सेपहले यहां आकर बैठना और विभिन्न विषयों पर चर्चा करना , उनका नित्यकर्म हो गया था। यही वह समय होता जब वे अपने दिनभर के कामों की चर्चाकरते, भविष्य की योजनायें बनाते और अयोध्या , मिथिला , गुरु विस्वामित्र , गुरुकुल आदि की बातें करते।

लक्ष्मण ने कहा , " अयोध्या तो हमारे मन में बसी है , परन्तु इस तरह जंगल में इस उन्मुक्तता का अनुभव करना भी अद्भुत है , मन की सारी अनावश्यकपरतें एकएक करके गिरती जाती हैं , जो रह जाता है , वह है शुद्ध चौतन्य, अनंत उत्सुकता , और कोमलता। "

राम और सीता हंस दिये, " कभी कभी तुम पूरे दार्शनिक हो उठते हो। " राम ने कहा।

" आप भी तो भैया , जब जंगल वासियों से या ऋषि मुनियों से बातें करते हो तो राजकुमार कहाँ रह जाते हो , एक साधक , एक अन्वेषक हो उठते हो। "

" तो क्या एक राजा को यह दोनों नहीं होना चाहिए ? " सीता ने कहा।

राम मुस्करा दिए , " मेरे विचार से तो राजा को आजीवन विद्यार्थी रहना चाहिए। हमारी प्रजा में कितने संगीतज्ञ , गणितज्ञ, साहित्यकार , और न जानेकितने गुणीजन हैं, जिनके समक्ष मेरा ज्ञान तृण मात्र भी नहीं, राजा तो बस इन सब के लिए ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करता है , जहाँ यहनिश्चिन्त होकर अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें। "

" परन्तु यह वातावरण तैयार कर सकना भी तो सरल नहीं। " लक्ष्मण ने कहा।

" सरल और कठिन होना तो अप. नी रूचि पर निर्भर है। " सीता ने कहा।

" तो क्या मात्र रूचि पर्याप्त है भैया ?" लक्ष्मण ने राम को उत्सुकता से देखते हुए कहा।

" रूचि आरम्भ है लक्ष्मण " राम के बजाय सीता ने उत्तर दिया।

" तो भैया , सबसे कठिन क्या है ?" लक्ष्मण की दृष्टि राम पर टिकी रही ।

" न्याय देना। " राम ने कहीं दूर देखते हुए कहा।

" तो क्या न्याय राजा की इच्छानुसार होना चाहिए ?" लक्ष्मण अभी भी राम को देखे जा रहे थे, मानो उत्तर के लिए व्याकुल हों ।

" नहीं न्याय सबके लिए समान है , इसलिए वह व्यक्ति विशेष पर निर्भर नहीं। " राम ने सोचते हुए कहा ।

" जब कानून परिभाषित है तो फिर कठिनाई क्या है ?" लक्ष्मण ने बल देते हुए कहा ।

राम मुस्करा दिए , " सीता तुम्हारा क्या कहना है इस विषय पर ?"

" मेरे विचार से कानून की गहराई से पता चलता है , कि वह समाज बौद्धिक और मानसिक रूप से कितना उन्नत है। " सीता ने सहज मुस्करा कर कहा ।

" और यह उन्नत होना क्या है ?" लक्ष्मण ने पूछा।

" उन्नत्त का अर्थ है उसमें दोषी और निर्दोषी का निर्णय होने के बाद क्षमा और सहानुभूति का कितना स्थान है। " राम ने द्रवित होते हुए कहा।

" अच्छा लक्ष्मण यह बताओ, कानून तो नैतिकता पर आधारित होने चाहियें , फिर नैतिक अनैतिक का निर्णय कैसे हो ? " राम ने लक्ष्मण के कंधे पर हाथरखते हुए कहा।

" भैया , अब आप मुझे उकसा रहे हैं। "

राम और सीता हंस दिए ," तुम्हारे भैया तुम्हें उकसा नहीं रहे , भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। यूँ तो हमारे यहां शिक्षा जहाँ गुरु शिष्य बैठ जाते हैं , वहांआरम्भ हो जाती है , पर एक शिक्षा वो भी होती है , जो मनुष्य ध्यान में, चिंतन द्वारा अपने मन की गहराइयों से पाता है , इस प्रश्न का सम्बन्ध मन कीगहराइयों से है। " सीता ने स्नेह से कहा ।

" अर्थात् हम नैतिकता अनैतिकता के ज्ञान के साथ जन्म लेते हैं! "

" हाँ मेरे भाई , और उसी सूक्ष्म नै. तिकता के आधार पर हम न्यायप्रणाली का भवन खड़ा कर देते हैं ।"

इससे पहले कि लक्ष्मण अपना अगला प्रश्न रखते , उन्होंने देखा दूर से ढोल , मंजीरे बजाते कुछ स्त्री पुरुषों का झुंड उनकी ओर बड़ा आ रहा था।

सीता ने कहा , " इस चांदनी रात में इनको नींद कहाँ , सारी रात गायेंगे, नाचेंगे। " फिर उन्होंने लक्ष्मण को देखते हुए कहा , " ऐसे अवसरों पर मुझे उर्मिलाकी बहुत याद आती है। परिस्थतयाँ अक्सर हमारे हाथ में नहीं होती, तुम दोनों के साथ जो हुआ , वह विषय न्याय अन्याय से भी परे है। "

" भाभी, आप अपने पर बोझ न लें , धैर्य का प्रश्न भी नैतिकता से जुड़ा है , हमें अपना कर्तव्य निभा लेने दें। " लक्ष्मण ने मुस्करा कर कहा ।

राम ने सीता की तरफ देखकर आंख की इशारे से उन्हें शांत होने के लिए कहा।

ढोल मंजीरे के स्वर एक दम निकट आ गए थे। वे तीनों उनके स्वागत में उठ खड़े हुए ।

जंगल संगीत लहरी में झूम उठा , हर कदम थरथरा उठा।

❑❑

डॉ.अंजना सिंह सेंगर
नोएडा
उत्तर प्रदेश, भारत

गरीब की भावना

'' आओ, धरमू। कैसी है बेटे की तबीयत ?''

''आपकी दुआ से अब बच्चा ठीक है, मालकिन। आप इलाज के लिए पैसे न देतीं तो निमोनिया से बच्चेकी सांस टूट जाती। एक विनती और करूंगा।''

'' कहो।''

'' इस महीने की पगार से पूरे पैसे मत काटिएगा, वरना परिवार कैसे पालूंगा ?''

'' ठीक है। थोड़ा– थोड़ा काट लूंगी। अब फटाफट सारे काम निपटा डालो। डॉगी को बढ़िया से शैम्पूलगा कर नहला दो। ––– और हां, शाम को एक न्यूज दूंगी तो अखबार के सारे दफ्तरों में दे आना।''

यह कह कर समाज सेविका पद्मजा जी ने एक पत्रकार को फोन किया,'' भाई साहब, शाम को एकन्यूज भेजूंगी तो लगा दीजिएगा। एक गरीब की भावना का सवाल है। दरअसल एक गरीब की मददकी थी। मेरी मदद से उसका बच्चा स्वस्थ हो गया तो उसकी इच्छा है कि मेरा फोटो उसके बच्चे केसाथ अखबार में छपे। ––– जी–जी, ओके भाई साहब। फिर मिलती हूं।'' ❑❑

निर्मला मूंदडा
इंदौर

एक तलाक ऐसा भी

पूरा परिवार आज बहुत खुश था। आज दोनो ओर के रिश्तेदार बहुत ही खुश थे। क्योंकि दोनोंपरिवार की इच्छा पूर्ण हो गई थी। पति–पत्नी का तलाक जो छह वर्षों से रुका था, आज उसका निर्णयहो गया। अब दोनों अजनबी थे । दोनों एक दूसरे को अजनबी नजरों से देख रहे थे।

अचानक पति ने पत्नी के माता–पिता से कहा –

आप कहें तो मैं 5 मिनट आपकी बेटी से बात कर सकता हूं?

हां– हां क्यों नहीं?अब क्या है ! आप पांच क्या दस मिनट बात कर लीजिए ,हम उसका इंतजारबाहर बैठकर कर लेंगे।

पति ने पत्नी से बात शुरू की। यह लो फ्लैट की चाबी ,तुम्हारी जमाई हुई गृहस्थी वैसी ही है । मैंने कुछनहीं किया है ,मुझे वहां रहना भी नहीं है । तुम बच्चों के साथ कब तक मायके में रहोगी!! औरमाता–पिता कब तक साथ देंगे ? इसलिए तुम मेरे बच्चों के साथ वहां रहना ।और हां मैं या मेरा कोई भीपरिवार वाला कभी भी वहां हक जमाने नहीं आएंगे ,तो शांति से वहां रहना। पर फिर तुम कहां रहोगे?

सुनो ,अकेले प्राणी का क्या !!कहीं भी रहूंगा,परंतु बच्चों के साथ तुम्हें बहुत तकलीफ होगी । अतः तुमफ्लैट में रहना। तुम्हें कमर और कूल्हे में जो भयानक दर्द था ,अब कैसा है ? पति ने बड़ी ही शांति सेपूछा।

कुछ ठीक नहीं है, सिकाई और पेन किलर दवाओं से काम चल रहा है । और तुम्हें जो गर्दन और कमरका दर्द था , स्लिप डिस्क वाला दर्द जो पैरों तक आता था । अब कैसा है?

वही है ,दवाओं से ही काम चल रहा है !ज्यादा फर्क नहीं है ।

परंतु ऐसा कब तक चलेगा?

चल ही रहा है ना, अच्छा अब मैं चलता हूं। बच्चों का ध्यान रखना , कभी–कभार बच्चों से मिलनेआऊंगा ।पति ने हिदायत दी।

ठीक है!!

एक दोस्त की हैसियत से जब भी जरूरत हो ,मुझे याद कर लेना पति ने कहा । उसकी आंखों में आंसू थे । वाणी अवरुद्ध थी । वह चलने को हुआ । मेरी रुको !! पत्नी की आवाज आई। मेरी तरफ देखो, झर झर आंसू बह रहे थे। क्या सारी गलती मेरी थी? पत्नी ने पूछा।

नहीं गलती मेरी भी थी, मैं भी तुम्हें समझ नहीं पाया।

तो मैं ही कौन सा तुम्हें समझ पाई!! इन छः सालों के अंतराल में समझ गई कि तुम क्या थे मेरे लिए।

दोनों एक दूसरे के दर्द और पीड़ा बांट रहे थे । कभी–कभी का झगड़ा इतना उग्र रूप ले लेगा मैं नहीं जानती थी।

दोनों अपने दिल का दर्द बांट रहे थे। दोनों की आंखें आंसुओं से लबालब भरी हुई थी ।

क्या हम अपना दर्द फिर से नहीं बांट सकते ? पत्नी ने कहा।

क्या कहा?

सही सुना तुमने !क्या हम फिर से नए सिरे से जिंदगी की शुरुआत नहीं कर सकते ?

जरूर कर सकते हैं, यदि तुम्हारी रजामंदी हो।

तो फिर आज ही फ्लैट पर चलते हैं।

परंतु तुम्हारे माता–पिता..!

अरे, मेरे जीवन का फैसला है ,मैं लूंगी । तलाक का फैसला भी मेरा था , तो जीवन का फैसला भी मेंही करूंगी।

सच कह रही हो क्या?।

हां हां मैं बिल्कुल सच कह रही हूं, मैं तुम्हारे साथ जीवन जीना चाहती हूं । जो समय गुजर गया वहलौटाया नहीं जा सकता है । परंतु मैं अब तुम्हारे साथ फिर से जीवन जीना चाहती हूं और नवजीवन कीशुरुआत करना चाहती हूं।

तो 5 मिनट रुको,मैं अभी आया।

पति दौड़ता हुआ बाहर गया उसमें नव ऊर्जा का संचार हो गया था । दुकान से दो हार लेकर आया,दोनों ने एक दूसरे को हार पहना कर फिर से नई जिंदगी शुरू करने का फैसला किया और घर की ओरचलने लगे ।

सभी लोग उन्हें भौचक्के से देख रहे थे।

❑❑

पूनम गौतम
दिल्ली

माँ

आज बैठे बैठे राघव की मां की कुछ यादें ताजा हो चलीं।उस दिन राघव की मां उसे अपनी सहेली रमाके घर लाई।रमा ने राघव को एक प्रतियोगिता में भाग लेने को राजी कर लिया। और राघव ने इस प्रतियोगिता में भाग ले कर अच्छी धनराशि जीती। कुछ दिन बाद राघव का नतीजा आया जिससे उसे उसे एक अच्छे कालेज में दाखिला मिल गया।आज राघव की मां बहुत खुश थी मगर राघव परेशान था कि बीमार मां को छोड़कर मैं दूर नहीं जा पाऊंगा। थोड़ी ही देर बाद मां की तबियत बिगड़ गई। मां ने कहा बेटा जल्दी रमा आंटी को बुला लाओ। रमा के आते ही मां ने कहा बेटा मैं जा रही हूं आज से ये ही तुम्हारी मां है। सुनकर रमा आंटी ने राघव का हाथ पकड़ कर सब बातें राघव कोबताई कि मां ने कैसे डाक्टर की सारी बातें सुन ली थीं और मुझे तुम्हारी जिम्मेदारी सौंपने के लिए राजीकिया और वो प्रतियोगिता में भेजने के लिए जो पेंटिंग तुमने मुझे दी उसकी धनराशि भी मां ने ही दी थी ताकि तुम उनकी दवा के पैसों के लिए बाहर काम करने ना जाओ और अपने दाखिले के पेपर की तैयारी कर सको।

सुनकर राघव रोने लगा और बोला मां तुमने इतनी बीमारी में भी मेरा इतना सोचा। मां बोली अरे येतो मुझे करना ही था तुम्हारी सफलता के सारे रास्ते खोले बिना मैं कैसे जा सकती थीं " मां हूं ना " कह कर मां ने प्राण त्याग दिए।

हर मां के चरणों में मेरा कोटि कोटि नमन ।

❑❑

नाम – गोपाल
आयु – 7 वर्ष, कक्षा – 2
स्कूल – प्राइमरी स्कूल मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

छोटा कलाकार

अमित कुमार कौशल
अम्बाला कैंट, हरियाणा

सुबह हो गई और घड़ी की घंटी बजी देखा तो सुबहः के 6.00 बजे हुए थे सोचा आज तो रविवार हैंथोड़ा और सो लूँ । खामोशी से तकिये पर सिर रख अपने ख्वाबों में विलीन हो गया और हो भी क्यों ना? रविवार यानी हमारी आजादी का दिन जिसकी आजादी का हक एक शादीशुदा व्यक्ति को पता होता हैं। कुछ मिनटों की नाटकबाजी उपरान्त हमारी धर्मपत्नी द्वारा हमें आदेश मिला! रविवार हैं उठ जाओ और आज अपनी पत्नी के लिये चाय बनाओ आज हमारी भी छुट्टी हैं और कहकर मुस्कुरा दी । हमारी आजादी पर जो काला बादल छाया था वह फट गया और पानी के झरोको ने हमारे प्यारे सपनों को हम से जुदा कर दिया । पत्नी को देखा, रसोई घर को देखा फिर घड़ी को देखा समय 7.30 बज रहे थे । हम उठे और रसोई घर की तरफ बढ़ चले गैस जलाई, भगोना रखा, पानी, चाय पत्ती, चीनी, अदरक, इलायची और अंतिम दूध डाल दिया । गरमा गरम चाय पेश कर दी । चाय का लुफ्त लिया, दैनिक क्रियो को निपट. ाकर, नहा धोकर नाश्ते का इंतजार करने लगे और नाश्ता सामने जब आया तो मन विभोर हो गया क्योंकि नाश्ते में थे छोले भटूरे जो हमें बेहद ही पसंद है ।

सेवा पानी मिलने के उपरांत, धर्मपत्नी द्वारा हमें आदेश मिला की मार्केट जाइए और लकड़ी का शू रैक लेकर आईये । हम तो छुट्टी की मौज में थे और किसी की हमारी छुट्टी पर नजर लग गई । धर्मपत्नी से आर्थिक योगदान प्राप्त होने के उपरांत हम अपनी स्कूटी निकल घर से बाजार की ओर हो लिए । हमारी पत्नी और हम में, हमारी खरीदारी को लेकर अधिकतर मदभेद रहता है उनका यह मानना की हम बचत और अच्छी वस्तु कभी नहीं खरीद पाते इसी कारण हमें बाजार जाना और खरीदारी करना पसंद नहीं हैं खैर अब ओखली में सर आ ही गाया तो मुसल से डरने का कोई फायदाभी नहीं । मन ही मन प्रण लिया आज भाई साब सस्ता, टिकाऊ और बहतरीन शू रैक ला कर ही दम लेगे।

मुंगेरी लाल के हसीन सपनों को त्याग हमने तत्काल अपनी स्कूटी उठाई और अपने चेतक धोड़े को दौड़ा दिया मार्केट की ओर मन में विचार लिया आज विजय हमारी ही होनी है। हाईवे के किनारे देखा तो लकड़ी के बहुत सारे लकड़ी के शू रैक बनकर तैयार खड़े थे हमने तत्काल अपने घोड़े चेतक (स्कूटी) को रोका और अपने निगाहों से निरीक्षण करने लगे की इन रैक को बेचने वाला दुकानदार कौन से कोने में छुप कर हमें ताक रहा है? देखा तो 8 साल का बालक हमारे सामने आया और बोला " अंकल जी! आपको क्या खरीदना है? हमने बच्चों की और निगाह भरी और सोचा कि आज तो सस्ते में हमें शू रैक मिल ही जाएगा, हमने बड़ी गंभीरता से उस बच्चों से पूछा कि इस शू रैक की क्या कीमत है ? बच्चों ने बड़ी ही अदब और उम्मीद भरी निगाहों से हमारी तरफ देखते हुए कहां की अंकल 600/— का छोटा वाला शू रेक और बड़े वाला 750/— रूपए का है । हमने बच्चे का जवाब सुनकर मन ही मन विचार किया कि अरे! देखने में तो बच्चा है और हमको कितने भोलेपन से महंगा सामान बेच रहा है । हमने भी मोल —भाव करने की कोशिश की और बड़ी चालाकी दर्शाते हुए बच्चे से पूछा 500/— में दे दो किन्तु बच्चा भाव गिराने के लिए ट्स से मस ना हुआ। मैंने अपने आपको खरीदारी में हराते हुए देखा हमने अपने चेतक को मार्केट की तरफ बढ़ा दिया । सारी मार्केट के खाक छानन ने के बाद हमें आभास हो गया की महंगाई का दौर चरम पर है दो घंटे की मशक्कत के बाद हम वापस फिर उसी बच्चे के पास पहुंचे गए । एक हारे हुए खिलाड़ी की तरह हमने अपनी निगाह से उसकी ओर देखा और बड़ी मासूमियत से कहा! यह बड़े वाला शू रेक दे दो । बच्चे ने शू रेक उढ़ाया और हमारी स्कूटी पर लादने का भरपूर प्रयास किया । अंततः असफल होने के बाद उसने कहा कि अंकल हम आपके घर तक इसको छोड़ आते है । हमने अपनी स्कूटी के पीछे उसे बिठाया बच्चे ने शू रेक को हाथों में थमा और हम अपनी पराजय के साथ घर की ओर अग्रसर हुए ।

घर की वापसी की और चलते हुए हमने बच्चों से पूछा तुम्हारा क्या नाम है? कितनी उम्र है ? बढ़ाते वडते हो कि नहीं? पिताजी क्या करते हैं? यह शू रेक कौन बनाता है? बच्चों ने हमारे सारे सवालों का जवाब देना शुरू किया और कहां अंकल! मेरा नाम मनोज है, मैं दस साल का हूँ कक्षा पांचवी में पढ़ता हूं । मेरे पिताजी की मौत दो साल की उम्र में ही हो गई थी मेरे घर में दादाजी मेरी मां और मैं रहते हैं। यह सारे शू रेक मैंने खुद अपने हाथों से बनाए हैं इनको बनाने का तरीका मुझे मेरे दादाजी ने सिखाया पहलेवही बनाते थे परंतु अब वह बूढ़े हो गए हैं तो आमदनी के लिए मैं और मेरी मां मिलकर यह शू रेक बनाते हैं । बच्चे ने रास्ते में हमें शू रैक बनाने का, लकड़ी का ज्ञान दिया, नाप तोल का हिसाब दिया, कितने खानों के लिए कितनी लकड़ी की जरूरत है उसका हिसाब दिया इन सभी जवाबों को सुनकर मैंने निश्चित अनुमान लगा लिया कि यह बच्चा झूठ नहीं बोल रहा है । इस तरह की कारीगरी के लिए इतना सटीक हिसाब कोई बढ़िया तजुर्बेकार ही रख सकता है ।

हम घर पहुंचे, हमारी धर्मपत्नी ने उस बच्चे की ओर देखा, उसे पानी पिलाया और एक बिस्कुट का पैकेट हाथ में दिया और हमारी और देखते हुए व्यंग कसा । अजी आपको शू रेक अकेले लाने को कहा था आप गर्मी में इस छोटे बच्चे को कहाँ परेशान कर रहे हो । हमने पत्नी को मनोज की तारीफ म ॅकुछ शब्द सुनाएं । हमारी पत्नी उसकी मेहनत से बहुत प्रभावित हुए, हमारी धर्मपत्नी ने उस शू रेक की कीमत को ₹1500 देकर चुकाया और उसे खूब पढ़ने लिखने का आशीर्वाद दियाद्य मनोज को हाईवे किनारे बनी हुई उसकी खेपड़ी में पहुंचा कर हम घर वापस आ गए । घर वापस आकर हमने उस छोटे बच्चों को अपने सोशल मीडिया पर, फेसबुक अकाउंट पर, इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ प्रेरणादायक पंक्तियां के संग संबोधित किया । हमारे जितने भी मित्रगण हैं सब उस बच्चों से मिले और उसका मनोबल बढ़ाने लगे कोई आर्थिक सहायता करने लगा तो

कोई शैक्षिक योगदान का समर्थन करने लगा। हमें मनोज, उसकी आदरणीय मां और आदरणीय दादा जी के लिए बहुत खुशी थी कि हम किसी आम इंसान के लिए जिंदगी में कुछ कर सके । जब भी हम हाईवे से गुजरते मनोज से मिलते और उसकेजीवन की प्रगति के बारे में हाल–चाल पूछ कर आगे चले जाते ।

आज फिर रविवार था, बाहर भ्रमण करने का हमारा ना कोई विचार था फिर भी मनकिया कि रविवार है चलो आज मनोज से मिल आते हैं। परंतु यह क्या आज मनोज की झोपड़ी के बाहर कई अनजाने चेहरे खड़े हुए दिखे आनन–फान्न में हम भी उस भीड़ में शामिल हो गए देखा तो मनोज को किसी तेज रफ्तार कार ने घायल कर दिया था । हिटएंड रन का केस था । मनोज को तत्काल हम सभी सिविल हॉस्पिटल लेकर पहुंचे जहां उपस्थित आपातकालीन सेवा प्रदान करने वाले डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित किया और तेज रफ्तार के आगे फिरसे जिंदगी हार गई द्य मां का बच्चों के लिए बिलखना और दादा के लिए पोते का मौत से जिंदगी की जंगका हार जाने का विलाप हमसे देखा ना गया । हम अपनी बंद आंखों में नमी को छुपाए उन आंसुओं को जमीन पर गिरने नहीं देना चाहते थे जिनसे हमारी भावनाओं के समंदर में लहरों का उफान उठ सके । कुछ दिनों बाद मन के समंदर की लहरों के शांत होना के उपरांत, हमने और हमारे सभी मित्र गणों ने स्वर्गीय मनोज की आदरणीय माता और दादा के लिए आर्थिक सहायता करने हेतु चंदा इकट्ठा करने की मुहिम शुरू की और दो लाख रुपए जोड़ स्वर्गीय मनोज की झोपड़ी की तरफ चल दिए परंतु यह देखकर बहुत निराशा हुई की स्वर्गीय मनोज की मां और उसके आदरणीय दादाजी उस झोपड़ी को छोड़कर कहीं और चले गए हैं। एक लेखक आज भी अपनी लेखनी से उनकी तलाश कर रहा है और एह सफर जिंदगी भर यूं ही चलता रहेगा। मनोज ...तुम जहां भी हो.. खुश रहो और प्रभु धाम में प्रभु की असीम कृपा पाते रहो...।

❑❑

प्रगति गुप्ता
जोधपुर

जुर्म

बरसों से बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट संग होती तेज बारिश, अपरा के लिए दहशतका सबब थी। जब कभी तेज बारिश होने का अंदेशा होता, वह खुद को कमरे में कैद कर, कामों मेंव्यस्त कर लेती, ताकि उसे बारिश होने का कम से कम एहसास हो। शादी के बाद न जाने कितनी बारअतिन ने उसके साथ भीगने की ख्वाहिश जाहिर की–

‘अपरा! चलो न बाहर गार्डन में। दोनों साथ–साथ भीगकर बारिश का आनंद लेते हैं।’

‘अतिन! मुझे बारिश में भीगना अच्छा नहीं लगता। आप तो जानते ही हैं बारिश मुझे आनंद नहीं देतीय डराती है। आप और बच्चे खूब मजे लीजिए। मैं आप सबके लिए गरमा–गरम पकोड़े बनाकर, आपकेआनंद को दुगना करती हूँ।’ अपरा हमेशा ही अतिन के इस आग्रह को प्यार से नकार देती।

‘मैं हूँ न अपरा तुम्हारे साथ। तुम्हारा डर खुद–ब–खुद भाग जाएगा।’

अतिन के जब बहुत मनावने करने पर भी अपरा हाँ न करती, तब एकांत मिलने पर अतिन पूछते–

‘तुम्हारे डर की वजह क्या है अपरा?... साझा कर लोगी तो मन से डर स्वतः ही दूर हो जाएगा।’

‘कोई वजह नहीं है अतिन। आप प्लीज जिद मत करिए।... आप और कुछ भी करने को कहेंगे जरूरकरूँगी, बस बारिश में नहीं भीग पाऊँगी।’

शादी के बाद कुछ सालों तक अतिन ने बहुत पूछने की कोशिश की, मगर अपरा टस से मस न हुई।अपरा अक्सर ही अतिन की इस ख्वाहिश को मार देती। अतिन बहुत सीधे थे। ज्यादा जिद करनाउनकी आदत में नहीं था। हमेशा कहते–

‘जो तुम्हें अच्छा नहीं लगता, मत करो, मगर कभी डरने की वजह साझा करोगी, तो अच्छा लगेगा। हममिलकर समाधान खोजेंगे।’

दरअसल बारिश के संग अपरा के चेहरे पर छाई हुई बेचैनी से अतिन घबराते थे। जब तक वह जीवितरहे, उनकी वजह जानने की इच्छा हमेशा रही।

अतिन को गए हुए भी अब सात महीने होने वाले थे। हृदयाघात से अनायास ही अतिन का चला जानाय अपरा को तोड़ गया था। अब अपरा को अतिन की यादें बहुत रुलाती थी। उनके आग्रह को टालना भी।गुजरते वक्त के साथ अपरा ने दूसरी यादों के साथ अतिन की यादों को भी मन में सहेज लिया था।

तीन दिन से लगातार हल्की बूँदाबाँदी के बाद, आज भी सुबह से आसमान काले घने लच्छेदार बादलोंसे लदा पड़ा था। बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली के लगातार चमकने से लग रहा था कि किसी भीवक्त तेज बारिश शुरू हो सकती है। अपरा को सिर ऊपर कर आसमान को देखना भी धड़कने बढ़ानेवाला महसूस हो रहा था।

अपरा अच्छे से जानती थी कि एक बार तेज बारिश शुरू होने पर, उसके न सिर्फ काम करने की गतिकम हो जाएगी, बल्कि उसके काफी काम धरे के धरे रह जाएंगे। मुंबई की बारिश के बारे में अपरा नेसुन रखा था, मगर बारिश के मौसम में बच्चों के साथ रहना पहली बार हुआ। अतिन के जाने के बादअपरा जयपुर से मुंबई शिफ्ट कर गई थी। गुजरे हुए पाँच–छः सालों से बच्चे मुंबई में थे।

बच्चों ने घर के काफी कामों को सवेरे ही कर दिया था। सिर्फ खाना बनाने से जुड़े काम अपरा कोकरने थे। उसने बच्चों की पसंद का खाना बनाया। बाकी बचे हुए कामों को भी निबटा दिया, ताकि सबतसल्ली से बैठकर लंच कर सकें।

चार–पाँच दिन की छुट्टियाँ होने के बावजूद भी बेटी अनुष्का के ऑफिस की सवेरे दो–तीन मीटिंग्स थी।वह अपरा को बोलकर गई थी, साथ में लंच करने के बाद उसका थोड़ा–सा ही काम बचेगा। मीटिंग्स सेफ्री होकर, वह बाकी काम माँ के पास बैठकर करेगी। कॉर्पोरेट जगत में काम करने वाली बेटी को छुट्टीवाला दिन भी छुट्टी होने का एहसास नहीं होने देता था। बेटे तेजस को कॉलेज के कई प्रोजेक्ट मिलेहुए थे।

बेटी अनुष्का ने लंच लेते हुए कहा–

"माँ! आप सब कुछ कितना टैस्टी

बनाती है। जब आप जयपुर में थी, हमें व्यस्तताओं के चलते कई बारखाना बाहर से ही ऑर्डर करना पड़ता था। मगर अब... लव यू मम्मा! आप हमारे पास हो तो ऐसा लगताहै हम कितना रिलेक्स हो गए हैं। पर अक्सर महसूस होता है, हम अपने कामों में कुछ ज्यादा ही व्यस्तरहते हैं, और आप अकेली हो जाती हैं।"

"दीदी ने सच कहा माँ! मैं जब आपके पास सोने आता हूँ, अधिकांशतः आप सो चुकी होती हैं। बहुतकम समय दे पाते हैं न हम आपको?" तेजस ने अपनी दीदी की बातों को विस्तार देते हुए कहा।

"मैं बिल्कुल भी अकेला महसूस नहीं करती हूँ बेटा। न ही तुम दोनों मुझे कम समय देते हो। दोनों कीअभी बहुत मेहनत करने की उम्र है। बच्चों के घर में होने का एहसास, न सिर्फ घर को रौनकों से भर देताहै, बल्कि मेरा संबल भी बनता है। तुम दोनों मेरी आवाज भर की दूरी पर हो, ये बहुत खूबसूरत एहसासहै बेटा। बच्चों के साथ होने से ही रसोई में भी हलचल है। तुम्हारे पापा के जाने के बाद मेरा खाना बनानेका दिल ही नहीं करता था। तुम्हारी हर रोज की फरमाइश मुझे बहुत कुछ नया ट्राई करने को कहतीहैं। मेरा दिन कैसे फुर्र करके निकल जाता हैय मुझे पता भी नहीं चलता।... रसोई में तुम दोनों के साथ काम करना मुझे बहुत खुशियाँ देता है। तुम दोनों का मुझे चलते–फिरतेप्यार करना, सारे दिन की थकान मिटा देता है। जब तुम्हारे बच्चे होंगे, तब इस भावना की खूबसूरतीका तुम्हें भी एहसास होगा। इन सब बातों से बहुत सुख मिलता है बेटा।"

"बच्चों का सुख अभी से? मुझे नहीं दीदी को जल्द महसूस होगा मम्मा। इस साल के आखिर में उनकी शादी जो तय है। मेरा तो अभी कॉलेज भी पूरा नहीं हुआ। माँ! अधिकतर घरों में बेटे काम नहीं करते, मगर आपने मुझे सब करना सिखाया है। सब आप की ही ट्रैनिंग है। किसी दिन मुझे सिर्फ आपकीपसंद का खाना बनाकर.. खिलाना है।"

अपनी बात पूर्ण कर तेजस अपरा के माथे पर चुंबन लेकर अपने कमरे में चला गया। बच्चों का इसतरह लाड़ करना अपरा को भावुक कर देता था। छोटे–बड़े कामों में मदद करना, अपरा और अतिन ने अपने बच्चों को बचपन से सिखाया था। घर के काम खुद करने की वजह से बच्चों को काम की कीमतबहुत अच्छे से महसूस हो गई थी। तभी दोनों अपने माँ–पापा की बहुत इज्ज़त करते थे।

अपरा बेटे और बेटी की बातों में खोई हुई थी कि अनुष्का की बात शुरू करते ही वर्तमान में लौट आई।

"माँ! अब आप भी थक गई होंगी।... आराम कर लीजिए। मैं जल्द ही फ्री होकर आपके पास आती हूँ।तेजस तो शाम तक फ्री होगा। आप अपना मँगवाया हुआ नया नॉवल भी पढ़ सकती हैं।"

अपरा के सहमति में सिर हिलाते ही, अनुष्का भी अपने ऑफिस के काम में व्यस्त हो गई। अपना खाना खत्म करने के बाद अपरा ने टेबल साफ़ की,और कमरे में पहुँचकर अपनी रॉकिंग चेयर पर नॉवल पढ़नेबैठ गई। अपरा खाना खाने के एकदम बाद लेटती नहीं थी। वह कुछ देर कुछ न कुछ अपनी पसंद कापढ़कर फिर आराम करती थी। नॉवल पढ़ते–पढ़ते कब दो घंटे निकल गएय अपरा को पता ही नहींचला।

जब उसका ध्यान तेज बारिश शुरू होने से टूटा, उसकी बेचैनी भी बढ़ती हुई धड़कनों के साथ बढ़तीगई। कमरे की खिड़कियों पर जोरदार आवाज कर टकराती बूँदों की प्रतिध्वनियाँ अपरा को बेचौनकरने लगी। अपने कानों में रुई खोंस लेने के बाद उसे चैन नहीं था। वह बार–बार भगवान से प्रार्थनाकरने लगी–

'हे भगवान हौले–हौले भी तो बारिश हो सकती है। पानी बरसाओं, मगर इतनी भीषण आवाजों के साथनहीं कि दिल और दिमाग दोनो ही दहल जाए।' तभी अचानक जोर से बिजली कड़कने से अपरा ने आँखें बंद कर अपनी रॉकिंग चेयर के हत्थों को ज्योंही कसकर पकड़ा, उसकी आँखों से आँसुओं की धार बह चली। जितना वह अपने आँसुओं को पोंछनेकी कोशिश करती, न जाने कहाँ से उतने ही आँसू बरसने को तैयार हो जाते। उसकी घबराहट लगातारबढ़ रही थी। टपाटप गिरती बूँदों की आवाजों के बढ़ते ही अपरा का खुद के डर पर कंट्रोल करनाय दूभरहो गया। उसने न चाहते हुए भी अनुष्का को आवाज लगा दी–

"अनुष्का!... अनुष्का! कहाँ हो बेटा? मेरे कमरे में आ जाओ, और आकर कुछ देर मेरे साथ बैठो।"

*****

माँ की लगातार आवाजें जब व्यस्त अनुष्का तक पहुँची, वह घबराकर दौड़ती हुई अपरा के कमरे में पहुँच गई और बोली–

"आप कब से मुझे पुकार रही थी माँ?... सॉरी... मैं आपकी आवाज सुन नहीं पाई। मैं अपने कामों मेंइतना खो हुई थी कि कब बारिश शुरू हुई, आभास भी नहीं हुआ। सॉरी मम्मा! अब मैं आपके पास आगई हूँ न, आप बिल्कुल परेशान मत होइए।"

बेटी का बार–बार सॉरी बोलना और बच्चों के जैसे समझाना अपरा को. कचोट रहा था। उसे मन ही मनआत्मग्लानि हो रही थी। ताउम्र बच्चों का संबल बनने वाली, खुद बेटी के सामने खौफ से काँप रही थी, मगर उसका जोर अपने भावों पर नहीं था। अपरा ने काँपती हुई उँगलियों से अनुष्का को छुआ–

"तू तो जानती ही है... तेज बारिश में मेरा जी बहुत घबराता है। कितनी बार कहा है जब भी बारिश हो, तुम या तेजस मेरे कमरे में आ जाया करो। मन थोड़ा जल्दी शांत हो जाता है। इतनी मूसलाधार बारिशजयपुर में कम ही होती थी बेटा।"

"तेजस जब पानी लेने रसोई में आया था, मैंने उसे बोला था एक बार आपको देखता आए। आपतल्लीनता से नॉवेल पढ़ रही हैं, उसने ही मुझे बताया। गलती हमारी है माँ... मुझे ही कुछ सोचना चाहिएथा। अगर मेरे ऑफिस का काम खत्म नहीं हुआ था, तो आपको बताकर जाना चाहिए था।"

अनुष्का के पास आ जाने और बातों की दिशा बदलने से अपरा धीमे–धीमे शांत होने लगी थी। अपराके सामान्य होते ही अनुष्का ने लेपटॉप पर अपना काम शुरू किया ही था कि हल्की हुई बारिश, वापसतेज हो गई। ज्यों ही अपरा ने पुनः थरथराना शुरू किया, अनुष्का सब काम छोड़कर माँ की रॉकिंगचेयर के पास जमीन पर ही आकर बैठ गई, और माँ की गोद में अपना सिर रख लिया। वह हौले–हौलेमाँ के हाथों को पकड़कर सहलाने लगी।

काफी देर तक अपरा के पैर पर अनुष्का अपना सिर रखकर बैठी रही, ताकि उसका ध्यान बँटे और वहसामान्य होने लगे। माँ के थोड़ा ठीक होने पर उसने लेटे–लेटे ही बहुत प्यार से पूछा–

"माँ! आपने कभी अपने डर के बारे में डॉक्टर से कन्सल्ट किया?"

तुम्हारे पापा ने खुद ही एक डॉक्टर ने कंसल्ट किया था। डॉक्टर ने सारी हिस्ट्री लेने के बाद कहा था–

'अपरा के साथ बारिश के मौसम में ही यह फेज आता है। बाकी कभी नहीं होता। ऐसे काफी मरीजहोते हैं जो पानी, विभिन्न आवाजों या चीजों से डरते हैं। डरने की और भी कई वजह होती है। आप चाहेतो हम काउन्सलिंग के कुछ सेशन कर लेते हैं। डर की वजह पता चलने पर कैसे ट्रीट करना है, यह बादमें तय करेंगे। बचपन में घटित हुआ डर भी खौंफ देता है। आप सब भी मेरे साथ मिलकर कोशिश करेंगेतो वह अपने भय से निकल जाएंगी।'

"फिर क्या हुआ माँ?"

"तुम्हारे पापा के बहुत कहने पर भी मैं अपने डर को साझा करने के लिए तैयार नहीं कर पाई। दरअसलमैं कुछ भी साझा नहीं करना चाहती थी।"

उस वक्त बेटी की प्रश्न भरी आँखों से देखकर अपरा खुद को बताने से भी नहीं रोक पाई। न जाने क्योंउसके मन में विश्वास था, आज की पीढ़ी उसकी बातों को शायद गलत न समझे–

"बेटा! मेरा मन इस बात को लेकर बहुत डरा हुआ था कि सब सुनने के बाद तुम्हारे पापा की क्या प्रतिक्रिया होगी? कहीं मेरी सुखी गृहस्थी में आग न लग जाए?... तुम्हारे पापा न सिर्फ मुझे बहुत प्यार करते थे, बल्कि मेरा संबल भी थे। मगर पति–पत्नी का रिश्ता होता ही ऐसा है कि संशय आता ही है।उन्हें मेरे इस डर का शादी के कुछ समय बाद ही पता चल गया था, मगर उन्होंने कभी दबाव नहीं डाला।न ही अपने बच्चों के सामने इस बात को गलत तरीके से उठाया। तुम दोनों को सिर्फ यही पता था किमुझे बारिश अच्छी नहीं लगती। तुमने कभी पूछा होगा तो तुम्हारे पापा ने ही शायद कुछ बताया होगा? मैंने इस बारे में जानने की को. शिश कभी नहीं की।"

"ओह! आज मैं समझी आप क्यों बारिश होने पर खूब सारे काम अपने लिए फैला लेती थी। खुद को बिजी रखने के लिए तेज आवाज में टीवी चला लेती थी या हमें अपने कमरे में गेम खेलने के लिएप्रोत्साहित करती थी। इस बीच बारिश का मौसम निकल जाता था। "

अनुष्का ने अपरा के पैरों को प्यार से सहलाते हुए आगे कहा–

"माँ! अब आपकी बेटी बहुत बड़ी हो गई है। आप चाहे तो अपनी बेटी के साथ सब कुछ साझा करसकती हैं। पहले पापा थे, वह आपको देख लेते थे। जाने से पहले पापा मुझे बोल कर गए थे–

"आपका ख्याल रखूँ, और मौका देखकर आपसे वजह भी जानने की कोशिश करुँ ताकि आप सामान्य महसूस कर सकें। पापा को लगता था हम दोनों के व्यस्त हो जाने के बाद आप अकेली कैसे सब हैन्डल करेंगी? पापा ने भी जाने से पहले हमसे प्रॉमिस लिया था कि हम दोनों में से कोई उनका यह छोटा–सा काम कर दें, ताकि आपका मन शांत हो जाए। बताइए न मम्मा आपके परेशान होने की वजह क्या है? माँ! आप जब अपने डर की वजह साझा करेंगी, तभी इस डर से स्वतः ही धीरे– धीरे निकलना शुरू हो जाएँगी।"

अपने पति के मन की बात जानने के बाद अपरा बहुत भावुक हो उठी। अनुष्का के बालों में उसकीउँगलियों की गति बातों के साथ घट–बढ़ रही थी। उसकी एक–एक उँगली का कंपन अनुष्का महसूसकर रही थी। माँ को असमंजस की स्थिति में देख उसने अनायास हठ पकड़ ली, और माँ की आँ खों मेंझाँकते हुए कहा–

"जैसे हर माँ अपने बच्चे की परेशानियाँ और खुशियाँ जानना चाहती है, और उसके अच्छे–बुरे में साथरहती हैं, हम भी आपके साथ रहेंगे। आप कहे तो थोड़ी देर के लिए तेजस को भी बुला लेती हूँ। मैंजानती हूँ वह भी आपको बहुत प्यार करता है। जिस तरह आप हमारी हर बात में हौसला बनी है, हमभी बनने की कोशिश करेंगे माँ।"

अपनी बेटी की बातें सुनकर अपरा की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, और वह सुबकते हुएबोली–

"मेरी बेटी बड़ी हो गई है और बहुत प्यारी भी। तेजस के इम्तहान शुरू होने वाले हैं य उसे मत बुलाओ।अपनी माँ की कहानी सुनना चाहती हो?... जो बीस–इक्कीस की उम्र में बहुत समझदार होते हुए भी नासमझी कर बैठी थी। जिसकी सजा वह आज तक भुगत रही है। तुम्हारे पापा से साझा नहीं कर पाई, क्योंकि हिम्मत ही नहीं हुई।"

अनुष्का लगातार अपरा की ओर देख रही थी। माँ की बातें अब उसके हाथों के रोंगटे खड़े कर रही थी।अपरा को अनायास ही अपनी बेटी का चेहरा देखकर महसूस हुआ कि अनुष्का न सिर्फ असमंजस में है, बल्कि वह माँ की बातों को पूरी तरह सुनने के लिए तैयार भी है। तभी वह लगातार अपने हाथों से माँ के हाथों को सहला रही है।

*****

अपरा अपनी बेटी के लाड़ में खोई–खोई, कॉलेज के समय में पहुँच गई। उसने अपना हाथ अनुष्का केहाथ से छुड़ाकर उसके बालों को सहलाना शुरू कर दिया और बोली–

अनुष्का! तुम्हें तो पता ही है, तुम्हारे नाना–नानी मुरादाबाद में रहते थे। उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई के लिएमुझे दिल्ली भेज दिया था। मुझे हॉस्टल में रहना पड़ा। कॉलेज का फाइनल ईयर था। हम चार दोस्तोंका बहुत अच्छा ग्रुप था। उस शाम भी बहुत तेज बारिश हो रही थी। हम दोस्तों ने योजना बनाई किबारिश में कहीं दूर किसी थड़ी पर बैठकर चाय पीते हैं। मैं और आभास एक मोटरसाइकिल पर थे।कहीं भी जाना होता मैं हमेशा आभास की मोटर–साइकिल पर ही बैठती थी।'

माँ को अचानक चुप होकर ख्यालों में खोया हुआ देख, अनुष्का ने सिर उठाकर माँ की आँखों में कुछटटोलने के लिए झाँका, मानो वो कुछ पूछना चाहती हो। माँ की आँखों में तैरती हुई नमी को देखकरअनुष्का खुदको पूछने से नही रोक पाई–

"माँ! आपने कभी किसी को प्यार किया था?"

बच्चे कितनी जल्दी बातें पकड़ते हैं, अपरा को अनायास एहसास हुआ। अपनी बेटी के इतनीमासूमियत से पूछे गए प्रश्न पर अपरा इनकार नहीं कर सकी। उसने अपनी आँखों की नमी को पोंछतेहुए कहा–

मैं आभास से बहुत प्यार करती थी। कॉलेज के समय ही हमारा प्रेम परवान चढ़ा। हम पूरी तरहपरिपक्व थे। अपना अच्छा–बुरा सोच सकते थे। सेटल होने के बाद हमारा विवाह करने का भी विचारथा, क्योंकि वह भी प्रबुद्ध परिवार से संबंध रखता था। मगर... वह जीवित रहता तभी तो ऐसा होता न? जब तक कोई किस्मत में नहीं लिखा हो, हमें कभी नहीं मिलता अनुष्का।'

"जीवित नहीं? क्या हुआ था उन्हें माँ?"

मैं आभास के कंधों से चिपकी हुई मोटरसाइकिल पर बैठी हुई थी। मेरी बाहें उसकी छाती पर कसी हुईथी। अनायास न जाने मुझे क्या सूझा कि मैंने उससे लिपटे हुए ही कहा–

'इतनी तेज बारिश है आभास... जी चाहता है तुम्हारे साथ इस बारिश में भीगते रहूँ। बारिश की हरगिरती बूँद मुझे तुम्हारे स्पर्श का अनूठा अनुभव करवा रही हैं। इस पल को मैं तुम्हारे साथ पूरी तरह जीलेना चाहती हूँ।'

अपनी बात बोलकर ज्यों ही मैंने उसे अपनी बाहों में कसकर, कानों में कहा–

'थोड़ी और तेज मोटरसाइकिल चलाओ न आभास! तेज हवाओं के संग शरीर पर गिरती हुई बूँदे मुझेपागल कर रही हैं। मैं तुम्हारे साथ इस पागलपन को जीना चाहती हूँ।'

अपनी अंतिम पंक्ति तक पहुँचते–पहुँचते अपरा फूट–फूट कर रोने लगीं। अनुष्का ने कमरे पड़ी हुईदूसरी कुर्सी को माँ की रॉकिंग चेयर के पास खींचा, और करीब जाकर बैठ गई। फिर माँ के आँसूपोंछते हुए बोली–

"फिर क्या हुआ माँ?"... अब माँ की आवाज का कंपन अनुष्का की आवाज में भी आ गया था।

'उसके बाद... आभास के कानों में कही हुई मेरी पंक्तियों ने उसका ध्यान ड्राइविंग से हटा दिया। बगैरहैडलाइट्स का एक ट्रक सामने से आ रहा था। बरसते हुए पानी की धुंध में कब मोटरसाइकिल ट्रक सेटकराई, उस क्षणांश कुछ भी समझ नहीं आया। एक जोरदार आवाज सारे वातावरण में गूँज गई थी।जब मुझे अस्पताल में होश आयाय तब पता चला। हमारा भयंकर एक्सीडेंट हुआ था। मैं सड़क केदूसरी ओर गिरी थी, मगर आभास... उछलकर ट्रक के सामने ही गिर गया।... और... और... आभास! मेरा पहला प्यार था। मेरी ही गलती की वजह से उसकी जान चली गई।... यह जुर्म मैंने किया हैबेटा!... यह जुर्म मैंने किया है बेटा! मैंने उसके जाने के बाद न जाने कितनी बार ईश्वर से खुद को अपनेपास बुलाने की प्रार्थना की। अगर मेरे जीवन में जल्दी विराम लग जाता तो, अपने इस जुर्म को कैसेभुगतती?... जब उसके मम्मी–पापा देह लेने आए, उनकी आँखें न जाने कितने प्रश्न मेरे से पूछ रही थी। जिनके उत्तरमें कैसे और क्या देती?... अनुष्का तू ही बता बेटा। उनकी आँखें... बारिश... मेरे कहे हुए शब्द सब, उसदिन बाद मेरे भीतर ठहर गए थे। हर बारिश मेरे लिए सजा है... अनकही पीड़ा है। यह मेरे मरने के बादही खत्म होगा बेटा। कोई डॉक्टर इसका इलाज नहीं कर सकता। मेरी वजह से मेरे प्यार की जानगई,... यह छोटी बात नहीं है।'

अपरा के फूट–फूट कर रोने और बिखरने से अनुष्का को भी रोना आ गया था। अनुष्का भी माँ की बातोंके संग कॉलेज लाइफ में पहुँच गई थी। माँ का कष्ट उसे अपने बहुत करीब महसूस हुआ। अनुष्का कोमाँ की कोई भी बात असामान्य नहीं लगी। अनुष्का ने ज्यों ही उठकर अपरा को अपने गले से लगाया।वह बस रोती ही गई। बरसों पुराना घाव बेटी के सामने खुलकर, आज फिर हरा हो गया था।

बेटी ने माँ को खूब रो लेने दिया। बाहर बारिश भी अब थम चुकी थी और अपरा भी रो लेने से काफीहल्की हो गई थी। अनुष्का ने माँ से पूछा–

"माँ! क्या यही वजह थी कि आप हमेशा तेजस को मोटरसाइकिल दिलवाने के विरुद्ध रही?"

अपना सिर सहमति से हिलाकर अपरा ने स्वीकृति जताई। आज अपरा ने अपने मन की व्यथा उस युवाबेटी को सुनाई थी, जो उसके प्रेम होने और उसके जाने को दर्द को समझ सकती थी। तभी अनुष्का नेमाँ से कहा–

"माँ! आप ही तो कहती हैं हर घटित के पीछे एक वजह होती है। कॉलेज लाइफ में प्रेम होना कोईगुनाह नहीं है। ऐसा सभी के साथ होता है। मेरे साथ भी हुआ तभी मैं और अतुल, आप और पापा कीसहमति से विवाह करने वाले हैं।... अंकल के जाने की वजह सिर्फ आप नहीं है?... हम सबकी मृत्यु का कारण, कोई न कोई वजह बनती है। कुछ पूर्व जन्म के संस्कार भी वजह बनते हैं।...

माँ! धीमे–धीमे सब भूलने की कोशिश करिए। आपकी बेटी हमेशा साथ है और रहेगी।.. कभी मनअच्छा हो तो अपने स्कूल–कॉलेज की और भी ढेर सारी बातें हमें जरूर बताइएगा। आपको पता है... जिस तरह माँ को अपने बच्चों की बातें सुनना अच्छा लगता है, उसी तरह बच्चों को माँ की यादों कोसहेजना अच्छा लगता है। पापा की जाने के बाद तेजस और मैं आपके दोस्त भी हैं। इस बात का हमेशा ख्याल रखिएगा। "

बेटी की बातें सुनकर अपरा भरी आँखों से कुछ इस तरह मुस्कुराई थी,मानो बरसों से उसकी मुस्कुराहटपर रखा हुआ बोझ अचानक ही हट गया हो।। ❑❑

अंशु जैन
देहरादून

पुरानी तस्वीर

अपनी पुरानी तस्वीरों से
निकल कर आना चाहती हूं,
एक दौर का वक्त
फिर से जीना चाहती हूं,
देखती हूं कभी की
समय बदल रहा है,
मैं समय से परे कहीं
ठहर जाना चाहती हूं,
एक मुंडेर पर घंटों....
बस अपना ही इंतजार
करना चाहती हूँ,
जानती है मुझे ये दीवारें,
घर की दहलीज भी,
पर!मैं अपने ही घर में
मेहमान बनना चाहती हूं,
कितनी ही बातें की होंगी मैंने..
पर सच कहूँ,
मैं बेहद चुप होना चाहती हूं,
बचपन में हुआ करता था
एक पसंदीदा कोना,
ऐसा ही एक कोना चुनना चाहती हूं,
मैं अपनी तस्वीरों से
निकलना चाहती हूं!

❑❑

नाम – निवान साहू
आयु – 6 वर्ष कक्षा – 1

बिलाल पठान
उदयपुर

पता भी नहीं चलता

कोई भी सभ्यता
आधुनिक सभ्यता नहीं है
सब सभ्यताओं में
पुरानी सभ्यता मशगूल है
सभ्यताएं इतनी संलग्न है
हम विभाजन नहीं
कर सकते
वैदिक और अवैदिक कहकर
एक वस्तु दुसरी वस्तु में
इतनी अन्तरंग है
एक स्त्री में सोया रहता है
एक आदमी
एक जागृत आदमी में रहती है
एक सोई औरत
प्रकृति इतनी अन्तरनिहित रहती है
फूलों के मर्सिये फलों में मिलते है
अदरक के उपदेश
सोंठ बनकर मिलते हैं
नदियों का मृत शरीर
रेगिस्तानों में पड़े है
पहाड़ों की कटी बोटियां
मकानों की नीवों में पड़ी है
सूरज रोज चलते चलते
टेढ़ा हो जाता है
पृथ्वी अक्ष पर घुमते घुमते
सीधी हो जाती है
चाँद गश्त करते करते बन जाता है
कटोरी भर चाँद
बहुत सुक्ष्म प्रकिया चलती है
प्रकृति और हमारे अभ्यंतर
कब हम किशोर से युवा
युवा से मृत्यु का सामन बन जाते हैं
पता भी नहीं चलता
घास खाते खाते ही बदल जाता है
घोड़े का तन
बगुले मछली का शिकार भी
नहीं कर पाते
उससे पहले आ जाता है लहरों में उंच.
ाई का प्रस्ताव
छाया का उत्थान भी नहीं होता उससे
पहले आ जाता है पत्तों के अवसान का
समय
बहुत गंभीर बदलाव चलता
समय की पहाड़ी पर
अंगूर की अभिलाषा
कब दाख के कूऐं में बोलने लगे
कब बसंत के फूल
अरब के इत्र बन जाते हैं
कब एक जवान पेड़...
यौन सुख का बिस्तर
कब धरती आसमान हो जाती है
पता भी नहीं चलता
हम समय के
गंभीर लेखन से जुड़े हुए हैं
कब एक अच्छी किताब
बूरी किताब में शामिल हो जाये
कब वर्साय की कोख से
उपज जाये नया विश्व युद्ध
कब एक नदी देवता हो जाये
कब विलुप्त
कब एक धर्म दूसरे धर्म की
छाया देने लगे
कब एक जाति कुलीन हो जाये दूसरी
जाति मलिन
कब एक डाकू,वाल्मीकि
अंगुलिमाल नामदेव हो जाये
कब साधरण पुरूष पैगम्बर हो जाये
कब एक पीढ़ी का देवता
दुसरी पीढ़ी में इंसान हो जाये
कब एक अच्छी बात बिगड़ते बिगड़ते
श्राप हो जाये
पता भी नहीं चलता
कब एक वस्तु दुसरी वस्तु में
बदल जाती है
कब एक कैरी लटकर
आम बनकर टपक जाती है
कब मरा हुआ लोहा
तलवार बनकर खड़ा हो जाता
कब सोना यात्रा करते करते अर्थव्यवस्था
बनकर खड़ा हो जाता
कब एक आग खाना बनाते बनाते दंगा
बनकर खड़ी हो जाती है
कब पहाड़ दादागिरी करते करते दशरथ
मांझी को रास्ता दे देते हैं
कब साम्यवाद का नारा लगाते लगाते
लोग पूंजीवादी के नारे
लगाने लग जाते हैं
पता भी नहीं चलता मगर घटना से
पहले बदल जाता है घटनाक्रम
लम्बी कहानी पढ़ते पढ़ते
उपन्यास की सुगंध आने लगती है
साधारण बतियाते बतियाते
बातें मुहावरे बन जाती हैं
नदी से नाराज जमीन,
पहले टापू ,फिर देश बन जाते हैं
भोली चिड़ियां तेजस्वी गीत
गाते–गाते शिकारी का
उत्तेजक नाश्ता बन जाती है
समय कितना नाजुक हत्यारा है आदमी
हंसते हंसते मर जाता है
पता भी नहीं चलता
समय और मुद्रा का रूपांतरण
बहुत गंभीर है
समय भिश्ती को राजा
और चमड़े को मुद्रा
समय जीने के तरीकों के साथ उपयोग
के तरीके भी बदल देता है
हमारे देखते–देखते ही
समय अपने कपड़े बदल लेता है
और हमें कर देता है वस्त्रहीन
बस ये बदलाव चलता रहता है
एक सभ्यता चलती रहती है
और आदमी भी चलता रहता है ।

❑❑

कनिका मांडलोइ
आयु –8 वर्ष

सुमन मलिक तनेजा
नई दिल्ली

सुगंध

..सुन्दर सफेद सलवार कमीज सफेद मोती की माला कर्णफूल !सब आपस मे ताल मेल बिठाती एसेसरीज हैंड बैग सैंडिल रम्या तैयार हो रही थी और उसकी नौकरानी पोंछा लगा रही थी .किट्टी मे जाने के लिए सब ध्यान देना पड़ता है वरना रम्या सादगी पसंद ही है .बहुत लीपा पोती उसे भी नहीं सुहाती "जल्दी हाथ चला ले मीनू ..मुझे टाइम पे निकलना है ."अपनी शॉल कंधे पे रखती रम्या ने महंगा वाला परफ्यूम डाला कलाई पर और नाक के पास लेजाकर एक लम्बी सांस भरी कितनी सुन्दर महक है ....उसकी बेटी लायी थी जब वो विदेश गयी थी बस एक बार लगाओ तो दिन भर भीनी भीनी सुगंध आती है खुद से !

तभी उसका ध्यान गया .मीनू पर अच्छी है न खुश्बू.जवाब नहीं दिया उसने कोई , रम्या रुक कर उसका चेहरा पढ़ने लगी .क्यों री तुझे अच्छी नहीं लगती खुशबु .ला दूँ क्या तुझे भी एक.

मीनू का चेहरा जैसे लाल पड़ गया शर्मा गयी ...क्या बात है रम्या ने पूछा .

बीबीजी हमको तो अच्छी लगती है पसीने की गंध जब हमारे आदमी के शरीर से आती है ....और मजूरी के पैसे रखता है तल्ली पर तो चूल्हे की आंच मे तवे पर जब पकती रोटी की गंध नथुने में घुसती है ..पूरा परिवार का पेट भरता है तो बच्चों और आदमी का चहेरा देख पूरा झुग्गी महक उठती है.!जाने क्या बोले चली जा रही थी मीनू और रम्या भी जड़ वत खड़ी थी . मीनू तुम अब बस,, कर ली काम चलो ..अब देर हो गयी है पहले ही .... और रम्या सोचने लगी पसीना भी कभी महकता है ...रोटी पकने की भी सुगंध ... .होती है कंही क्या .....!!!

❑❑

सुखमिला अग्रवाल
'भूमिजा'
कांदीवली, मुंबई

ढकोसला

महिला सशक्तिकरण पर आज का भाषण बहुत असरदार रहा। खूब तालियां बजीं। सभी ने खुले दिल से नगरसेवक सरकारी सिंचाई विभाग से ए ई एन की पोस्ट से रिटायर्ड राम लाल जी की प्रशंसा की। आज महिला दिवस पर महिला महाविद्यालय में उन्हें चीफ गेस्ट के तौर पर महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने के लिए आमंत्रित किया गया था। राम लाल जी ने ऐसा शानदार भाषण दिया कि सदन देर तक तालियों की आवाज से गूंजता रहा। हर कोई उनके व्यक्तित्व व महिलाओं के प्रति सम्मान जनक सुलझे रवैये की भूरी–भूरी प्रशंसा कर रहा था। बाहर निकलने पर अनेक लोगों ने घेर लिया, सर आटोग्राफ ..! की आवाजों से परिसर गूंज रहा था। लोंगे ने खूब शाबाशी दी।

घर लौटते मन ही मन सोच रहे कि महिला सशक्तिकरण पर बोलने से ज्यादा तालियां और सराहना मिलती है।

रामलाल जी की स्वप्न लोक में विचरती तंद्रा यकायक तेज आवाज से भंग हो गयी। हड़बड़ा कर इधर–उधर आश्चर्य से देखा , घर तो मेरा ही है । ये आवाजें कैसी..?

अंदर दाखिल हुए तो पत्नि को नई नवेली बहू पर गुस्सा करते देख माजरा सयमझने में पल भर भी न लगा।झल्लाकर अपनी पत्नी से पूछा,' क्या आज भी इसने अपने पापा को दहेज की गाड़ी भेजने को नहीं कहा। बड़बड़ाते हुए कहा ,'हद है अभी तक गाड़ी नहीं भेजी'।

❑❑

गीतेश्वर बाबू घायल
आष्टा ,(भोपाल)

संवेदना

भीड़ भरे चौराहे पर सिग्नल होते ही दो नन्हे हाथ गाड़ी चमकाने में व्यस्त हो गए। बाबूजी,,,,,,, कहकर,वही हाथ कांच के पास आकर फैल गए। भीतर से एक भद्दी सी टिप्पणी करते हुए सभ्य व्यक्ति ने कांच बंद कर लिया।

नन्हा मन और हाथ निराश होकर मोन रह गए।यह दिन में कई बार होता है, पर भूख सम्मान नहीं चाहती , रोटी का सहारा तलाशती है । निराशा के अंधेरे में आशा के जुगनू बार–बार चमकते हैं, पर रोशनी नहीं मिलती।

यकायक एक बहुत महंगी गाड़ी पुनः रुकी, बालक भाग कर उसके पास गया और कपड़े से सफाई करने लगा , किंतु अचानक सिग्नल पर हरि बत्ती हो गई और उस अमीर ने गाड़ी बढ़ा दी ।

गाड़ी उस बालक के दोनों पैरों पर से होकर गुजर गई ।खून और ती खी चीख सड़क पर बिखर गए, पर इस हृदयहीन,आधुनिकता की चमक धमक में वह आवाज दब कर रह गई ।उसी बालक की तरह चौराहे पर दो रोटी की तलाश में भटकती हुए गरीब बच्चों ने उसे संभाला और सरकारी अस्पताल पहुंचा दिया। बहुत दिनों के बाद वहीं बालक बैसाखियों के सहारे पर चलता हुआ गाड़ियों पर कपड़ा लगाकर दो रोटी की उम्मीद में दिन भर पसीना बहाने लगा।अंतर मात्र यह था कि पहले वो भाग कर गाड़ियों की सफाई के लिए जाता था, अब वह बैसाखी के सहारे रेंगकर जाता है ।आज समाज में पैसा शोहरत और अहम तो बड़ा है, पर मानवता, दया, अपनापन, नैतिकता, और संवेदनाएं मर गई हैं ।

❑❑

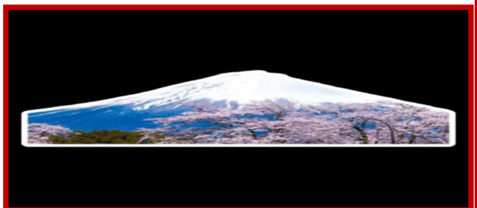

प्रणन्या,
कक्षा 1, दिल्ली,
आयु 5 वर्ष

विहान गर्ग
आयु–9 वर्ष
जकार्ता, इंडोनेशिया

आसमान में नटखट बादल

आसमान में नटखट बदल,
इधर भागते उधर भागते,
छम छम बरसाते काले बादल ।

आसमान में नटखट बादल,
कभी बड़े, कभी छोटे,
कभी रुके, कभी भागे न्यारे बादल।

आसमान में नटखट बादल,
कभी सूरज को छुपाते,
कभी धरती को फूलों से
सजाते प्यार बादल।

आसमान में नटखट बादल,
कभी धूप से बचाते,
तो कभी इंद्रधनुष दिखलाते
मतवाले बादल।

आसमान में नटखट बादल,
कभी घड़घड़ करके गरजते,
कभी बिजली सी चमकाते
रुष्ट बादल,

आसमान में नटखट बादल,
कभी पानी बरसाते,
तो कभी बर्फबारी करते ठंडा बादल।

आसमान में नटखट बदल,
कभी इमारतों तक पहुंच जाते हैं,
तो कभी पर्वत से भी
ऊंचे उड़ते सुंदर बादल।

❑❑

हिमांशी शर्मा
कक्षा– यूं के जी
उम्र – पांच साल
अल्पाइन पब्लिक

मैं हूं सुंदर परी

मैं हूं सुंदर परी
हर रोज एक पेड़ लगाऊंगी
शीशम का पेड़ लगाऊंगी
जामुन का पेड़ लगाऊंगी
और टमाटर का भी पौधा लगाऊंगी
मैं हूं सुंदर परी

मैं हूं सुंदर परी
सबको प्रदूषण से मुक्त कर दूंगी
ना कचरा फैलाऊंगी
ना कचरा फैलाने दूंगी
जो भी कचरा फैलाएगा
उसे मैं शिक्षा दूंगी
मैं हूं सुंदर परी
मैं हूं सुंदर परी

❑❑

मन्नत शर्मा
कक्षा– पांचवी
उम्र– 10 साल
ओ पी एस विद्या
मंदिर, अंबाला

गर्मी आई

गर्मी आई गर्मी आई
गर्मी आई गर्मी आई
साथ में गर्मियों की छुट्टियां लाई
जाएंगे हम नानी के घर
मिलकर खाएंगे कुल्फी बर्गर
फिर हम घूमने जाएंगे नाना नानी के साथ
फिर मैं साइकिल चलाऊंगी नाना नानी के घर
फिर आएंगे मामा मामी
करेंगे हम मस्ती
आ जाएंगे अपने घर

❑❑

विहान गर्ग
आयु–9 वर्ष
जकार्ता, इंडोनेशिया

आद्विक सोनकर
कक्षा–6, उम्र–11 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल
कानपुर

चार्वी तिवारी
सैतमा केन
काजो शी

अर्चना मुकेश मेहता
गाजियाबाद

कर हर मैदान फतह

विस्तृत है चारों ओर गगन
पर पँख तुम्हारे कीलित हैं,
हर ओर व्याप्त है कोलाहल
पर शब्द तुम्हारे सीमित हैं
लेकिन तुमको प्रतिक्षण प्रतिपल
एक लक्ष्य नया बुनना होगा,
पहचानो अपनी आत्म शक्ति
तुमको अब तो उड़ना होगा।

जो कुछ भी जुटा सकी हो तुम
पाया तुमने संघर्षों से
जीवन की राह गुजर में भी
खाए हैं धोखे वर्षों से

हां तुमको जो भी है हासिल
उसका संचय करना होगा
जागो अब शक्ति सहेजो तुम
तुमको अब तो उड़ना होगा

सहकार भावना अपनाकर
नित नए यहां सोपान चढ़ो,
एक दूजे का सहयोग करो
चहुंदिश अपना यशगान करो
जो लक्ष्य संजोए कर हासिल
एक कीर्तिमान गढ़ना होगा
तज लोक लाज और परिनिंदा
तुमको अब तो उड़ना होगा

यह ज्ञात रहे तुम निखरी हो
जल रक्त तप्त सी लपटों में,
लेकिन थी घिरी हुई अब तक
तुम दुनिया के छल कपटों में,
तुम मातृ शक्ति कुलशीला हो
अपने गौरव का ध्यान धरो
हे महा शक्ति जन कल्याणी
तुम जग जन का कल्याण करो।।

❑❑

अतीश मिश्रा 'बुन्नू'
पुर्निया, बिहार

गजल

आदमी अब रह गये हैं नाम के,
हैं नहीं हम आज कोई काम के।

बेच दी ईमान मैंने दो टके में,
भक्त हैं लेकिन अभी तक राम के।

जुल्म हर इक तुम,हमारे नाम कर दो,
बीच में हम आज हैं आवाम के।

क्या मुनासिब जिन्दगी पर सोंचना,
हैं बहुत से जख्म तेरे नाम के।

गुठलियां गिनने से क्या है फायदा,
तुम मजा लेते रहो बस आम के।

❑❑

ओमप्रकाश प्रजापति 'ओम'
दिल्ली

गजल

ख्वाब में तेरे ऐसे खोया हूँ
एक मुद्दत से जैसे सोया हूँ

मैं तुझे क्या बताऊं जान ए जां
हिज्र में तेरे कितना रोया हूँ

रात दिन तू ही है तसव्वुर में
इश्क में तेरे खोया खोया हूँ

चारा गर ने नहीं किया कुछ भी
जख्म ए दिल खुद ही अपने धोया हूँ

ये मुझे खुद पता नहीं है 'ओम'
बोझ गम का मैं कितना ढोया हूँ

❑❑

कर्नल आदिशंकर मिश्र आदित्य
लखनऊ

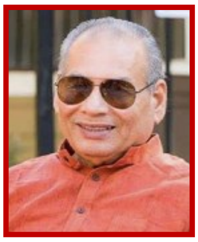

रिवाज चल पडा है धौंस जमाने का

आज एक दूसरे को नीचा दिखाने का,
हर किसी को खुद से कम आंकने का,

झूठ फरेब के सहारे बदनाम करने का,
रिवाज चल पड़ा है धौंस जमाने का।

मोमबत्ती व अगरबत्ती की कहानी,
दोनों मन्दिर में लगती हैं सुहानी,

मोमबत्ती को मानते सब गुणवान,
प्रकाश के प्रभाव से सदा धनवान।

मोमबत्ती अगरबत्ती को नीचा
दिखाने का प्रयास करती है,

पर अगरबत्ती सदा मुस्कुराती
रहती और प्रसन्न भी रहती है।

हमेशा की तरह एक दिन पुजारी
ने सायंकाल में दोनों को जलाया,

किसी कार्य से मंदिर से बाहर गया,
तभी हवा का एक तेज झोंका आया।

तेज हवा से मोमबत्ती बुझ गई,
और अगरबत्ती जलती भी रही,

हवा के साथ पूरे मंदिर में चारों
तरफ सुगन्ध भी बिखेरती रही।

मोमबत्ती का अहंकार नष्ट हुआ,
आदित्य वैसे ही अपने गुणों पर

कभी अहंकार नहीं होना चाहिए,
किसी को कम नहीं मानना चाहिये।

❑❑

आश्वी अवस्थी, 8 साल, कक्षा–4

विहान वैभव, कक्षा –5, केंद्रीय विद्यालय नं 4, दिल्ली

लीना शारदा
जकार्ता , इंडोनेशिया

साईं से विनय विनती

जन्मों जन्मों के पुण्य कर्मों से
मिला है, मुझे तू साईं
उन कर्मों की पवित्रता को,
बनाए रखना
अच्छे कर्मों को फूलों की तरह
चरणों पर ,चढ़ाए रखना
बुरे कर्मों,को निर्मूलय की तरह जीवन की नैया से बहाए रखना
गत जन्मों की नेकी से ही ,
इष्ट की उपासना का संयोग
मिला है ,मुझे साईं
इष्ट की उपासना से ही ,
भक्तों का भक्ति से
रिश्ता जुड़ा है साईं
भक्त और भक्ति के
इस अटूट रिश्ते को ,
गुरू रूपी आशीर्वाद का
सुख मिला है साँई
इस आशीर्वाद पर
अपने अखंड कृपा
आशीर्वाद की अमृतवर्षा करो
ना मेरे साईं
बना दो गुरु शिष्य का ये रिश्ता ,
अपरिमित मेरे साईं
मैं मैं ना रहूँ
तुझ में ही रम जाऊँ,
कर दो कुछ जादू साईं ऐसा
तेरी भक्ति में ही रम जाऊँ कुछ ऐसा,
मुझे खुद का खुद होश ना रहे जैसा
पुकारे जो कोई नाम तेरा ,
लगे मुझको नाम वो मेरा
रंग ही जाऊँ तेरे रंग मे ऐसा की ,
फिर कोई और ,ना रंग सके ,
मुझे तेरे जैसा
आसरा तेरा ही है ,मेरे साईं
इस आसरे पर ,श्रद्धा
सबूरी की मोहर लगा अब ,मेरे साईं
भक्ति की ,मेरी अनबुझी प्यास को
अब तूँ बुझा ,मेरे साईं
सोया हुआ हूँ ,इस जग की
नादानियों में मैं साईं
अपनी भक्ति कीर्तन,के मधुरिम नाँद से
मुझे अब जगा तूँ ,मेरे साईं
हुई है रोशन ये रूह
तेरे नाम से ही साईं
बुझे हुई अल्फाजों को
मिला गया हों कोई
चिराग जैसे तेरे रूप में साईं
भक्ति रुपी इस चिराग को
सदा प्रेम और श्रद्धा से
सजाएँ रखना साईं
इस तुच्छ सेवक की
रूह पर ,रुहानी प्रकाश,
अपना बनाएँ रखना मेरे साईं

❑❑

मंजू गुप्ता
नवी मुंबई

दोहे

मधुर वचन के बोल से , फैले मुख मुस्कान।
मनुज लगे है मित्र–सा, दिखता सुखद जहान।।

मधुर वचन की शक्ति में, भरी अमृत की खान।
बेच माल को शीघ्र ही, मनुज सकल दूकान ।

मधुर वचन हैं फूल –से , भरते महक सुगंध।
कुटिल बोल उल्टे लगें , तोड़े है संबंध ।।

बने अमृत तब जिंदगी, हो मृदु वचन प्रभाव।
कोयलसुर मृदु हैं लगे, रखती 'मंजु' लगाव।।

काग वचनजन को लगे, कर्कश कुटिल कठोर।
लगे श्रवण ये सुर बुरे, करती हृदय अघोर।।

मृदुल वचन को बोलने, मनुज करो अभ्यास।
लाएँ आदत में इसे , कहते ज्ञानी व्यास।।

दुर्योधन को बोल कटु, व्यंग्य द्रौपदी शान।
बनी वजह थी युद्ध की , चीर हरण अपमान।।

कैकेयी ने ले लिए , पति से दो वरदान।
मिली भरत गद्दी तभी, बढ़ी वचन की शान ।।

कुपित हुयी रानी तभी, दशरथ वचन प्रमाण।
रीति निभा रघुकुल पिता, राम विरह ले प्राण।।

पिता वचन को मान कर, राम गमन वनवास।
लखनसिया भी साथ में, सहन करें मग प्यास।।

❑❑

प्रो.स्वाति पाल
प्राचार्य
जानकी देवी मेमोरियल
महाविद्यालय

माँ

माँ बुनती थीं-स्वेटर
और उसको बुनते–बुनते...
एक 'आकार' बुनता रहता
आँखों के सामने...
पर कभी–कभी
माँ बुना हुआ एक हिस्सा
उधेड़ देतीं !
और
'आकार' बिखर जाता...!
कुछ ऐसी ही है–
मेरी जिंदगी !
बुनते...बुनते....
सब उधड़ गया !
और
'मैं' बिखरी ही
श्रृंखला :

ख्वाब

एक ख्वाब था मेरा...
बेटा
एक फूलों की सेज बनाऊँ
उस पर तुम्हें सुला कर
तुम्हारे घने बालों पर हाथ फिरा ,
एक लोरी तुम्हें सुनाऊँ ।
और

'आज' देखो मेरी किस्मत...

तुम फूलों की सेज पर हो आए
और मैंने
तुम्हारे घने बालों पर
अपने काँपते हाथ फिराए
पर ओ मेरे मोहन
अब तुम
एक गहरी नींद में सामने आए
और मैं
मैं खामोश हो गई तब
जिंदा लाश की तरह
सिर्फ मेरी
भरी आँखों ने
तुमसे कुछ कहा
पर क्या तुमने
अपनी रोती माँ को सुना
मेरे बेटे

❑❑

प्रशांत अवस्थी प्रखर,
कानपुर उत्तर प्रदेश

वंदे मातरम् का पद्यानुवाद

मैया नमन है नमन
मैया नमन है नमन
सुंदर जल से सुन्दर फल से
तुमसे मलय पवन शीतल से
तेरे चरण में सौ–सौ वंदन
मैया नमन है नमन...

चंद्र रोशनी तुमसे पुलकित
फूल वृक्ष तुम करती शोभित
हंसती भाषा मधुर तुम्हारी
वरदाती तुम करती सुख मन
मैया नमन है नमन

कंठ करोड़ों करें प्रसंशा
हाथ करोड़ों करते रक्षा
तारनहारी तुम बल दाती
शत्रु दलों का करे शमन
मैया नमन है नमन..

तुम विद्या हो,धर्म तुम्हीं हो
तुम हृदय हो, तत्व तुम्हीं हो
प्राण शरीर भुजा शक्ति तुम
हृदय बसी हुई भक्ति तुम
तुम रहती हो सबके मन
मैया नमन है नमन..

तुम दुर्गा दश अस्त्र धारिणी
कमल विराजी लक्ष्मी रानी
वाणी विद्या देवी नमन लक्ष्मी
पवित्र अतुलनीय सुंदर
जल फल दाती तुम्हें नमन

श्याम सरल हंसती
भूषित धारक पालक
तुम्हें नमन.
मैया नमन है नमन..

❑❑

कृति अवस्थी
जकार्ता

ये बेटियाँ जाने कब बडी हो जाती हैं

थामा जब मैंने अपने हाथों में
तुम्हारा नन्हा सा हांथ था,
बड़ा ही खूबसूरत वह एहसास था
अपनी गोद के झूले में झुलाते थे तुम्हें
लोरी गाकर सुलाते थे तुम्हें
तुम्हें उँगली पकड़कर चलना सिखाना
आज भी याद आता है,
तुम्हें अपने हाँथों से खाना खिलाना
कहाँ भुलाया जाता है
तुमने बोला जब अपना पहला शब्द था,
क्या बताऊँ कितना प्रसन्न मेरा यह मन था
प्यारी प्यारी बातें तुम्हारी,
न जाने सुनाती तुम कितने किस्से कहानी
दिल तो चाहता था बस यही,
कि थम जाए वक्त वहीं
पर ऐसा भी कहीं होता है
समय तो बस हांथ से रेत सा फिसलता है
कल तक जिसको उँगली पकड़कर
चलना सिखाया,
आज वह मुझे लैपटॉप चलाना सिखाती है
ये बेटियाँ जाने कब बड़ी हो जाती हैं
मेरे हाथों से खाना खाने वाली
आज मुझे पिज्जा, बर्गर बनाकर खिलाती है
ये बेटियाँ जाने कब बड़ी हो जाती हैं
बुरी नजर से बचाने के लिए कल तक
जिसको मैं काला टीका लगाती थी,
आज वह मलम–सपदमत लगाना सिखाती है
सच कहूँ पता नहीं
ये बेटियाँ कब बड़ी हो जाती हैं
कल तक घर के आँगन में
चिड़िया सी चहकने वाली,
आज डोली में बैठकर जाती है
मेरी आँखे नम और मेरा घर सूना कर जाती है
ये बेटियाँ जाने कब बड़ी हो जाती हैं
जहां भी रहो बस हँसती खेलती रहो हमेशा,
दुआ बनकर यह आवाज
सदा दिल से आती है!!

❑

सूक्ष्मलता महाजन 'चिंतन'
दिल्ली

गजल

❑

कोलाहल से दूर,
चलो कुछ बातें कर लें
अपने संग हम बैठ खुशी से
कुछ पल जी लें॥

दौड़ रहे दिन रात,
न जानें कहाँ है जाना
समय नहीं है पास,
यही है सबका गाना
ऐसा क्या जो साथ,
हमें है लेकर जाना
अपना आप ही खास,
उसी के संग हम रह लें॥

❑❑

इलाक्षी जैन,
कक्षा 1–ए आयु 6वर्ष
माइंड ट्री विद्यालय
अम्बाला सिटी,हरियाणा

पारुल सिंह
नोएडा

ऐ वहशते दिल

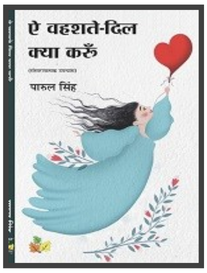

उपन्यास

बाजीचा–ए–अतफाल है
दुनिया मेरे आगे
होता है शब–ओ–रोज
तमाशा मेरे आगे

डॉक्टर अमिता आकर गुड मॉर्निंग कहती हैं और मेरा हाल पूछती है। मैं उन्हें देख कर चहक जाती हूँ वो थोड़ी सी जल्दी में लग रही थी। वो पर्दे खींचते हुए कहती हैं –'मैं एक बार आपको चेक कर लूँ पारुल जी?' मैं सहर्ष तैयार हो जाती हूँ।
'आप सो पाईं रात में डॉक्टर?'
'बिल्कुल, घर जाते ही सो गयी थी।'

वो मेरे इंसिसन साइट और गरोइन को चेक करती हैं और फिर कहती हैं कि आज आपके टाँके हम इंसिसन के निकाल देते हैं पारुल जी। जब संगमा के साथ मिल कर उन्होंने ये प्रॉसेसेज किया तो बहुत ज्यादा दर्द तो नहीं हुआ पर कम भी नहीं था। उन्होंने मुझे एक लम्बी साँस खींचने को कहा और वो कोई तार पेसिंग वाइअर था जो उन्होंने निकल दिया और संगमा के साथ मिल कर ड्रेसिंग भी कर दी। वो जल्दी से फिर चली गयीं।

हम लोगों का नाश्ता हो गया था। आज मेरे लिए कोई सूप आया था।

संगमा के अलावा सभी डे शिफ्ट की नर्सेस आ गयी थीं। मैंने संगमा से पूछा कि वो क्यों नहीं गयी, तो उस ने बताया कि आज उसकी डबल शिफ्ट है,कल रात के बाद अब वो आज दिन में भी यहीं रहेगी, वो शाम को जाएगी।

नींद नहीं आएगी क्या इसे, मैं सोच रही थी। सिस्टर मेरे बालों में आज सुबह रबड़ बैंड लगा गयी थी, बाल मुझे पीठ में चुभ रहे थे तो मैंने चोटी आगे कंधे पर घुमा ली थी। ऑक्सीजन ट्यूब तो नहीं पर अब हाथ में बँधा ऑटोमैटिक बी पी अप्रेटस परेश. ान कर रहा था। हर पंद्रह मिनट में ये खुद ही घुन घूँ कर चालू हो कर रीडिंग लेता था जिस से अचानक मैं डर कर उछल पड़ती थी। कितना भी याद रखो, नींद आ जाए तो वो खुल जाती थी।

अब एक नर्स उस काम को कर रही थी जो वो खुद को ज्यादा स्मार्ट समझने वाला स्टाफ करता था उसकी शिफ्ट खत्म हो चुकी थी। और ये नर्स बार–बार दरवाजा चेक कर आती थी। पर आज मेरे डॉक्टर का कहीं अता–पता नहीं था। इसी बीच री–सर्जरी वाले मरीज अपने आप साँस लेने की कोई कोशिश न करते हुए सोने की धृष्टता भी कर चुके थे। ये व्यवहार तो संगमा को बिल्कुल पसंद नहीं था। वो एक और नर्स के साथ चिल्लाती हुई उनके पास पहुँची। 'आप से कहा है न, लम्बी साँस लीजिए, सोना नहीं है।' वो दोनों उस मरीज को देख ही रही थीं, कि आँधी तूफान की तरह बहुत सारे डॉक्टर्स के साथ मेरे डॉक्टर दाखिल होते हैं वो सीधे बगैर इधर–उधर देखे उन्हीं मरीज के पास पहुँचते हैं। खूब सारे निर्देश आदेश वो सब डॉक्टर्स को देते हैं, आज उनकी आवाज थोड़ी तीखी भी है तेज भी है।

वो आज जब मेरे पास आते हैं तो फिर वो ही खूब सारे सैनेटाइजर से हाथों को रगड़ कर धो डालते हैं। इस धोने में गुस्सा है, तीव्रता है, जैसे कोई चिढ़ है, आज वो काफी बहुत ज्यादा गम्भीर नजर आ रहे हैं और 'गुड मॉर्निंग मिसेज सिंह' के साथ 'हाउ आर यू' भी पूछा तो है पर उसके जवाब का इंतजार नहीं किया। सीधा दूसरा सवाल कर दिया।
''क्या मैं एक बार आपका इंसिसन साइट देख सकता हूँ मिसेज सिंह?''
''जी डॉक्टर।''

स्टाफ द्वारा पर्दे डाल दिए जाते हैं। संगमा डॉक्टर अमिता और मेरे डॉक्टर ही बस अंदर रहते हैं उन पर्दों के। वो संगमा की ओर देखते हैं संगमा और डॉक्टर अमिता आगे बढ़ कर मेरे घाव से कपड़े हटा कर ड्रेसिंग खोल देती हैं। वो चेक करते हैं फिर दोनों सिरों से दबा कर देखते हैं। पीछे हट जाते हैं। और पर्दे से बाहर निकल जाते हैं। संगमा मेरी ड्रेसिंग और कपड़े फिर से व्यवस्थित कर देती हैं।
''अब ठीक हैं पारुल जी, हम कर्टंज हटा दें ?'' पूछ कर मेरे जवाब से आश्वस्त होने के बाद डॉक्टर अमिता पर्दा हटा देती हैं। मेरे डॉक्टर दूसरी ओर मुँह फेरे खड़े हैं। डॉक्टर अमिता उन्हें 'सर' पुकारती हैं तो वो पलटते हैं।
''मिसेज सिंह आप अच्छा रिकवर कर रही है पर इसमें आपका कोई योगदान नहीं है। अभी तक आपकी ये आक्सी. जन ट्यूब हट जानी चाहिए थी। अपने लंग्स के लिए आपको खुद मेहनत करनी होगी। आप लम्बी गहरी साँस लेती रहिए। आज से आपको स्पाइरोमीटर मिल जाएगा आपका लक्ष्य जल्द से जल्द उसकी तीनों बाल्स को उठाना होगा।'' फिर वो फर्श को देखते हुए कुछ सोचते से नजर आते हैं, जैसे कोई कहूँ न कहूँ, या कैसे कहूँ की कशमकश में होता है। और फिर वो कह देते हैं।
''और आप प्लीज कुछ टाइट टॉप पहनिए कोई टाइट टी शर्ट या ब्लाउस। So that the heaviness of your upper parts doesn't cover the incision site and speeds up the healing प्लीज विअर सम टाइट क्लाथ्स सो दैट हैविनेस एंड सेगिनेस आफ ब्रेस्ट डजंट कवर दा इंसिसन साइट। यहाँ कोई और ड्रेस अलाउड नहीं होता पर हम आपको ये इजाजत दे रहे हैं।''
''डॉक्टर अमिता''
अब वो डॉक्टर अमिता की ओर मुखातिब होते हैं
''येस सर।''
''इनके अटेंडेंट को समझा दीजिए, वो इनके लिए कपड़े ले आएँगे।''
''जी सर, मैं अभी करती हूँ।''

डॉक्टर अमिता की बात पूरी होने से बहुत पहले मेरे डॉक्टर कमरे के दरवाजे से तेजी से बाहर निकल चुके थे। डॉक्टर अमिता और बाकी सब डॉक्टर्स भी उनके पीछे पीछे चले गये।

मुझे आज किस बात के लिए ये रूखी–सूखी बातें सुनने को मिली थी मुझे नहीं समझ आ रहा था। संगमा और बाकी नर्सेस अपने काम में लग गयी थीं। मैं लेटे हुए सोच रही थी आज अचानक मेरे वुड पर प्रेशर क्यों आ गया था। मैं लम्बी–गहरी साँस लेकर खुश्क हो गयी थी और ये मेरा कोई योगदान नहीं है रिकवेरी में, बता कर चले गये थे। हद है ऐसे कौन बात करता है। और तुम इनके लिए अपनी प्यारी पड़ोसन सुदेश जी से नाराज हो गयी थी पारुल ! पेशंट लॉयल्टी शिफ्ट कर दूँ क्या?

मैं डॉक्टर अमिता का इंतजार करती

रही पर वो नहीं आयीं। मेरा सर घूम रहा था। तभी एक डॉक्टर आकर अपना नाम बताते हैं और कहते हैं कि वो फीजियोथेरेपिस्ट हैं, मुझसे पूछते हैं कि क्या मैं आज से एक्सरसाइज शुरू करना चाहती हूँ। मैं अपनी सहमति देती हूँ। वो कहते हैं कि आज हम आपको बेड के साइड में खड़ा करेंगे। आप चाहेंगी तो एक कुर्सी पर बैठ भी सकती हैं थोड़ी देर के लिए। मैं हाँ कह देती हूँ, वो थोड़ी देर में आने का कह कर चले जाते हैं।

वो जल्द ही वापस आते हैं। अपने एक और सहयोगी के साथ मिल कर मुझे पहले पूरा प्रोसेस समझते हैं कि वो मुझे कैसे उठाएँगे और मुझे क्या ध्यान रखने हैं। मुझे अगर कहीं भी दर्द होने लगे तो तुरंत बताना है और रुक जाना है और जितना कर सकूँ उतना ही करना है। वो मेरी सभी तारें और ट्यूब्ज समेट कर बेड के दायीं ओर सेट कर लेते हैं और बहुत ही सहजता से मुझे बेड के सहारे खड़ा कर लेते हैं, पहले से ही चप्पल वहाँ रख दी गयी होती है। मैं खड़े होकर सामने देखती हूँ फिर डॉक्टर को देख कर मुस्कुराती हूँ। वो वेरी गुड मेम कहते हैं। मेरे पैर तनाव महसूस कर रहे हैं पर मैं खुश हूँ। मेरे शरीर में खून इध र–उधर बुल्क–बुल्क दौड़ रहा है पर मैं खुश हूँ। मुझे अपनी ही एक कविता याद आ जाती है।

000

कैंटीन वाले हम लोगों का प्री लंच स्नेक्स लेकर आते हैं जिसमें आज मेरे लिए जूस है। इस जूस के लायक मेहनत तो मैंने की थी। इस लिए मैं जूस के साथ पूरा–पूरा न्याय करती हूँ। और फिर सो जाती हूँ। लंच में आज मेरे लिए दाल का पानी सूप और सूजी की खीर आती है।

संगमा री–सर्जरी वाले मरीज का मास्क हटा कर आक्सीजन ट्यूब लगाती है पर जल्दी ही फिर टुन टुन कर उसका मॉनिटर बज उठता है, बार–बार और वो फिर मास्क पर आ जाता है। जिसे वो बार–बार उखाड़ भी फेंकता है क्योंकि उसे सोने नहीं दिया जा रहा है। संगमा किसी काम से बाहर जाती है, तो इस बार मास्क उतरने पर वो नाजुक सी प्यारी सी नर्स उसके पास जाती है। मास्क वापस लगा कर कहती है।

'आप इसे नहीं हटायिए बार–बार, ये आपके लिए ही तो लगाया गया है, वरना फिर साँस कैसे आएगी ? हुन्न... बोलो!!'

वो सज्जन मास्क लगे मुँह से ही सिस्टर को देखते रह जाते हैं।

''हुन्न... बोलो!!'' सिस्टर ने फिर पूछा।

वो बेचारे क्या कहते, उनका हाल तो कुछ यूँ था कि .....

'आप को देख कर देखता रह गया
क्या कहूँ और कहने को क्या रह गया....
.'

सिस्टर ''हुन्न... बोलो।''

और फिर मास्क नहीं हटाते वो एक बार भी। एक–दो बार और वो नर्स उनके पास आकर जो भी कहती है वो मान लेते हैं। वो उन्हें लम्बी साँस लेने को कहती है, वो लेते हैं।

उस प्यारी सी नर्स के ''हुन्न... बोलो'' में वो जादू था जो आदिकाल से किसी भी स्त्री के समक्ष किसी भी पुरुष को बेचारा, निरुपाय बनाता आया है, वो जादू यहाँ चल गया था। पुरुष स्वभावतः स्त्री के किसी भी रूप के समक्ष आशा भरी निगाहों से ही देखता है। उसे लगता है उसी के पास हल है उसकी सारी समस्याओं का। भरण–पोषण की दुरूह कँटीली धूप सी जिम्मेदारियों से व्याकुल वो ठंडी नर्म छाँव सदा अपने जीवन की स्त्रियों में ही तलाशता व पाता है। पुरुष स्वभाव अपनी भावनाओं को प्रकट न कर पाने के लिए शापित है, और ऐसे में कोई स्त्री चाहे किसी भी रिश्ते में हो जब उसका अनकहा समझती है तो वो उसके समक्ष आँख मूँद आराम पाता है। समर्पण उसका स्वभाव नहीं पर ऐसी स्त्री के समक्ष वो अपने हथियार खूँटे पर टाँग रखता है। इसीलिए अपनी बेटियों और बहनों, माँओं और उस स्त्री के समक्ष पुरुष प्रायः समर्पण किए रहते हैं, चाहे वो उन से उमर में छोटी ही हों। और री–सर्जरी वाले मरीज तो हदपार बेचारगी से घिरे हुए थे। यहाँ किसी पर उसे विश्वास नहीं बन रहा था। विश्वास बनता भी कैसे, बेचारे की आँखें तक तो खुल नहीं पायी थीं, कि फिर री–सर्जरी हो गयी। पर अब उसने दर्द और अपनी असुविधाजनक स्थिति से परेशान होकर समर्पण का फैसला कर लिया था। मिट्टी को खुदा कहने से मिट्टी खुदा नहीं बन जाती। पर उस विश्वास से मिली ताकत से इंसान मुसीबतों से टकरा जाता है। री–सर्जरी वाले मरीज ने अपना धरती का खुदा धार लिया था उस नन्हीं सी बच्ची को।

संगमा और उस नर्स को ये पैटर्न पकड़ने में ज्यादा देर नहीं लगती कि भाई साहब इन नर्स के अलावा और किसी की बात नहीं मानते। नतीजा ये कि दो घंटों में ही वो नर्स उनके पास जाती है और कहती है– ''डोरा सिंह जी अब मैं आपका मास्क हटा कर ये नली आपकी नाक में लगा दूँगी, आप लम्बी साँस लेते रहिएगा।''

री–सर्जरी वाले मरीज का नाम पता चल गया। उनका नाम डोरा सिंह है। डोरा सिंह जी का हाल तो ये के आप जो कहें वो सब मंजूर मोहतरमा।

डोरा सिंह जी को आक्सीजन ट्यूब लग गयी थी, और वो काफी सीधे होकर बैठे थे अब अपने बेड पर। वो कमरे में इधर उधर देख कर पहली बार कमरे का मुआयना कर रहे थे। जिसके लिए वो गर्दन कम आँखों का इस्तेमाल ज्यादा कर रहे थे। गर्दन का इस्तेमाल तो वो बस तब कर रहे थे जब वो नर्स कमरे में इधर उधर जाती थी, जिसकी बात वो सुनते थे। वो जैसे पूरी तरह से सम्मोहित थे उस नर्स से, जो उनका नया–नया खुदा थी। उन्हें जैसे बस उसी पर विश्वास था। सारी नर्सेस मिल कर आपस में आज कुछ खुसुर–पुसुर भी कर रही थीं। वो मुस्कुरा मुस्कुरा कर डोरा सिंह का नाम डोरिमोन रख चुकी थीं अपने आपस के कोड के लिए। डोरा सिंह जी न पानी माँग रहे थे मेरी तरह, न चाय। वो बस अभी ऐसे थे जैसे कोई सावधान की स्थिति में हो। वो सावधान की स्थिति में थे कि वो नर्स उन्हें कुछ कहे और वो वैसा ही कर दें। ये उनकी रिकवरी के लिए वरदान साबित होने वाला था। मैंने थोड़ी देर उन्हें ऑब्जर्व किया फिर आँखें बंद कर लीं। मेरे पेट में दर्द था। सर घूम रहा था। मैंने नर्स को बुला कर चेक करने को कहा और मेरा अनुमान सही था मुझे पीरियड शुरू हो गये थे। अभी दस दिन पहले ही पीरियड हुए थे इतनी जल्दी फिर से क्यों? मैंने सिस्टर से हेल्प माँगी पर मुझे पेड्स का अरेंजमेंट खुद ही करना था, सो उन्होंने मेरे अटेंडेंट्स तक मेसेज पहुँचा दिया। बहुत लम्बे इंतजार के बाद विवेक आया और पैकेट दे गया नर्स को। मैंने जब उस से पूछा कि चाचा क्यों नहीं आए? तो उस ने बताया वो घर पर हैं कुछ काम है ऑफिस का, तो अभी मैं ही था नीचे।

''आप कैसी हैं चाची जी?''

''ठीक हूँ।''

''क्या आपको दर्द है?''

''नहीं।''

मैं झूठ बोल रही थी। पर मुझे फर्क नहीं पड़ रहा था। विवेक ने कुछ और भी बातें की फिर वो चला गया। मैं तो पर बस इस सोच में थी कि बी वी घर क्यों

हैं। हालाकि मैं कल से उन्हें घर जाने को खुद ही कह रही थी और अब वो चले गये हैं तो मुझे अच्छा क्यों नहीं लग रहा है? ऐसा लग रहा है बस हो गया!! मैं यहाँ हूँ और वो घर जाकर बैठ गये। हो सकता है ऐसा ही हो पर फिलहाल तो मैं इस उम्मीद में थी कि अभी वो आएँगे तो मैं उन्हें बता पाऊँगी कि मुझे मेरे डॉक्टर ने कहा है कि मेरा कोई योगदान नहीं है मेरी रिकवरी में। मैं उन्हें बताना चाह रही थी कि डॉक्टर ने मुझे कोई कसा हुआ टॉप पहनने के लिए कहा है। हालाँकि मैंने विवेक को कह दिया है कि कल वो मेरे लिए कुछ टी शर्ट्स ले आएँगे घर से।

अचानक दरवाजे से डॉक्टर अमिता अंदर आती हैं। मेरे पास आकर मेरे हाथ पर हाथ रखती हैं।

''कैसी हैं आप पारुल जी?''

''आप का तो केस था न अभी डॉक्टर आप इस समय यहाँ कैसे?''

''हाँ पारुल जी केस चल रहा है सर हैं ओ टी में, मैं बस आपको देखने आ गयी। मुझे लगा आप परेशान होंगी।''

''मैंने क्या गलत किया डॉक्टर अमिता? जो डॉक्टर विकास सुबह ऐसे डाँट रहे थे, मैं पूरा समय मेहनत करती हूँ साँसें लेते रहने में।''

''आई नो पारुल जी। आप परेशान न हों वो असल में आपकी ब्रेस्ट काफी हेवी हैं न और उसके एक दम नीचे क्रीज पर ही वूंड है सो सर कह रहे थे टाइट कपड़ों के लिए। पर मैं समझती हूँ अभी आप ब्रा भी नहीं पहन सकती हैं, वो वूंड पर ही आएगी।''

''मेरी ब्रेस्ट हेवी है तो इस में मैं कुछ नहीं कर सकती न डॉक्टर।''

''आई नो पारुल जी, फैट लोगों की ये परेशानी कोई नहीं समझ सकता।''

मेरी आँखें भीग गयी थीं। डॉक्टर अमिता के हाथों की नरमी से पिघल कर वो सब आँखों से बहने को तैयार था, जो कह रहा था न मेरी ऑक्सीजन अभी हटी न मेरा वूंड सही हील कर रहा, न मेरे फेफड़े सही काम कर रहे क्योंकि मेरी ब्रेस्ट भारी हैं, सेगी हैं।

मेरा मन इस आखिरी बात को सबसे बड़ा इशू बना रहा था। कोई औरत नहीं पसंद करती कि उसकी शारीरिक बनावट को किसी भी संदर्भ में जज किया जाए। हरगिज पसंद नहीं उसकी चर्चा हो, पर आज चर्चा हुई आस–पास खड़े डॉक्टर्स, स्टाफ सब समझ ही रहे होंगे कि मेरे शरीर के किस हिस्से के बारे में बात की जा रही है।

ये कैसा समय है, ये कैसा शरीर है जिस में अभी मैं हूँ। ये न सही से काम कर रहा है, न इसका आकार सही है। एक सर्जरी नहीं झेल पा रहा, फिर से खड़ा नहीं हो पा रहा। बूढ़ा हो गया है, बदसूरत और है ऊपर से। मेरे फेफड़े खुद से साँस नहीं ले पाए तो मेरी किस्मत में और साँसें लिखी भी हों तो उन्हें कैसे लूँगी बगैर किसी मशीन के सहारे !

मुझे अचानक मनोज याद आ गया। ये जाते सत्तर और आते अस्सी के दशक की बात रही होगी। हम दोनों के परिवार एक ही मकान के दो हिस्सों में रहते थे उन दिनो। मेरे पापा डॉक्टर हैं और उस क़स्बे में प्राइवट प्रैक्टिस करते थे। मनोज के पापा सरकारी अस्पताल में नौकरी करते थे। तब तक हमारा छोटा भाई पैदा नहीं हुआ था मैं और मेरी छोटी बहन ही थी। मनोज की एक बड़ी बहन और बड़ा भाई था। हमारे परिवार आपस में बहुत घुलमिल कर रहते थे और मनोज की मम्मी मेरी मम्मी को छोटी बहन की तरह मानती थी। यहाँ तक कि हम दोनों बहनें मनोज और उसके बड़े भाई को ही राखी बाँधते थे और मनोज हमारे भाई हैं ये ही जानते थे। उस समय उस कस्बे में हमारे घर के अलावा एक और घर में टीवी था। इस लिए पूरा मोहल्ला क्या दूर–दूर से लोग हमारे घर टीवी देखने आते थे। हम इतवार को तो टी वी पर हिंदी फिल्म देखते ही थे। लगभग हर दूसरे तीसरे शुक्रवार भी मम्मी पापा के साथ मैं फिल्म देखने जाती थी। टीवी पर आने वाली फिल्मों का हम पर बहुत असर था हमें वो सब सच लगता था जो दिख रहा होता था। फिल्म देखने के बाद अगले दिन मैं और मनोज खेलते हुए भी फिल्म की बात करने लग जाते थे। हमारी नन्ही समझ की सबसे बड़ी परेशानी होती थी फिल्म के किसी द्रश्य खासकर आखिरी द्रश्य में जब कोई भी ऐक्टर मरते–मरते कुछ कहना चाहता था, तो या तो वो कह नहीं पाता था या रुक–रुक कर कहता था या कहने की कोशिश में साँसें रुक जाने पर कह नहीं पाता था।

मैं और मनोज उस समय बहुत विचलित हो जाते थे। और धीरे–धीरे हमें यकीन हो गया था कि मरते समय साँसें कम पड़ती ही पड़ती हैं। हर कोई ऐसे ही कुछ कहने की कोशिशों में मरता है। और कुछ कहने की इच्छा किए–किए मर जाता है। हम घंटों बैठ कर विचार किया करते थे। कभी सीढ़ियों पर पसरे रहते थे, तो कभी छत पर खड़ी चारपायी पर लटके हुए और कभी उसी चारपायी को घोड़ा समझ कर उस पर बैठे हुए। बहुत सोचने पर भी हम कोई हल खोज नहीं पाए थे कि मरते समय कम पड़ती साँसों को कम से कम उस समय तक कैसे रोका जा सकता है, जब तक जरूरी बात या राज मरने वाला न बता दे। हमें ये भी सबसे बड़ी फिक्र रहती थी कि जब हमारा मरने का वक्त आएगा तब हम दोनों क्या करेंगे।

हम दोनो की मम्मियाँ जब तब घर के काम करते करते आपस में बातें किया करती थीं। एक दिन वो दोनों बैठ कर सर्दियों की धूप में छत पर स्वेटर बनाते–बनाते बातें कर रही थीं, मनोज और मैं पास में बैठे होम वर्क कर रहे थे। बातों–बातों में मनोज की मम्मी ने कहा कि बोबों साँसें तो सबको गिनी हुई मिलती हैं। न एक कम न एक ज़्यादा। ये सुन हम दोनों के कान खड़े हो गये। हमने एक–दूसरे की आँखों में देखा और अपना बस्ता समेटा। क्योंकि एक बहुत बड़ा खुलासा हो गया था जिसकी वजह से हमारी सीक्रेट खोज पर बहुत बड़ा असर पड़ने वाला था। इस लिए आपातकालीन बैठक का बुलाया जाना अत्यन्त आवश्यक था। कहाँ तो हम मरते हुए व्यक्ति के साँसें बढ़ाने के तरीके की खोज कर रहे थे, कहाँ ये वज्रपात कि साँसें तो गिनी हुई मिलती हैं। हम दोनों ने जल्दी से अपने बस्ते अपने–अपने कमरों में पहुँचाए और पहुँच गये ऐसी बैठकों के लिए हमारी सबसे अच्छी जगह ऊपर वाली छत पर जाने वाली सीढ़ियों पर। हम दोनो ने बहुत सोच–विचार किया कि जब साँसें बढ़ा नहीं सकते तो क्या तरीक़ा अपनाया जाए कि साँसें कम न पड़ें मरते समय। मैंने मनोज से कहा यदि साँसें गिनी हुई मिलती हैं, तो हम थोड़ी थोड़ी देर साँस लेना बंद कर अपनी कुछ साँसे स्टोर कर सकते हैं। मनोज ने इसका विरोध किया। उसने कहा नहीं साँसें न लेने से तो हम अभी मर जाएँगे। ये भी सच था। खैर बहुत सोच–विचार के बाद ये तय पाया गया कि साँस रोक कर देख लेते हैं। अब साँस कौन रोके, मरने का डर भी था और कुछ हो जाए तो घरवालों की डाँट का भी डर था। मनोज मुझ से बड़ा था सो थोड़ा समझदार भी ज़्यादा था, उस

ने मुझे पहले साँसें रोकने के लिए मना लिया। अगले दिन स्कूल के बाद उन्ही सीढ़ियों पर साँस रोकने के काम को अंजाम दिया जाना था।

मनोज अपने बड़े भाई की बड़ी सी अलार्म घड़ी छुपा कर ले आया था जिस का चमकीला नीला डायल था और उसके दो पाँव भी थे, उसमें चाबी भर कर अलार्म लगा कर बड़े भैया पढ़ने के लिए उठते थे या कभी कभी सुबह खेतों में मेंढक पकड़ने जाते जुलॉजी प्रेक्टिकल के लिए अपने स्कूल के अध्यापक के कहने पर। उन दिनों ये आम बात थी विज्ञान को बहुत संजीदगी से अध्यापक पढ़ाते थे। और स्कूल इतने मेंढक मुहैया नहीं करा पाता था। हालाँकि जब हम बड़े हुए तब तक हालात बदल गये थे उसी स्कूल में मैंने हफ्ते के दो दिन के हिसाब से खूब मेंढक काटे थे वो भी स्कूल के खर्चे पर। खैर बातें साँसें रोकने की।

मैंने मनोज से पूछा ये घड़ी क्यों लाए हो, तो उसने कहा गिनूँगा तुम कितनी सेकेंड साँसें रोक सकती हो। ताकि पता चल जाए तुम्हें कितना समय मिलेगा मरते वक्त अपनी बात कहने का।

मैंने साँसें रोकने से पहले मनोज से पूछा– मैं मर गयी तो?

मनोज ने कहा– नहीं मरेगी। मैंने रात को मम्मी के पास सोते हुए साँस रोक कर देख लिया था। साँस फिर से आ जाती है। तू रोक साँस मैं गिनूँगा। मनोज पूरे होम वर्क के साथ आया था मुझे पर आजमाने से पहले वो खुद पर ये जोखिम उठा चुका था।

मुझे लगा मनोज कह रहा है नहीं मरूँगी तो पक्का नहीं मरूँगी। मैं उसे खुद से बहुत समझदार समझती थी।

और मैंने साँस लेना रोक लिया मनोज ने सेकेंड की सुई की टिक–टिक गिननी शुरू की। एक दो तीन चार पाँच ... मेरी पसलियों पर दबाव बढ़ता जा रहा था, फिर मेरे गले से लेकर छाती तक जैसे नलियाँ सी सिकुड़ रही थीं। मैं हिल रही थी, मेरा चेहरा गर्म हो रहा था, मनोज चिल्ला रहा था– छोड़ दे साँस, छोड़ दे साँस, पर मैं साँस लेने को तैयार न थी। मनोज ने घड़ी फेंकी और मेरी कमर में दो मुक्के जड़े जोर से। मुझे साँस आ गयी। मनोज चिल्ला रहा था कि मैंने साँस क्यों नहीं छोड़ी और मैं हँस रही थी कि मैं एक पूरा मिनट गिनवाना चाहती थी तुमसे, कि मेरे पास स्टॉक में काफी साँसें बच जाएँ।

वो मुझे 'तू उल्ली है तू उल्ली है' कह रहा था।

अब ये हमारा रोज का काम हो गया था होम वर्क निपटाने के बाद हम सीढ़ियों पर बैठ कर साँस रोकते दोनों। और एक दूसरे की रोकी साँसें गिन कर एक कापी के पीछे के पन्ने पर लिखते जाते।

एक हफ्ते में हमारे पास रोकी हुई साँसों के मिनटों की संख्या सम्माजनक स्थिति में पहुँच गयी थी। इस पूरे हफ्ते हम इस साँसें बचाओ अभियान के चलते नीचे बच्चों के साथ खेलने भी नहीं गये थे। मानवता के हित में इतिहास में दो नौनिहालों का इस से बड़ा क्या बलिदान होगा भला। जब हमें लगा हमारी गिनती की मिली हुई साँसों में से मरने के समय के लिए वक्त जरूरत काम पड़ने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में साँसें एकत्र हो गयी हैं, तो हमने इस ज्ञान गंगा को औरों में फैलाने का विचार बनाया, आखिरकार हर अविष्कार मानवता की भलाई के लिए ही होना चाहिए।

सीधे मम्मी पापा को इस अद्‌भुत अद्वितीय खोज को बताने जितना हौसला तो हम दोनों में ही नहीं था। तो हमने फिर से एक बैठक की जिस में हमने पाया कि बड़े भाई को बताने से भी डाँट पड़ेगी और मेरी छोटी बहन तो अभी हमारी बात समझने के लिए बहुत ही छोटी है, वो तो अभी बस बोलना चलना सीख रही है। तो बची पुष्पा दीदी, मनोज की बड़ी बहन। जो हम दोनों की हर बात मानती थीं कभी–कभी हमारे साथ खेलती भी थीं। और हमारी बातें सुन कर हँसती रहती थीं।

तो एक दिन उचित समय देख कर हम दोनों पुष्पा दीदी के पास जा बैठे, जब वो छत के एक कोने में बने चौके पर बैठ कर शाम की चाय के बर्तन साफ कर रही थीं, उन्होंने राख को जूने पर लपेट कर बर्तनों पर रगड़ते हुए ही हमें घूरा और गर्दन के इशारे से पूछा कि क्या चाहिए। मनोज ने पहले ही तय किया हुआ था मुझ से कि ये बात मैं दीदी से कहूँगी। मैं तो दीदी की साँसें बचाने के लिए पूरी उत्साहित थी और मैंने खट–खट अति उत्साह में उन्हें ये तरीका बता दिया कि अपनी साँसें स्टॉक करने के लिए उन्हें कैसे कुछ समय के लिए साँसें रोकनी हैं। बाकी गिनती कर के कापी में साँसों की संख्या दर्ज करने का काम हमारा। उन्होंने बारी–बारी से हम दोनों को घूरकर देखा। फिर कहा अभी मम्मी को बताऊँगी तुम दोनों ये क्या कर रहे हो, मर जाते हैं ऐसे। हमने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की कि हम बहुत से प्रयोग कर चुके हैं दीदी नहीं मरते। पर उन्होंने हमारी एक न मानी और जोर से मम्मी चिल्लाना शुरू किया। हमने उनकी खुशामदें की कि प्लीज मम्मी को नहीं बताएँ। हमने माफीनामे सहित ऐसा फिर कभी नहीं करने के वायदे के साथ अपनी जान छुड़ायी। मेरा चेहरा लाल पड़ गया था।

इस अपमानजनक हादसे से उबरने में मुझे कई दिन लगे। लेकिन मनोज को हमारी इस खोज में पूरा विश्वास था हमने नीचे खेलने जाने वाले एक दो दोस्तों से इस विषय पर बात की। जो कि सारे लड़के ही थे और मुख्यतः मनोज के ही दोस्त थे। मैं उन्हीं के साथ खेलती थी। एक तो लड़कियाँ उस समय अपने–अपने पिताओं या दादाओं की चाय लेकर उनकी दूकानों या व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर भेज दी जाती थीं। जो खिलौने मेरे पापा मुझे लाकर देते थे उनमें उनकी कोई रुचि नहीं थी। उनकी गुड़ियों से खेलना मुझे नहीं आता था, हालाँकि मैं खेलना चाहती थी पर मुझे कभी गुड़िया लाकर नहीं दी गयी। गाँव में रहने वा. ली मेरी सख्त मिजाज दादी का कहना था कि मैं गुड़िया से खेलूँगी तो अगला बच्चा भी लड़की ही होगा। हालाँकि मैं गुड़िया से नहीं खेली फिर भी मेरी बहन आ गयी मेरे बाद। मेरी बहन के पास एक गुड़िया थी जिसे मेरे भाई के आने के बाद एक दिन ये कह कर फेंक दिया गया था कि मेरी बहन का बुखार उस गुड़िया से ज्यादा जुड़ाव के कारण नहीं उतर रहा। खैर यहाँ ये साबित हुआ कि गुड़िया से खेलने न खेलने से मेरे बहन–भाई का जेंडर डिसाइड नहीं हुआ। इस कारण से हालाँकि मेरे पापा इतेफाक नहीं रखते थे, पर मम्मी दादी को कुछ कहने नहीं देती थीं। वो दादी के हिसाब से चलती थीं। मुझे याद है दादी जब हमारे घर आती थीं तो रोटी बना कर मम्मी उस पर घी नहीं लगती थीं। न दूध उबालना, न दूध रात को

सबको बाँटना, ये सब काम दादी करती थीं क्योंकि दूध–घी जिसके हाथ में हो उसका आधिपत्य घरों में माना जाता था और घर की सबसे बड़ी महिला को सम्मान देने के लिए भी ये किया जाता था। पुरुषों के हाथों से कारोबार और महिलाओं के हाथों से दूध–घी जब

अगली पीढ़ी के कब्जे में चला जाता था तो मानों उनका दौर खत्म। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गाँवों की तो ये ही परम्परा थी जो अभी भी कहीं न कहीं जमी हुई है।

बात हमारे साँसों के खेल की हो रही थी। तो एक दिन तो हमारे सभी दोस्तों ने खेल–खेल में अपनी साँस रोक ली कि कौन कितनी देर रोकता है। पर फिर किसी ने भी इस खेल में रुचि नहीं दिखायी। उस उम्र में जब रोचक और कुछ नया खेल ही बच्चों के चंचल मन को बाँध पता है और वो रोज एक नया खेल एक दूसरे को सुझाते हैं। हमारा ये खेल सुपर फ्लाप हो गया। मगर मनोज ने हिम्मत नहीं हारी उसे अपनी खोज पर पूरा विश्वास था। अब एक दिन सीढ़ियों पर बैठे–बैठे उसने तय किया कि मरने के समय काम आने वाली साँसें तो हमारे पास पूरी हो गयी हैं, पर अब हम अपनी उमर बढ़ाने के लिए साँसें रोकेंगे। वो कापी पेंसिल ले आया और मुझे साँस लेकर हर बार गिनती बोलते जाने को कहा, जितनी बार साँस लूँ। मैंने वैसा ही किया। उसने एक सेकेंड तक घड़ी में देख कर मुझे रोक दिया और कहा– देख एक मिनट की बाईस साँसें हुई मान लो तो, एक मिनट में हो गये साठ सेकेंड और साठ मिनट का एक घंटा और एक दिन में होते हैं चौबीस घंटे तो एक घंटे में साठ मिनट तो चौबीस घंटे में साठ गुणा चौबीस बटे एक यानी चौदह सौ चालीस मिनट और चौदह सौ चालीस मिनट में सेकंड हुए चौदह सौ चालीस गुणा साठ– छियासी हजार चार सौ सेकेंड। उस ने फिर अपनी कापी पर कुछ और गुणा भाग किया जो इस पहले वाले की ही तरह मुझे नहीं समझ आया पर मैं मुंडी बाकायदा हाँ में हिलाए जा रही थी जैसे दिखा रही थी कि मैं पूरी तरह से बराबर की भागीदार हूँ इस मिशन में। हालाँकि मैं थी नहीं अब ये प्रोजेक्ट पूरी तरह मनोज के हाथ में था और मैं बस गिनीपिग थी।

पर ये शायद मेरी बचपन की आदत है न समझ आने पर भी समझने के अभिनय में गर्दन हिलते जाना। न ही मुझे गणित की वो गणनाएँ वो किस आधार पर कर रहा है ये ही समझ आ रहा था। मेरा गणित तब भी अच्छा नहीं था बस नम्बर इस लिए अच्छे आ जाते थे, जो सवाल पापा जैसे पढ़ाते थे, मैं वैसे ही उन्हें अच्छे से करना सीख लेती थी। और दसवीं तक मैंने बहुत अच्छे मार्क्स के साथ गणित निभाया। पर जैसे मनोज इस समय गणित से खेल रहा था ये मेरे बस की बात नहीं थी। मुझे उस वक्त भी इस बात के लिए मनोज से जलन थी अभी भी है। ये शायद उस प्रतिद्वंद्विता से शुरू हुआ था जो हम दोनों के घर वाले हमारे परीक्षा के मार्क्स की तुलना कर के पैदा कर रहे थे। ये प्रतिद्वंद्विता मुझ में आज भी है अपनी भरसक कोशिशों के बाद भी, और मनोज से ही नहीं हर किसी से हो जाती है, पर केवल पढ़ाई–लिखाई की बात के लिए। काश कुछ और बातों के लिए भी मैं इस प्रतिद्वंद्वी प्रकृति की होती, जैसे लेखन। मैं हमेशा कक्षा में नम्बर दो ही आती रही और मनोज नम्बर एक पर रहा। उसने मुझे कभी नम्बर एक का स्वाद नहीं चखने दिया पर मैंने भी कभी किसी और को नम्बर दो के आस–पास नहीं फटकने दिया पूरी क्लास हम दोनों से काफी नीचे रहती थी। हालाँकि पाँचवी कक्षा के बाद मैं गर्ल्ज स्कूल में गयी, जहाँ मेरी ही क्लास की एकमात्र लड़की और मेरी दोस्त की मम्मी हम दोनों को टीचर के रूप में मिलीं। वहाँ चाहे एक नम्बर से ही सही पर मेरी उस दोस्त को क्लास में अव्वल रखा जाता, इस तरह बाकी अध्यापिकाएँ अपनी लॉयल्टी मेरी दोस्त की मम्मी के प्रति दिखाती हों, या मैं सच में ही हमेशा सेकेंड के लायक ही थी। मैं आज इस बात को क्यों मानूँगी अपने अतीत में हम सब खुद को श्रेष्ठ और शोषित ही घोषित करते हैं। पर आप ही बताइए गणित के एक सवाल के पूरी तरह सही होने पर भी मेरे निन्यानवे और मेरी उस दोस्त के सौ नम्बर क्यों आए थे, फिर क्या गणित में भी राइटिंग के नम्बर काटते हैं जैसा कि मुझे हमेशा कहा जाता था।

हाँ एक बार गणित में मेरे मार्क्स पूरी क्लास में ज्यादा आए थे, वो हुआ यूँ कि लाभ हानि का एक सवाल मुझे जैसे पापा ने समझाया मैंने परीक्षा में वैसे ही किया और पूरी क्लास के साथ मनोज ने भी वैसे जैसे अध्यापक ने बताया था। जब पापा मुझे पढ़ा रहे थे तो मैंने पापा से कहा भी था कि पापा आचार्य जी ने तो ऐसे बताया है पर उन्होंने कहा कि नहीं ये ही सही तरीका है। इत्तेफाक से अगले दिन परीक्षा में वो ही सवाल आ गया। मैं तब भी अपने पापा की बात ही सारी दुनिया से सही मानती थी आज भी मानती हूँ। सो कापी की जाँच हुई तो मेरा उस सवाल में मार्क्स जीरो और बाकी क्लास को पूरे मार्क्स। जब घर लाकर पापा को कापी दिखायी तो उन्होंने अगले दिन स्कूल जाकर टीचर से बात की और प्रिंसिपल के दखल पर टीचर ने अपनी गलती मानते हुए मुझे पूरे मार्क्स दिए। इस तरह पाँचवी क्लास का ये एक तमगा मेरे अँधेरों की उन सोचों का सहारा आज भी है, जब भी पढ़ाई–लिखाई में कोई मुझ से कैसे आगे निकल गया की सोचों में गुम हो जाती हूँ।

अब तक मनोज ने हिसाब लगा लिया था कि अगर हम रोज दो मिनट भी साँस रोक लें तो छियासी हजार चार सौ गुणा बाईस बटे साठ यानि इकत्तीस हजार छह सौ अस्सी। तो एक दिन की इन साँसों में से हम रोज अठासी साँसें भी रोकें तो हमारी जिंदगी रोज दो मिनट बढ़ जाएगी। अब रोज दो मिनट जिंदगी बढ़ाने के लिए हम रोज सीढ़ियों पर साँसें रोकते थे। इस में एक दूसरे से ज़्यादा देर तक साँस रोकने की प्रतिद्वंद्विता ने इस खेल को मजेदार बना दिया था। बस पुष्पा दीदी से बच कर हमें ये सब करना होता था। वो ही उम्र बढ़ाने के हमारे मिशन की सबसे बड़ी खलनायिका थीं।

साँसें रोकने की ये आदत अनजाने में ही पढ़ाई के आगे के सालों में मेरी तो चलती रही, मनोज का मुझे नहीं मालूम। फिर कुछ दिनों बाद ही हम दोनों किराये के उस घर से अप. ने–अपने नए बने घरों में रहने चले गये थे। इसीलिए शायद स्विमिंग करते हुए मैं पानी के अंदर देर तक रह लेती थी। पर आज आज यहाँ इस आई.सी.यू. में मैं मनोज से पूछना चाहती हूँ कि मेरी उमर कितनी बँधी थी? कितनी साँसें हैं मेरे पास और? और जो हैं उन्हें कैसे लूँ, मुझे तो साँस ही सही नहीं आ रही मनोज। क्या हो गया था मेरे फेफड़ों को जो अस्सी सेकेंड तक भी साँसें रोक लेते थे, आज उन्हें साँस के लाले पड़े थे।

❑❑

प्रीती श्रीनिवासनः एक सशक्त दिव्यांग

गरिमा भाटी "गौरी"
स्वतंत्र लेखिका एवं सहायक आचार्या
Garimabhati24@gmail-com

भूमिका – कुछ करने के लिए इंसान की शारीरिक क्षमता की नहीं बल्कि उसके मजबूत इरादे की जरूरत होती है। दिव्यांगता भी महज एक ऐसी ही दिमागी उपज है, जिससे लड़ती हुई कई महिलाएं अपनी दृढ़ इच्छा– शक्ति से साबित कर चुकी हैं कि उन्होंने अप. नी दिव्यांगता को खुद पर हावी होकर अपनी राह में रोड़ा नहीं बनने दिया। उन्होंने खुद को इतना हिम्मती बनाया कि वे किसी भी चीज से पीछे नहीं हटीं और सभी चुनौतियों को हंसकर स्वीकार कर आगे बढ़ती चली गईं। वैसी ही अदम्य जिजीविषा, कठोर इच्छा शक्ति से परिपूर्ण स्त्री हैं, तैराकी की राष्ट्रीय चैंपियन, 'सोलफ्री' की फाउंडर एवं अंडर–19 तमिलनाडु महिला क्रिकेट टीम की कैप्टन रहीं प्रीति श्रीनिवासन।वह एक खिताब धारक तैराक भी थीं, उन्होंने 50 मीटर ब्रे. स्टस्ट्रोक में राज्य स्वर्ण और अन्य स्पध ाओं में रजत पदक जीता था। एक दुघ टना में वह जीवित तो बच गईं लेकिन क्वाड्रिप्लेजिक लेकिन से ग्रसित हो गईं। उनका सर से निचे का शरीर पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो गया और इसके बाद वह हिलने डुलने में भी असमर्थ हो गईं। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपनी शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों के बावजूद उन्होंने सोलफ्री की स्थापना की , एक संस्था जो रीढ़ की हड्डी की चोटों से पीड़ित लोगों को बहाल करने, पुनर्वास करने और फिर से एकीकृत करने का काम करता है और आज वह भारतीय युवाओं के बीच इसकी रोकथाम के बारे में जागरूक भी कर रही हैं। और विकलांगता के मुद्दों पर भी जागरूकता फैला रही हैं।

जीवन परिचय – प्रीति श्रीनिवासन का जन्म 5 सितंबर 1979 को चेन्नई में हुआ था।वह अपने माता–पिता की बहुत प्यारी संतान थी क्योंकि उनका जन्म उनके माता–पिता की शादी के नौ साल बाद हुआ था।प्रीति श्रीनिवासन के पिता, स्वर्गीय एन. श्रीनिवासन एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थे और उनकी माँ विजयल क्ष्मी श्रीनिवासन एक गृहणी थीं। चूंकि एन श्रीनिवासन का बार–बार स्थ. ानांतरण होता रहता था, इसलिए प्रीति श्रीनिवासन को भी तीन अलग–अलग महाद्वीपों में कई स्कूल बदलने पड़े।उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा चेन्नई, विशाखापत्तनम, मुंबई, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विभिन्न स्थानों के कुल नौ स्कूलों से की।

प्रीति ने 1997 में अपर मेरियन एरिया हाई स्कूल , पेनसिल्वेनिया , यूएसए से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उन्हें अन्य सम्मानों के साथ–साथ वर्ष 1996/97 के लिए शिक्षाविदों में उत्कृष्ट उपलब्धि और उत्कृष्टता के लिए अकादमिक सम्मान से सम्मानित किया गया। कक्षा 12 में, वह संयुक्त राज्य अमेरिका के शीर्ष 2 प्रतिशत मेरिट वाले छात्रों में से एक थी और उसे अमेरिकी हाई स्कूल के छात्रों के बीच सम्मानित किया गया था।अपने पिता की स्थानांतरणीय नौकरी के कारण, प्रीति को बड़े पैमाने पर यात्रा करने और विभिन्न संस्कृतियों/परंपराओं के बारे में जानने का अवसर मिला।

3 साल की उम्र में, एन. श्रीनिवासन ने उन्हें तैराकी से परिचित कराया।बाद में, प्रीति श्रीनिवासन 8 साल की उम्र में राष्ट्रीय स्तर की तैराक बन गईं और बाद में 50 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में स्वर्ण और अन्य स्पर्धाओं में कई रजत जीते। 4 साल की उम्र में, प्रीति श्रीनिवासन 1983 क्रिकेट विश्व कप में विव रिचर्ड्स की बहुत बड़ी प्रशंसक बन गईं और उनमें क्रिकेट के प्रति जुनून पैदा हो गया।जल्द ही, उन्होंने क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया और क्रिकेट कोचिंग भी प्राप्त करना शुरू कर दिया। 8 साल की उम्र में, प्रीति श्रीनिवासन प्लेइंग इलेवन – तमिलनाडु महिला क्रिकेट टीम में खेलने वाली सबसे कम उम्र की क्रिकेटर थीं।उस दौरान वह एक अच्छी फील्डर और गेंदबाज तो थीं लेकिन अपने छोटे कद के कारण अच्छी बल्लेबाज नहीं थीं।1997 में, 17 साल की उम्र में, प्रीति श्रीनिवासन ने तमिलनाडु अंडर–19 महिला टीम की कप्तानी की और अपनी टीम को राष्ट्रीय टूर्नामेंट में जीत दिलाई।वह सबसे ज्यादा रन बनाने वाली और विकेट लेने वाली खिलाड़ियों में से एक थीं।18 साल की उम्र में, प्रीति श्रीनिवासन को दक्षिण क्षेत्र की महिला क्रिकेट टीम में चुना गया और उम्मीद थी कि वह एक या दो साल में भारत के लिए खेलेंगी।एक अच्छी खिलाड़ी होने के साथ–साथ प्रीति श्रीनिवासन एक मेधावी छात्रा भी थीं।1997 में अपर मेरियन एरिया हाई स्कूल से विशिष्ट सम्मान के साथ अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्हें "द हूज हू अमंग अमेरिकाज स्टूडेंट्स" में सूचीबद्ध किया गया था क्योंकि वह अमेरिका के शीर्ष 2 प्रतिशत मेरिट वाले छात्रों में से एक थीं।अपनी उपलब्धि की बदौलत, प्रीति श्रीनिवासन आसानी से अपनी पसंद के किसी भी आइवी लीग स्कूल में दाखिला ले सकती थीं, लेकिन उन्होंने क्रिकेट में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए भारत लौटने का फैसला किया।भारत लौटने के बाद वह तमिलनाडु अंडर–19 महिला टीम की कप्तान बनीं।अपनी दुर्घटना के बाद, उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से मेडिकल समाजशास्त्र में स्नातक पत्राचार पाठ्यक्रम लिया । वह संगीत, कला, फिल्म और साहित्य में भी रुचि रखती हैं।

दिव्यांगता – लगभग दो दशक पहले 11 जुलाई 1998 को, प्रीति श्रीनिवासन अपने दोस्तों के साथ पांडिचेरी समुद्र तट पर कॉलेज भ्रमण पर गईं। दोपहर में, वह और उसकी सहेलियाँ ढाई फीट गहरे पानी में खेल रही थीं और अचानक पीछे की ओर आती लहर के कारण उसके पैरों के नीचे की रेत बह गई और वह अपना चेहरा आगे करके गिर गई और उसकी गर्दन टूट गई।उस दौरान प्रीति श्रीनिवासन को सी4 और सी5 रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी। उसे अपने शरीर में एक झटके जैसी अनुभूति महसूस हुई और बहुत कोशिश करने के बाद भी वह खड़ी नहीं हो सकी।उसके दोस्तों ने उसे पानी से बाहर निकाला। प्रीति श्रीनिवासन न तो किसी कठोर सतह जैसे चट्टान या समुद्र तल से टकराईं और न ही उनका खून बहा, लेकिन उन्हें रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट लगी और दुर्भाग्यवश, उनकी गर्दन के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया और उस समय वह केवल 18 वर्ष की

थीं।उस हादसे के बाद एक कॉलेज में उन्हें इसलिए एडमिशन नहीं मिला क्योंकि वह तीसरी मंजिल पर था। तब प्रीती की मां ने उनका हौसला बरकरार रखा और अपने ही जैसे स्पाइनल कॉर्ड से दिव्यांग लोगों की मदद करने का आइडिया दिया। उसके बाद नए संकल्प के साथ 'सोलफ्री' का जन्म हुआ, जो हालात से जूझने के लिए अब आम लोगों को प्रेरित करती हैं। आज वह खास तौर से दिव्यांग लड़कियों की प्रेरणा स्रोत हैं।

दिव्यांगता के साथ प्रारंभिक संघर्ष– वह चार वर्ष की उम्र से ही क्रिकेट खेलने लगी थीं। सैकड़ों लड़कों के बीच वह अकेली ऐसी लड़की रही हैं, जो आठ साल की उम्र से ही क्रिकेट क्लब में कोचिंग लेती थी। उन्होंने 18 वर्ष की उम्र में स्टेट लेबल की टीम में खेलकर एक ऐसा रिकॉर्ड कायम किया, जो आज तक नहीं टूटा है। चौपियन की तरह जीने वाली प्रीती से सबकुछ छिन गया। उनके सारे दोस्त उनसे बिछड़ गए. एक कॉलेज में उन्हें इसलिए दाखिला नहीं मिल पाया क्योंकि वह तीसरी मंजिल पर जाने में असमर्थ थीं। इस चोट ने उसके सारे पिछले सपने चकनाचूर कर दिये।अब, प्रीति श्रीनिवासन न तो क्रिकेट में भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती थीं और न ही अपनी शिक्षा जारी रख सकती थीं। चूंकि पहले वह शिक्षा और खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करती थीं, इसलिए उन्हें एक रोल मॉडल के रूप में देखा जाता था, लेकिन इस दुर्घटना के कारण लोगों को उन पर दया आने लगी, जो उन्हें पसंद नहीं आया।

प्रीति श्रीनिवासन उदास हो गईं और उन्हें घबराहट के दौरे आने लगे और लोगों की नजर पड़ने पर उन्हें सांस लेने में कठिनाई होने लगी।उसे गंभीर ऐंठन का सामना करना पड़ा और उसे मृत्यु के निकट के कुछ अनुभव भी हुए।इसलिए, प्रीति श्रीनिवासन पूरे दो साल तक अपने घर से बाहर नहीं निकलीं।शुक्र है कि प्रीति श्रीनिवासन के माता–पिता दोनों ने दुर्घटना के बाद भी उससे बिना शर्त प्यार किया और इससे वह ठीक हो गई।उनके पिता ने उसकी मानसिकता को यह सोचने से बदलने में मदद की कि उसे क्यों कष्ट सहना पड़ता है और इस अवसर का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए वह क्या कर सकती है।और प्रीति श्रीनिवासन ने आत्मनिरीक्षण करना शुरू कर दिया और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए माउथ पेंटिंग का एक नया शौक विकसित किया।

इस शौक और आध्यात्मिकता की बदौलत वह अपने बारे में दुख की भावना से पूरी तरह उबर गई।उस दौरान, प्रीति श्रीनिवासन और उनका परिवार तमिलनाडु के तिरुवन्नमलाई में स्थानांतरित हो गए और वर्तमान में, वह इसी शहर में रहती हैं।बाद में, 2001 के आसपास, प्रीति श्रीनिवासन मनोविज्ञान में बी.एससी की पढ़ाई करना चाहती थीं, लेकिन कॉलेज अधिकारियों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया, जिसमें उनके लिए लिफ्ट और रैंप न होने का कारण बताया गया।उनकी दृढ़ता के कारण, 2010 में वह मेडिकल समाजशास्त्र में बैचलर ऑफ साइंस (बीएस) की पढ़ाई के लिए मद्रास विश्वविद्यालय में दाखिला लेने में सक्षम हो गईं और 2013 में उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की।बाद में, प्रीति श्रीनिवासन को भी इसी तरह के इनकार का सामना करना पड़ा जब वह एमएससी मनोविज्ञान करना चाहती थीं लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और मद्रास विश्वविद्यालय से एम एस सी मनोविज्ञान की पढ़ाई की।2018 में, उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास से ए ग्रेड के साथ डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त

टर्निंग प्वाइंट– 2007 में प्रीति श्रीनिवासन के पिता का 57 साल की उम्र में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। ठीक चार दिन बाद उनकी मां को भी दिल का दौरा पड़ा और पता चला कि उन्हें दिल की समस्या है। बाद में, जब उनकी मां की बाईपास सर्जरी हुई, तो प्रीति श्रीनिवासन मुख्य निर्णय निर्माता बन गईं।इससे उसकी दुनिया हिल गई और उसे एहसास हुआ कि उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था और उनके पास आय का कोई स्रोत नहीं था। इसलिए, प्रीति श्रीनिवासन ने स्पीच रिकग्निशन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके मूवीबफ के लिए पूर्णकालिक लेखक के रूप में काम करना शुरू कर दिया ।इस नौकरी की बदौलत वह अपने परिवार का भरण–पोषण करने में सक्षम थी। अपने पिता के निधन के बाद और जब उनकी माँ भी बीमार पड़ गईं, तो प्रीति श्रीनिवासन और उनकी माँ ने उनके रहने के लिए पुनर्वास केंद्रों की खोज शुरू कर दी।लेकिन उन्हें यह जानकर निराशा हुई कि भारत में केवल कुछ ही पुनर्वास केंद्र थे।फिर, उनकी मां ने प्रीति श्रीनिवासन को अपने दम पर एक पुनर्वास केंद्र शुरू करने का सुझाव दिया।लेकिन चूँकि वह अपने बारे में आश्वस्त नहीं थी, इसलिए उसने शुरुआत नहीं की। प्रीति श्रीनिवासन को यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तीन महीने के भीतर, तिरुवन्नामलाई में दो लकवा पीड़ित लड़कियों को उनके ही परिवार के सदस्यों ने आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया।

इन घटनाओं की बदौलत उन्हें पैराप्लेजिक्स की दुर्दशा का एहसास हुआ।इसलिए, प्रीति श्रीनिवासन ने गंभीर विकलांगता से पीड़ित लोगों की मदद के लिए अपनी मां की मदद से एक सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट शुरू करने का फैसला किया।यह ट्रस्ट 7 सितंबर 2013 को लॉन्च किया गया था और तिरुवन्नामलाई में स्थित है।सोलफ्री रीढ़ की हड्डी की चोटों के बारे में जागरूकता पैदा करने और प्रभावित लोगों को आजीविका प्रदान करने के लिए काम करता है। वर्तमान में, सोलफ्री एक हजार से अधिक लोगों और परिवारों का समर्थन कर रहा है। पांच साल की अवधि के भीतर, प्रीति श्रीनिवासन अपने ट्रस्ट के माध्यम से लोगों को सैकड़ों व्हीलचेयर और मासिक वजीफा प्रदान करने में सक्षम हुई हैं। वह एक विकलांगता–अधिकार कार्यकर्ता भी हैं।

प्रारंभ में, प्रीति श्रीनिवासन अपने शहर में विदेशियों को अंग्रेजी और तमिल बोलना सिखा रही थीं, लेकिन जल्द ही, उन्हें स्कूलों, कॉलेजों और कंपनियों में प्रेरक भाषण देने के लिए निमंत्रण मिलने लगे।उन्होंने गोल्डमैन, माइंडट्री और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज जैसे कई संगठनों और कई शैक्षणिक संस्थानों में भी बात की।

उपलब्धियां– प्रीति ने 1997 में अपर मेरियन एरिया हाई स्कूल , पेनसिल्वेनिया , यू एस ए से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उन्हें अन्य सम्मानों के साथ–साथ वर्ष 1996/97 के लिए शिक्षाविदों में उत्कृष्ट उपलब्धि और उत्कृष्टता के लिए अकादमिक सम्मान से सम्मानित किया गया। कक्षा 12 में, वह संयुक्त राज्य अमेरिका के शीर्ष 2 प्रतिशत मेरिट वाले छात्रों में से एक थी और उसे अमेरिकी हाई स्कूल के छात्रों

के बीच हूज हू के साथ प्रतिनिधित्व से सम्मानित किया गया था।अपने पिता की स्थानांतरणीय नौकरी के कारण, प्रीति को बड़े पैमाने पर यात्रा करने और विभिन्न संस्कृतियोंध्परंपराओं के बारे में जानने का अवसर मिला।अपनी दुर्घटना के बाद, उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से मेडिकल समाजशास्त्र में स्नातक पत्राचार पाठ्यक्रम लिया । वह संगीत, कला, फिल्म और साहित्य में भी रुचि र खती हैं। वह अपनी मां, श्रीमती विजयल क्ष्मी श्रीनिवासन को प्रोत्साहन और समर्थन का निरंतर स्रोत मानती हैं।प्रीति के धर्मार्थ संगठन, सोलफ्री की स्थापना ''विकलांग व्यक्तियों के जीवन को बदलने'' के उद्देश्य से की गई थी। वह बताती हैं कि तमिलनाडु के व्हीलचेयर रेसिंग चैंपियन मनोज कुमार को जब राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर की चौंपियनशिप के लिए विशेष पैरालंपिक व्हीलचेयर की जरूरत पड़ी तो सोलफ्री ने उनका साथ दिया और टूर्नामेंट में उनको गोल्ड मेडल मिला।

- रेनड्रॉप्स का ''वूमन अचीवर ऑफ द ईयर 2014'' पुरस्कार
- विजय टीवी का ''सिगाराम थोट्टा पेंगल – रे ऑफ होप'' पुरस्कार
- वर्ष 2014 के लिए तमिलनाडु की शीर्ष 10 सबसे प्रभावशाली महिलाओं को फेमिना ''पेन शक्ति'' पुरस्कार प्रदान किया गया।
- परिकल्पना क्षमता पुरस्कार (2014)
- सामाजिक कार्यों में उत्कृष्टता के लिए सुदेसी पत्रिका का ''ध्रुव पुरस्कार''।
- रोटरी का सर्वोच्च पुरस्कार ''सम्मान की खातिर''
- वर्ष 2014–15 के लिए डिस्ट्रिक्ट रो. टारैक्ट काउंसिल (रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3230) से एजेंट ऑफ चेंज'' पुरस्कार
- तमिलनाडु के मुख्यमंत्री द्वारा कल्पना चावला पुरस्कार
- फेमिना पेन शक्ति पुरस्कार
- /रुव पुरस्कार
- परिवर्तन के एजेंट पुरस्कार
- कर्मवीर चक्र पुरस्कार।

सारांश– एक हादसे में गले से नीचे तक पूरी तरह लकवाग्रस्त हो जाने के बावजूद दिव्यांगों को राह दिखाने वाली 'सोलफ्री' फाउंडर प्रीति श्रीनिवासन अब रिहैबीलिटेशन सेंटर खोलने की कोशिश में हैं। तैराकी की राष्ट्रीय चौंपियन एवं अंडर–19 महिला क्रिकेट टीम की कैप्टन रहीं। हालाँकि प्रीति श्रीनिवासन एक दुर्घटना का शिकार हो गईं और लकवे की एक गंभीर बीमारी से पीड़ित हो गईं । फिर भी वे हतोत्स. ाहित नहीं हुईं या उन्होंने अपना काम बंद नहीं किया और इसके बजाय उन्हें अपनी मां से प्रेरणा मिली। उस डरावने हादसे के बाद जब उन्होंने वास्तव में खुद को महसूस किया, तो सारे डर धीरे–धीरे खत्म हो गए। वह बिस्तर से दोबारा उठीं, ताकि अपने जैसी दूसरी महिलाओं का हौसला आफजाई कर सकें। दिव्यांगों और खिलाड़ियों की मदद के लिए ही उन्होंने स्वयंसेवी 'सोलफ्री' का गठन किया। और रीढ़ की हड्डी की चोटों से हतोत्स. ाहित लोगों को प्रेरित किया। दुर्भाग्य के एक क्षण ने उसके जीवन को उलट–पुलट कर दिया। एक सेकंड के अंतराल में अपनी पहचान पूरी तरह से खो दी इसमें एक और दशक लग गया, लेकिन रेशमकीट को एक शानदार तितली में बदलने में समय लगता है – और प्रीति के साथ भी यही स्थिति थी। ग्रेस और उसके माता–पिता की मदद से, प्रीति को आध्यात्मिक जागृति मिली! वह संतुलन की ऐसी स्थिति में पहुँच गई जो उसे दिल दहला देने वाली परिस्थितियों के बावजूद मुस्कुराने की अनुमति देती है। प्रीति अदम्य जिजी. विषा की दुर्लभ मिसाल हैं।

प्रीती कहती हैं कि ''हम जो नहीं कर सकते उससे आगे बढ़ें और उन सभी चीजों पर ध्यान केंद्रित करें जो हम कर सकते हैं''

उनकी अपनी शारीरिक और मानसिक पीड़ाएँ थीं। लेकिन उनके बारे में शोक मनाने के बजाय, उसने इनसे सबक लेने और समान या बदतर दुर्दशा वाले अन्य लोगों तक पहुंचने का फैसला किया। प्रीति श्रीनिवासन क्वाड्रिप्लेजिक से पीड़ित हैं, लेकिन यही बात उन्हें परिभाषित नहीं करती। वह गंभीर विकलांगता वाले अन्य लोगों को सम्मान के साथ अपने पैरों पर खड़े होने में मदद करने की योजना बनाती है और उसे साकार करती है। अपनी विकलांगता के बाद हजारों लोगों को प्रेरणा दे रही हैं!

❑❑

उत्तरा शर्मा
अम्बाला (हरियाणा)

बालिका वधू

जब मेरी शादी हुई मेरी उम्र मात्र 13वर्ष थी। मुझे बहुत धक्का लगा जब मुझे आगे पढ़ने से मना कर दिया। लेकिन मेरे ससुराल वाले बहुत ही अच्छे थे। मुझे मेरी जेठानी जी ने कहा तुम द ार से बाहर जाओ तो वह खूंटी से घाघ ारा उतार कर कहती ये तेरा है। माँ जी(सासू जी) ने कहा था ये मेरी छोटी बहु का है। तुने जब भी बाहर जाना है तो ये पहन कर जाना है। मैने कहा मुझे तो डालना नहीं आता। जेठानी जी ने डालकर दिखाया। फिर मैने डाल लिया। दादा खेड़ा पूजने जाना था। थाली तैयार करली मीठे चावल दीपक कच्चे चावल धूप फूल कच्ची लस्सी ले ली फिर मुझे दादा खेड़ा पर पूजा करने ले जाया गया। बड़ा सा घूंघट निकाल कर। मॅं पीछे चल रही थी। आगे मेरी जेठानी जी आगे चल रही थी। रास्ते में औरतें कहती रुकना जरा मैं बहु का मु खड़ा देख लूं रोक कर घुंघट उठा कर मुंह देख कर हाथ में मुंह दिखाई खोपरा मोली सो रुपये चार लड्डू एक कपड़े में बांध कर मेरे पल्ले में डाल दिये। पूजा करके घर आ गये। जेठ जी ने पूछा बहु ने खाना खा लिया? जेठानी जी बोली बहु तो रोटी नहीं खाती। जेठानी जी एक मटकी चोड़े मुंह वाली मेरे पास लेकर आई लो उत्तरा इसमें से मिठाई खा ले।

एक प्लेट मेरे आगे रख दी। पंद्रह दिन से मैंने नाश्ता नहीं किया था। मैंने शक्कर पारे जलेबी खाई। गर्म चाय के साथ। बहुत स्वादिष्ट लगी। करवा चौथ का व्रत आ गया। मेरे पति देव बोले आज मैं आपके हाथ में मैंहदी लगाऊंगा। उन्होंने मेरे हाथ में मैंहदी लगाई। मैंने देखा बहुत सुंदर दिल के आकार की बहुत सुंदर मैंहदी लगाई।

❑❑

आध्यात्मिक अनुसंधान

डॉ. अजय शुक्ल

“ आध्यात्मिक अनुसंधान में सत्य दर्शन का रहस्योद्‌घाटन प्रामाणिक स्वरूप से होने के कारण , साधना के पथ पर गतिशील साधक के लिए - आत्मानंद के सानिध्य में परिष्कृत आत्मचिंतन द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति का विशिष्ट रूप से प्रेरणा दाई आधार बनता है जिससे आत्मिक आश्रय से मौन साधना का मार्ग स्वमेव ही प्रशस्त होता है । आध्यात्मिक परिदृश्य की समग्रता में आत्मिक अध्ययन एवं पुरुषार्थ अनुसंधान की व्यापक परिधि , शैक्षणिक प्रशिक्षण द्वारा आत्म दर्शन को सुनिश्चित कर देती है जिससे पारदर्शी जीवन तथा यथार्थवादी स्वरूप का सामाजिक परिदृश्य मंगलकारी रूप में प्रखरता से मुखरित हो जाता है ।

स्वयं को सदा निमित्त , निर्माण और निर्मल स्वरूप में स्थापित करते हुए -लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक सत्ता के प्रति - श्रद्धा , आस्था तथा मान्यता के साथ उपदेश के अनुपालन में आज्ञाकारिता एवं धर्मगत आदेश को आत्मसात करके ईश्वरी तत्वबोध तथा निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है । जीवन में उच्चतम स्थितियों से महानतम अवस्थाकी प्राप्ति धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारित होती है जिसके परिष्कार हेतु महानजीवन की स्थापना एवंपवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साधने केलिए आध्यात्मिक परिदृश्य में उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलितार्थ द्वारा सुनिश्चितहोता है ।

मूल्यगत आचरण के आचार्य की धारणात्मक श्रेष्ठता के प्रति - श्रद्धा , आस्था एवं मान्यताकीनैसर्गिक पक्षधरता सदा मानव जाति को - ‘ मातृ देवोभवः , पितृ देवो भवः , आचार्य देवो भवः, सत्यं वद, एवं धर्मं चर ...’ के मार्ग पर गतिशील बने रहने के लिए प्रेरित करती है जिसमें मूल्यपरक जीवन में व्यवहारगत सिद्धांत से मर्यादित आचरण का नैतिक संबल अंतर्मन को - ‘ चरैवेति ... चरैवेति ...’ के नैसर्गिक व्यवहार को आत्मसात करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा शैक्षणिक क्रियाविधि के अंतर्गत प्रशिक्षण से आत्मिक अध्ययन का विराट अनुष्ठान – आत्मिक अनुकरण और अनुसरण का महत्वपूर्ण स्रोत बनजाता है ।

श्रेष्ठतम गति , मति और सुमति के माध्यम से आत्मिक पवित्रता के प्रकंपन को चहुं दिशाओं अर्थात संपूर्ण आभामंडल को खुशबूदार बनाते हुए मानवतावादी चिंतन में अंतर्मन द्वारा ‘ सर्वे भवंतु सुखिनः ...’ की व्यापकता को स्वीकार करके अध्यात्मवादी चैतन्यता की भावनात्मक सृष्टि से ‘ वसुधैव कुटुंबकम ... ’ की विराट उच्चता पर आत्मतत्व को चेतना के उच्च दर्शन से पुनर्स्थापित किया जा सकता है । मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य - ‘ बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...’ की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरण मूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण - संपन्नता के फरिश्ता स्वरूप से साक्षात्कार मूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है । ”

आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा सत्य दर्शन का प्रमाण :

“ आध्यात्मिक जगत का व्यापक परिदृश्य सत्य दर्शन के स्पष्ट साक्षात्कार द्वारा सामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार की मंगलकारी स्मृति से आत्मिक स्थिति , अवस्था एवं स्वरूप को शक्तिशाली बना देता है जिससे जीवन की अच्छाई द्वारा स्वयं का विधिवत मार्गदर्शन सहज हो जाता है। आध्यात्मिक अनुसंधान में सत्य दर्शन का रहस्योद्‌घाटन प्रामाणिक स्वरूप से होने के कारण , साधना के पथ पर गतिशील साधक के लिए – आत्मानंद के सानिध्य में परिष्कृत आत्मचिंतन द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति का विशिष्ट रूप से प्रेरणादाई आधार बनता है जिससे आत्मिक आश्रय से मौन साधना का मार्ग स्वमेव ही प्रशस्त हो जाता है । ”

पारदर्शी पुरुषार्थ की विशिष्ट भूमिका : जीवन में आत्मिक समृद्धि की अनुभूति हेतु आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा सत्य दर्शन की अनुभूति होती है जिससे संवेदनशील दृष्टिकोण के निर्माण में अंतर्मन क महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करते हुए अंतःकरण की ध्वनि से प्रेरणा दाई जीवन की व्यवहारिकता को निर्भय होकर निभाया जा सकता है । चेतना के परिष्कार में पारदर्शी पुरुषार्थ की विशिष्ट भूमिका नैसर्गिक अंतर्दृष्टि द्वारा आत्मिक स्वतंत्रता का गतिशील प्रभुत्व निर्मित करदेती है जिससे जीवन के आचरण पक्ष में–‘ अहिंसा परमो धर्मः ...’ का आत्मगत उत्कर्ष हेतु जयघोष किया जाना व्यावहारिक दृष्टि से संभव हो जाता है ।

हृदय की निर्मलता से वैचारिक उच्चता : सात्विकता की आत्मगत बोधगम्यता – व्यक्तित्व , कृतिव एवं अस्तित्व के साथ चरित्र में भी हृदय की निर्मलता से वैचारिक उच्चता की स्थापना को सुनिश्चित करती है जिससे मानवीय मनोदशा की विराटता द्वारा समृद्धशाली चैतन्य अभिव्यक्ति जीवन के प्रांगण में प्रस्फुटित हो जाती है । आध्यात्मिक जगत का व्यापक परिदृश्य , सत्य दर्शन के स्पष्ट साक्षात्कार द्वारा सामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार की मंगलकारी स्मृति से आत्मिक स्थिति , अवस्था एवंस्वरूप को शक्तिशाली बना देता है जिससे जीवन की अच्छाई द्वारा स्वयं का विधिवत मार्गदर्शन सहज हो जाता है ।

कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन : जीवात्मा द्वारा आत्मिक अनुसंधान के माध्यम से आत्म हित के रहस्य को जब पूर्णतः आत्मसात कर लिया जाता है “तब पवित्र भावना एवं विचारगत उच्चता द्वारा बेहतर जीवन की ओर अग्रसर होने के लिए पुरुषार्थ तीव्र होजाता है जिसमें आत्मिक कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन की उपलब्धि समाहित रहती है । आध्यात्मिक अनुसंधान में सत्य दर्शन का रहस्योद्‌घाटन प्रामाणिक स्वरूप से होने के कारण , साधना के पथ परगतिशील साधक के लिए – आत्मानंद के सानिध्य में परिष्कृत आत्मचिंतन द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की

प्राप्ति का विशिष्ट रूप से प्रेरणा दाई आध ार बनता है जिससे आत्मिक आश्रय से मौन साधना का मार्ग स्वमेव ही प्रशस्त हो जाता है ।

सत्य दर्शन का प्रमाणिक प्रबोधन : आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन के विहंगम परिदृश्य द्वारा आत्मिक परिवेश की अनुभूति चेतना की चैतन्यता का जीवंत प्रमाण है जिससे मानव जीवन में अच्छाई और सच्चाई का आगमन होते ही बेहतर कार्य व्यवहार से आंतरिक संतुष्टि की सुखद स्थितियां निर्मित होने लगती हैं जो मनुष्य द्वारा उत्तम को अपनाने की निष्ठा का उत्कृष्ट परिणाम बन जाती हैं । श्रेष्ठता परआस्था की व्यवहारिक अवस्था के प्रति श्रद्धायुक्त मनःस्थिति , मनुष्य को महान उपलब्धि हेतु मनुष्यता के मंगलकारी स्वरूप का साक्षात्कार ध र्मगत स्थितियों के अंतर्गत सहजता से करा देती है जिसमें आत्मानुभूति से - 'आत्मानंद का सत्य दर्शन ' आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा प्रमाणिक प्रबोधन के दिव्य स्वरूप में सदा विद्यमान रहता है ।

आध्यात्मिक परिदृश्य में आत्म दर्शन की समग्रता :

" आत्मगत अध्ययन के विविध ा स्वरूप में मनुष्य जीवन की सौभाग्यशाली परंपरा का दार्शनिक सिद्ध ांत और आध्यात्मिक प्रसंग की संवेदनशील अभिव्यक्ति मानवतावादी चिं. तन का चैतन्यता से युक्त संबोधन है जो आत्म तत्व के व्यवहारिक क्रियान्वयन एवं प्रेरणात्मक जुड़ाव का पवित्र पक्ष होता है । आध्यात्मिक परिदृ श्य की समग्रता में आत्मिक अध्ययन एवं पुरुषार्थ अनुसंधान की व्यापक परिधि , शैक्षणिक प्रशिक्षण द्वारा आत्म दर्शन को सुनिश्चित कर देती है जिससे पारदर्शी जीवन तथा यथार्थवादी स्वरूप का सामाजिक परिदृश्य मंगलकारी रूप में प्र खरता से मुखरित हो जाता है । "

संपूर्ण समर्पण द्वारा सहज अवस्था : आध्यात्मिकअनुसंधान की प्रक्रिया में शि क्षा एवं दीक्षा की व्यवहारगत गतिशीलता आत्मा के अध्ययन की ओर व्यक्ति को अभिप्रेरित करती है जिससे सकारात्मक और सार्थक जीवन ढूंढने का शुभ भाव निर्मित होता है और जीवात्मा संपूर्ण एवं समर्पित अवस्था हेतु सहज ही आत्मिक प्रतिबद्धता को अंतर्मन से स्वीकार कर लेती है। जीवात्मा स्वयं की अनुभूति के लिए आत्मिक अध्ययन से संबंधित शि क्षण एवं प्रशिक्षण का अनुगमन करके आत्म तत्व को पुण्यात्मा तथा देवात्मा के निर्माण में नैसर्गिक श्रद्धा से संबद्ध होकर पुरुषार्थ में संलग्न हो जाती है जिससे आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति के अनहद आनंद का स्थायित्व जीवन में पुनर्स्थापित किया जा सकता है ।

आत्म तत्व का व्यवहारिक स्वरूप : चेतना के परिष्कारकी सात्विकता का आत्म साक्षात्कार होने पर जीवन मूल्य एवं अध्यात्म दर्शन का उत्तरदायित्व पूर्ण बोध सुनिश्चित हो जाता है जिससे आत्म हित साधने के साथ सामाजिक उत्थान तथा मनोवैज्ञानिक संदर्भ की व्यवहारिक विवेचना करना न्याय संगत हो जाता है ।आत्मगत अध्ययन के विविध स्वरूप में मनुष्य जीवन की सौभाग्यशाली परंपरा का दार्शनिक सिद्धांत और आध्यात्मिक प्रसंग की संवेदनशील अभिव्यक्ति मानवतावादी चिंतन का चैतन्यता से युक्त संबोधन है जो आत्म तत्व के व्यवहारिक क्रियान्वयन एवं प्रेरणात्मक जुड़ाव का पवित्र पक्ष होता है ।

पुरुषार्थ अनुसंधान की व्यापक परिधि : जीवन में आत्मिक उत्कर्ष की अवस्था का निर्माण हो जाना अनुभूतिगत सत्यता तथा आनंददाई स्थिति की सुखद परिणीति का जीवंत प्रमाण है जो व्यक्ति में संपूर्ण विकासात्मक गतिशीलता और कल्याणकारी परिवेश के स्वतंत्र अस्तित्व को विकसित करने में सदा मददगार भूमिका निभाता है । आध्यात्मिक परिदृश्य की समग्रता में आत्मिक अध्ययन एवं पुरुषार्थ अनुसंधान की व्यापक परिधि , शैक्षणिक प्रशिक्षण द्वारा आत्म दर्शन को सुनिश्चित कर देती है जिससे पारदर्शी जीवन तथा यथार्थवादी स्वरूप का सामाजिक परिदृश्य मंगलकारी रूप में प्र खरता से मुखरित हो जाता है ।

आत्म दर्शन का अनुभूतिगत अवदान : आत्मिक परिवेश की पवित्रता और उससे संबद्ध उच्चता की ओर अग्रसित जीवात्मा द्वारा आध्यात्मिक परिदृश्य में आत्मदर्शन की समग्रता को सरल , सहज एवं विनम्रता की पृष्ठभूमि में प्राप्त कर लेना , आत्मगत अनुभूति की अतिसूक्ष्म गहनतम अवस्था का स्वरूप है जो परिष्कृत चेतना के माध्यम से सदा परिलक्षित होता रहता है । संपूर्णता के संपन्न स्वरूप के अंतर्गत चेतना का आभामंडल चहुं दिशाओं में आत्म दर्शन के अनुभूतिगत अवदान से प्रस्फुटित होता है जिसमें आत्मा के स्वमान , स्वरूप एवं स्वभाव की सर्वोच्चत्तम स्थितियां अपनी नैसर्गिक प्रेरणा दाई भूमिकाओं के निरंतर योगदान से सर्व मानव आत्माओं को धन्यता प्रदान करते हुए गतिशील बनी रहती है।

आत्मगत अस्तित्व द्वारा परमात्म दर्शन का स्वरूप :

" जीवन की महानतम अनुभूति से गतिशील होते हुए स्वयं के सकारात्मक परिवर्तन हेतु आंतरिक समर्पण और पूर्णतावादी दृष्टिकोण को आत्मसात करके आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर अग्रसर रहकर मानव विकास में मौलिक सिद्धांत एवं व्यावहारिक गरिमा को अक्षुण्य बनाए र खा जा सकता है । स्वयं को सदा निमित्त , निर्माण और निर्मल स्वरूप में स्थापित करते हुए – लौकिक , अलौकिक एवं पारलौकिक सत्ताके प्रति - श्रद्धा , आस्था तथा मान्यता के साथ उपदेशके अनुपालन में आज्ञाकारिता एवं धर्मगत आदेश को आत्मसात करके ईश्वरी तत्व बोध तथा निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है । "

आत्मिक प्रवृत्ति के सुखद परिणाम : जीवात्मा द्वारास्वयं की खोज हेतु भागीरथ पुरुषार्थ की पराकाष्ठा तक पहुंचने के लिए चेतना को निरंतर रूप से अनेकानेक प्रयत्न और विशेष जतन करना होता है तब महान जीवन और सकारात्मक अभिप्रेरणा की दिव्य अनुभूति संभव हो पाती है जिसमें आत्मिक समृद्धि एवं जीवन की दुर्लभता का बोध नैसर्गिक रूप से सन्निहित रहता है । स्वयं के विकासात्मक पक्षके प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण का निर्माण करते हुए अग्रसर रहने की आत्मिक प्रवृत्ति एवं प्रकृति के सुखद परिणाम - विकसित जीवन का स्वरूप तथा आध्यात्मिक मूल्य संपन्नता की प्राप्ति है जिसस मानव जीवन में व्यक्तिगत उन्नति और विकास का मार्ग पुण्य की परिणति के रूपमें प्रशस्त हो जाता है।

परमात्म सत्ता की पारलौकिक अनुभूति : आत्मगत अध्ययन की गहनता से चेतना का आंतरिक रूपांतरण एवं भावनात्मक विकास हेतु धर्मगत आचरण के अनुकरण और अनुसरण की आवश्यकता को प्रतिपादित किया जाता है जिससे परमात्म सत्ता की पारलौकिक अनुभूति मनुष्य जीवन के लिए दिव्य उपलब्धि में नैसर्गिक पद्धति तथा विकासात्मक स्वरूप का आधारभूत प्रतिबिंब बन जाए । जीवन की महानतम अनुभूति से गतिशील होते हुए स्वयं के सकारात्मक परिवर्तन हेतु आंतरिक समर्पण और पूर्णतावादी दृष्टिकोण को आत्मसात करके आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर अग्रसर रहकर मानव विकास में मौलिक सिद्धांत एवं व्यावहारिक गरिमा को अक्षुण्य बनाए रखा जा सकता है ।

महान चिंतन में निष्ठावान मनोवृति : आत्मा के संबंध में सूक्ष्म अध्ययन का अनुगमन ही चेतना को आत्मिक विकास हेतु दिव्य गुण तथा महान चिंतन के प्रतिनिष्ठावान बनाता है जिसमें राजयोग शक्तिसे आंतरिक खोज और आत्म अनुभूति की विराटता को जीवन में स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है ।स्वयं को सदा निमित्त , निर्माण और निर्मल स्वरूप में स्थापित करते हुए - लौकिक , अलौकिक एवं पारलौकिक सत्ता के प्रति - श्रद्धा , आस्था तथा मान्यता के साथ उपदेश के अनुपालन में आज्ञाकारिता एवं धर्मगत आदेश को आत्मसात करके ईश्वरी तत्व बोध तथा निजी अस्तित्व की स्वीकारोक्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है ।

परमात्म दर्शन का विराटतम परिदृश्य : चेतना की चैतन्य अनुभूतियों से गतिशील होते हुए -निज निधि निजानंद स्वरूपम के प्रति श्रद्धा , आस्था और मान्यता की पराकाष्ठा तक स्वयं की स्थापना हेतु किए जाने वाले अनवरत पुरुषार्थ इस बात का प्रमाण हैं कि जीवात्मा ने आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति के वृहद स्वरूप की उच्चता तक , निजी जीवन द्वारा संपूर्णसमर्पण से पहुंचने की शक्तिशाली अभिलाषा अंतर्मन में संपूर्ण जतन से सहेज कर रखी है । निजी जीवन के अस्तित्व को विशाल हृदय से स्वीकार करने की आंतरिक जिजीविषा , जीवात्मा को ईश्वरी सत्ता की विराटता से युक्त बोधगम्यता की प्रगाढ़ता को अत्यधिक सहजता के साथ प्रतिपादित कर देती है जिससे आत्मिक , अस्तित्व की नैसर्गिक स्थितियों में आत्मा के - स्वमान , स्वरूप एवं स्वभाव से संबंधित स्वधर्म का - आचरण युक्त , अनुकरण एवं अनुसरण होते ही - सत्यम शिवम सुंदरम , सत्त चित आनंद - सच्चिदानंद का दिग्दर्शन सुनिश्चित हो जाता है ।

परिष्कृत चेतना में जीवन दर्शन की नैसर्गिकता :

" मनुष्य जीवन की खोजपूर्ण प्रवृत्ति के कारण ही आत्म तत्व एवं परमात्मा सत्ता का दार्शनिक बोध संभव हुआ है जिसमें आध्यात्मिक जीवन का आत्मबल और दृढ़ता की शक्ति का नि. रंतर अनुभूतिगतप्रवाह सृष्टि परआत्मिक गतिशीलता एवं जागृत अनादि स्वरूप कीअखंड ऊर्जा को आत्म कल्याण केसा. निध्य में मानवताके मंगल हेतु उपयोग किया जा सकता है । जीवन मेंउच्चतम स्थितियों से महानतमअवस्था की प्राप्तिध ार्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारितहोती है जिसके परिष्कार हेतुमहान जीवन की स्थापनाएवं पवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साध ाने केलिए आध्यात्मिकपरिदृश्य में उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलितार्थद्वारा ही सुनिश्चितहोता है ।"

नैसर्गिक आनंद की गतिशील पृष्ठभूमि : सृष्टि परसमस्त प्राणी मात्र का मूलभूत उद्देश्य आत्मिक सुख,शांति एवं आनंद की प्राप्ति है जिसके लिए आत्मज्ञानके समर्पित स्वरूप में संपन्नता और संपूर्णता हेतुनिरंतरकिया जाने वाला गहन अध्ययन एवं अनुसंधान सेसंबंधित पुरुषार्थ है जिसमें परमात्म स्मृति बोध ाएवंआत्मिक सुख की अनुभूति के अत्यधि ाक गूढ़तम रहस्यसमाहित रहते हैं । जीवन के गरिमामई आत्मपक्ष कोसुदृढ़ स्वरूप में बनाए रखने के लिए आत्मिक शांति कावास्तविक स्वधर्म तथा उपलब्धि ापूर्णजीवन की सहजस्वीकारोक्ति होती है जिससे नैसर्गिक आनंद कीगतिशील पृष्ठभूमि और अनहद नादका वृहद समागमनिर्मित हो जाता है जो चेतना की चौतन्यता को परमानंदअवस्था से संबद्ध कर देता है ।

सात्विक स्वरूप में जीवंत प्रासंगिकता : सतो प्रधान स्थिति के निर्माण में आत्मगत चेतना - मन , वचन,कर्म , समय , संकल्प , संबंध एवं स्वप्न में भी पवित्रता को स्थायित्व प्रदान करने का उत्तम विधि ा से जतन करती है जिसके परिणाम - सात्विक स्वरूप का जीवंत प्रसंग एवं निःस्वार्थ प्रेम के प्रस्फुटित परिवेश में आत्मीयता का आभा मंडल सृजित हो जाता है जिसमें पवित्रता की धरोहर तथा आत्मा का मंगलकारी स्वरूप विद्यमान रहता है । मनुष्य जीवन की खोजपूर्ण प्रवृत्तिके कारण ही आत्म तत्व एवंपरमात्मा सत्ता कादार्शनिक बोध संभव हुआ है जिसमें आध्यात्मिक जीवनका आत्मबल और दृढ़ता की शक्ति का निरंतर अनुभूतिगत प्रवाह सृष्टि पर आत्मिक गतिशीलता एवं जागृत अनादि स्वरूप की अखंड ऊर्जा को आत्म कल्याण के सानिध्य में मानवता के मंगल हेतु उपयोग किया जा सकता है ।

आत्मिक पवित्रता से आराध्य भावभूमि : जगत मेंमानव आत्माओं के आगमन एवं प्रस्थान केमध्यसर्वाधिक महत्वपूर्ण पहेली - मैं कौन हूं ? से आरंभ होती है जिसमें आत्मगत विश्लेषण – आदि स्वरूप की स्मृति तथा पूर्वज देवात्मा के सात्विक मनो जगत से होने के कारण , पूज्य स्वरूप में आत्मिक पवित्रता और आराध्य भाव की विनम्रता जीवन पर्यंत बनी रहती है । जीवन में उच्चतम स्थितियों से महानतम अवस्था की प्राप्ति धर्मगत आचरण की कर्मगत शुचिता से ही निर्धारित होती है जिसके परिष्कार हेतु महान जीवन की स्थ. ापना एवं पवित्र आत्मिक स्वरूप को स्थाई रूप से साधने के लिए आध्यात्मिक परिदृश्य में उपराम स्थिति से कर्मातीत अवस्था तथा अव्यक्त स्वरूप के फलिता. र्थ द्वारा ही सुनिश्चित होता है ।

परिष्कृत चैतन्यता द्वारा जीवन दर्शन : जीवन दर्शन की नैसर्गिकता का परिदृश्य जब परिष्कृत चेतना के उज्जवल स्वरूप में प्रस्फुटित होता है तब आत्मगत बोधगम्यता की चैतन्यता संपूर्णता के परिवेश में लौकिक – भौ. तिक , अलौकिक – अभौतिक के साथ पारलौकिक – पराभौतिक के सूक्ष्म अंतराल सेसंबंधितअंतरसंबंधों की वास्त. विकता से स्वयं को संबद्ध करके आत्महित में सहज ही संलग्न हो जाती है। परिष्कृत चेतना की गौरवान्वित गतिशीलता को बनाए रखने के लिए गहन विश्लेषणात्मक अध्ययनके सानिध्य द्वारा जीवन के व्यवहारिक दर्शन में आध्यात्मिक पुरुषार्थ के प्रति – अगाध श्रद्धा से युक्त आस्था ही अंतर्मन की मान्यता को पारलौकिकता की परिधि के अंतर्गत स्वयंकी नैसर्गिक उपस्थिति कोस्थायित्व प्रदान करने परबल देती है जिससे आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति कापवित्रतम मार्ग प्रशस्तहो जाता है ।

समृद्ध परंपरा द्वारा व्यवहार दर्शन का अनुष्ठान :

" मूल्यगत आचरण के आचार्य की धारणात्मक श्रेष्ठता के प्रति - श्रद्धा , आस्था एवं मान्यताकीनैसर्गिक प क्षधरता सदा मानव जाति को . ' मातृ देवोभवः , पितृ देवो भवः , आचार्य देवो भवः , सत्यं वद ,एवं धर्मं चर ...' के मार्ग पर गतिशील बने रहने के लिए प्रेरित करती है जिसमें मूल्यपरक जीवन में व्यवहारगत सिद्धांत से मर्यादित आचरण का नैतिक संबल अंतर्मन को - '

चरैवेति ... चरैवेति ... ' के नैसर्गिक व्यवहार को आत्मसात करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे आध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा शैक्षणिक क्रिया विधि के अंतर्गत प्रशिक्षण से आत्मिक अध्ययन का विराट अनुष्ठान – आत्मिक अनुकरण और अनुसरण का महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है ।"

आत्मगत समृद्धि द्वारा उच्चतम आयाम : आत्मा की समृद्धशाली परंपरा का निर्वहन सदा ही अध्यात्म की शक्ति से अनुप्राणित होता है जो व्यवहार दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिक जगत में वैज्ञा. निक दृष्टिकोण से नैसर्गिक अभिप्रेरणा के स्वरूप में परिलक्षित होकर सर्वआत्माओं को आत्मगत - स्वमान , स्वरूप एवं स्वभाव की नैसर्गिक अनुभूति करा देता है जिससे मानव जीवनमें आत्म समृद्धि द्वारा उच्च आयाम को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है । मानव जीवन में सैद्धांतिक परिदृश्य का वास्त. विक परिवेश क्रियान्वित होने सेचेतना की संतुष्टता , आत्म परिष्कार में अनिवार्य परिवर्तन से व्यावहारिक परिणाम को प्राप्त कर लेती हैजिससे ज्ञान बोध में सत्य दर्शन द्वारा आत्मिक संपन्नता का सिद्ध स्वरूप जीवात्मा के लिए - ' बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...' के रूप में उद्घाटित हो जाता है ।

क्षमा कल्याण व्यवहार से आत्मगत अनुभूति : आत्मिक उत्कर्ष की ओर गतिशील जीवन का आधारभूत पक्ष भगीरथ पुरुषार्थ से आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है जिसके अंतर्गत योग सत्कर्म में जीवन दर्शन से उपराम स्थिति की अनुभूति का रहस्यवादी स्वरूप आत्मिक चैतन्यता को धारणा - अनुसरण में आत्म दर्शन द्वारा कर्मातीत अवस्था की उच्चता पर स्थापित कर देता है । मानव सेवा से माधव सेवा का जीवित जिजीविषा की जीवंतता से संबद्ध सुखांत जब – ' सेवा अस्माकं धर्मः ... ' का पर्याय बन जाता है तब सेवा परोपकार में परमात्म दर्शन द्वारा अव्यक्त स्वरूप की दिव्य अनुभूति चेतनता को संपूर्णता से अभिभूत कर देती है जिससे क्षमा कल्याण में व्यवहार दर्शन द्वारा मनोगत पवित्रता , समस्त वातावरण को नैसर्गिक रूप से सुशोभित कर देती है ।

प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति में सृजनात्मक समाधान :आत्मगत उच्चता की अभिलाषा में जीवन पर्यंत साधक द्वारा साधना के पथ पर अग्रसर रहकर साध्य तक पहुंचने के लिए पवित्र साधन का ही प्रयोग किया जाना मंगलकारी समृद्धि में उच्च दर्शन से रूपांतरित देवात्मा के प्रतिबिंब का दुर्लभ परिणाम है जो चिं. तनशील चेतना में प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति द्वारा सृजनात्मक समाधान की महान परिणीति के माध्यम से प्रस्फुटित होता है । मूल्यगत आचरण के आचार्य की धारणात्मक श्रेष्ठताके प्रति - श्रद्धा , आस्थाएवं मान्यता की नैसर्गिक पक्षधरता सदा मानव जाति को - ' मातृ देवो भवः ,पितृ देवो भवः , आचार्यदेवो भवः , सत्यं वद , एवं धर्मंचर ...' के मार्ग पर गतिशील बने रहने के लिए प्रेरित करती है जिसमें मूल्यपरक जीवन में व्यवहारगत सिद्धांत से मर्यादित आचरण का नैतिक संबल अंतर्मन को - ' चरैवेति... चरैवेति . .. ' के नैसर्गिक व्यवहार कोआत्मसात करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता हैजि. ससेआध्यात्मिक अनुसंधान द्वारा शैक्षणिक क्रिया विधि के अंतर्गत प्रशिक्षण से आत्मिक अध्ययन का विराट अनुष्ठान - आत्मिक अनुकरण और अनुसरण का महत्वपूर्ण स्रोत बन जाता है ।

सत्यनिष्ठ पवित्रता द्वारा महानतम व्यवहार : जीवनकी गतिशील प्रक्रिया में चेतना द्वारा उत्कृष्ट चिंतन का समावेश हो जाने से – अच्छा सोचना , अच्छा देखना ,अच्छा बोलना , अच्छा सुनना के साथ – साथ , अच्छा करना , भी नैसर्गिक रूप में जीवन लक्ष्य से ही संबद्ध हो जाता है तब - मन , वचन एवं कर्म क`मध्य व्यावहारिक रूप से संतुलन स्थापित करना सहज हो जाता है । लोक व्यवहार में नीतिगत समृद्ध परंपरा द्वारा व्यवहार दर्शन का अनुष्ठान करते समय - " धरत पड़िएपर धर्म न छोड़िए ... " का संदर्भ और प्रसंग इसलिए उल्लेखित किया जाता है क्योंकि भारतीयता के धर्मगत आचरण की व्यवहारिक पृष्ठभूमि में - " प्राण जाए परवचन न जाई ... " से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ाव की मनोभूमि सदा' सत्यनिष्ठ पवित्रता ' द्वारा प्रतिपादित -महानतम व्यवहार को ही रेखांकित करती है ।

आत्मिक पवित्रता में उच्च दर्शन की चैतन्यता :

" सात्विक चेतना के प्रति उत्तरदायित्व का निर्धारण और संधारण निश्चित रूप से आत्मिक परिष्कार में भगीरथ प्रयास द्वारा ' अध्यात्म – पुरुषार्थ' की पूर्णता हेतु निरंतर जतन का सफल परिणाम है जिसमें पवित्र स्वरूप की वास्तविक मनोवृति से 'राजयोग – मौन ' की उच्चता को प्राप्त किया जा सकता है । श्रेष्ठतम गति , मति और सुमति के माध्यम से आत्मिक पवित्रता के प्रकंपन को चहुं दिशाओं अर्थात संपूर्ण आभा मंडल को खुशबूदार बनाते हुए मानवतावादी चिंतन में अंतर्मन द्वारा' सर्वे भवंतु सुखिन...' की व्यापकता को स्वीकार करके अध्यात्मवादी चैतन्यता की भावनात्मक सृष्टि से' वसुधैव कुटुंबकम.... ' की विराट उच्चता पर आत्म तत्व को चेतना केउच्च दर्शन से पुनर्स्थापित किया जा सकता है ।"

आत्मगत स्वभाव द्वारा सात्विक सुमति : मानव जीवन में उच्चता की ओर अग्रसर होने की मूलभूत प्रवृत्ति से संबंधित वास्त. विक प्रकृति सदा आत्मगत स्वभाव में सात्विक सुमति द्वारा ' नियम-संयम ' से संचालित होती रहती है जिसमें नैसर्गिक परिदृश्य की गहन साधनासे ' जप - तप ' के प्रति अंतःकरणसे जुड़ाव का पवित्र स्वरूप स्वयं को अनुशासित बनाए रखने में मददगार सिद्ध होता है । स्वयं को जानने की अभिलाषा व्यक्तिगत पुरुषार्थ में एक नवीन आयाम को स्थापितकरते हुए जब गतिशील होती हैतब आत्मिक स्वरूप में एकाग्र चित्त द्वारा 'ध्यान-धारणा ' की दिशा में अनुगमन सुनिश्चित हो जाता हैऔर चेतना की चेतनता से युक्त पक्ष जिज्ञासु प्रवृति की आंतरिक उत्कंठा से 'स्वाध्याय –सत्य ' की प्राप्ति में श्रद्धा पूर्वक संबद्ध होकर समर्पित हो जाते हैं ।

आत्मिक स्वरूप में कल्याणकारी दृष्टिकोण : आत्म उत्थान के मार्ग पर बढ़ते हुए अंतरजगत , पूर्णतः अभिप्रेरणा से भरपूर हो जाता है जिससे गतिशील जीवन में जागृत चेतना द्वारा ' प्रेम – अहिंसा ' के मूल्यपरक सिद्धांत एवं व्यवहार प्रस्फुटित होते हैं और आत्मिक स्वरूप में कल्याणकारी दृष्टिकोण की सार्थक सिद्धि से ' धर्म – कर्म ' के मार्ग को श्रेष्ठतम विधि के माध्यम से जीवन में प्रशस्त किया जा सकता है । सात्विक चेतना के प्रति उत्तरदायित्व का निर्धारण और संधारण निश्चित रूप से आत्मिक परिष्कार में भगीरथ प्रयास द्वारा ' अध्यात्म - पुरुषार्थ ' की पूर्णता हेतु नि. रंतर जतन का सफल परिणाम है जिसमें पवित्र स्वरूप की वास्तविक मनोवृति से ' राजयोग - मौन ' की उच्चता को प्राप्त किया जा सकता है ।

अध्यात्मवादी चैतन्यता से भावनात्मक सृष्टि : जीवन में प्रार्थना और साधना की शक्ति से भाव एवं विचारजगत के सानिध्य में आत्म जगत को भी महत्ता

ज्ञानेंद्रियों एवं कर्मेंद्रियों का विशिष्ट योगदान समाजवादी अवधारणा में संतुष्टि द्वारा - ' सर्वधर्म समभाव ... ' के स्वरूप को अनुभव करते हुए साम्यवादी विचारधारा की व्यावहारिक पृष्ठभूमि से - 'सर्व जन हिताय ... ' की संकल्पना को पूर्णता प्रदान किया जाता है । श्रेष्ठतम गति , मति और सुमति के माध्यम से आत्मिक पवित्रता के प्रकंपन को चहुंदिशाओं अर्थात संपूर्ण आभामंडल को खुशबूदार बनाते हुए मानवतावादी चिंतन में अंतर्मन द्वारा ' सर्वे भवंतु सुखिन ...' की व्यापकता को स्वीकार करके अध्यात्मवादी चैतन्यता की भावनात्मक सृष्टि से 'वसुधैव कुटुंबकम .... ' की विराट उच्चता पर आत्मतत्व को चेतना के उच्चदर्शन से पुनर्स्थापित किया जा सकता है ।

गौरवान्वित चेतना का परिष्कृत आभामंडल : आत्मिक पवित्रता के माध्यम से जीवात्मा को जब उच्चदर्शन की चैतन्यता का बोधगम्य स्वरूप , जीवन के व्यावहारिक पक्ष के अंतर्गत रूपांतरित होते हुए क्रियान्वित होता है तब आत्मिक अनुभूति , नैसर्गिक स्वरूप में उच्चतम स्तर से प्रतिबिंबित होती है औरचेतना स्वयं के गौरवान्वितआभामंडल से निरंतर परिष्कृत रूप में नवीनता युक्तगतिशीलता को प्राप्तहोती है । आत्म जगत कागुणात्मक पक्ष सदा स्वयं की विराटतम स्वीकारोक्तिको आत्मगत - स्वमान , स्वरूप एवं स्वभाव के संदर्भितप्रसंग में नैसर्गिक रूप से सूक्ष्म विश्लेषण करने काप्रयास करता हैजिससे आत्म - सम्मान की विशिष्टशैली , विभिन्न स्थितियों में भी आत्म तत्व के - अजर ,अमर , अविनाशी , अचल , अडोल तथा स्थित प्रज्ञस्वरूप में विद्यमान रहती है ।

संपूर्ण समर्पण द्वारा सर्वोच्च दर्शन का साक्षात्कार :

" जीवन में चेतना की चौतन्यता का साक्षात्कार हो जाना परम सत्ता के प्रति अगाध श्रद्धा औरआस्थाकी परिणति है जो आत्मिक अवस्था में स्मृति – स्थिति द्वारा स्वरूपगत परिष्कार हेतु सदा मददगार सिद्ध होती है जिसमें निर्मल अंतःकरण के निमित्त - निर्माण से आत्मिक निश्चिंता का नैसर्गिक परिवेश स्वयमेव निर्मित हो जाता है । मनुष्य जन्म की प्राप्ति के पश्चात सनातनधर्म की सभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य - ' बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...' की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरण मूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण - संपन्नता के फरिश्ता स्वरूप से साक्षात्कार मूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है । "

आत्मगत समर्पण का जीवंत उदाहरण : आत्मिक पवित्रता की उच्चतम स्थिति से युक्त जीवन के परिवेश में विशाल हृदय एवं विराट मस्तिष्क के भावनात्मक और वैचारिक पक्ष की श्रेष्ठता से आध्यात्मिक परिदृश्य में संपूर्ण - समर्पण द्वारा सर्वगुण - संपन्नता की महानतम उपलब्धि प्राप्त होती है जिसमें चिंतनशील चेतना के गतिशील स्वरूप से आत्मगत सर्वोच्चता के शिखर पर पहुंचना सुनिश्चित हो जाता है । मानव जाति जब आत्मशक्ति को स्वीकार कर लेती है तब स्वयं की दृष्टि को विकसित करना संभव हो जाता है और व्यक्ति - ' दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलने ...' के गूढ़तम रहस्य को आत्मसात करके ' जीवन - लक्ष्य ' के अंतर्गत ' उमंग - उत्साह 'द्वारा ' दृष्टिगत - महानता ' के संदर्भ और प्रसंग से पुरुषार्थ की गतिशीलता में अभिवृद्धि करके धारणात्मक उच्चता के ज्ञान - योग से धर्मगत सेवा - भाव को पूर्णतया अंगीकार करना आत्मगत समर्पण का जीवंत उदाहरण बन जाता है ।

आधारभूत चेतनता की वैभवपूर्ण उच्चता : जीवन में चेतना की चैतन्यता का साक्षात्कार हो जाना परमसत्ताके प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था की परिणति है जो आत्मिक अवस्था में स्मृति – स्थिति द्वारा स्वरूपगत परिष्कार हेतु सदा मददगार सिद्ध होती है जिसमें निर्मल अंतःकरण के निमित्त – निर्माण से आत्मिक निश्चिंता का नैसर्गिक परिवेश स्वयमेव निर्मित हो जाता है । मनुष्य जीवन को हीरे तुल्य बनाने की आत्मिक सतो प्रधान अवस्था अर्थात लगन में मगन रहने का अनवरत जुड़ाव – ' मन , बुद्धि एवं संस्कार की पवित्रता...' से संबद्ध रहता है जिसमें निर्विकारी कर्मणा में निराकारी – निरहंकारी द्वारा पुरुषार्थगत निर्विघ्नता का आत्मबल संपूर्ण – समर्पण के अनादि स्वरूप से आधारभूत चेतनता की वैभवपूर्ण उच्चता के समदृश्य सदा बना रहता है ।

सनातन धर्म की सभ्यता एवं संस्कृति : आत्मानुभूति के केंद्र में स्वयं को स्थापित कर देने पर निर्धारित मनोदशा से अपेक्षित - परिवर्तन , परिणाम , परिमार्जन ,परिवर्धन एवं परिष्कार की संभावनाएं बढ़जाती हैजिससे उपराम स्थिति में आदि स्वरूप द्वारा - उद्धारमूर्तचेतनता की अभिव्यक्ति सुनिश्चित होजाती है जोकर्मातीत अवस्था के पूज्य स्वरूप में – अनुभवी मूर्त चेतनता , प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मंगलकारी और वरदानी आशीष प्रदान करते हुए प्रस्फुटित हो जाती है ।मनुष्य जन्म की प्राप्ति केपश्चात सनातन धर्म कीसभ्यता एवं संस्कृति का समग्र परिदृश्य - ' बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...' की उच्चता के सानिध्य में गतिशील जीवन की महानता को प्राप्त करने हेतु अव्यक्त स्वरूप में पवित्र आचरण द्वारा उदाहरण मूर्त चेतनता के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो सर्वगुण - संपन्नता के फरिश्ता स्वरूप से साक्षात्कार मूर्त चेतनता की संपूर्णता को सदा ही आत्मिक समृद्धि के स्वरूप में प्रकट करता रहता है ।

चैतन्यता के स्वरूप में देवत्व की गरिमा : चेतनागत स्वरूप में संपूर्ण अवस्था के उच्च आयाम की अभिलाषा ही अंतर्मन की अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण आधार होता है जो आत्म तत्व को समर्पित अवस्था की ओर गतिशीलता प्रदान करने में मददगार बन जाता है जिसमें आत्मिक चैतन्यता के अतीत , आगत एवं अनंत स्वरूप में देवत्व की गरिमा मई वास्तविकता समाहित रहती है जो सर्वगुण संपन्नता के समृद्धशाली स्वरूप हेतु सदा आत्मा को संपूर्ण समर्पण के लिए अनुप्राणित करती रहती है । आत्मा के नैसर्गिक अस्तित्व में अजर , अमर , अविनाशी , अचल , अडोल एवं स्थितप्रज्ञता का गुणात्मक स्वरूप सन्निहित होता है जो जीवात्मा को साक्षी दृष्टा स्थिति में स्थित रहकर स्वयं की अवस्था को पवित्रतम बनाए रखने हेतु स्मृतिगत स्थितियों की निरंतरता से चित्त को परिष्कृत चिंतनशीलता की ओर उन्मुख करता रहता है जिससे परम सत्ता की विराटता में समर्पित होकर आत्मिक संपन्नता की प्राप्ति को सहजता में परिवर्तित किया जा सकता है ।

❑❑

सुनीता चाँदला
लंदन

व्रत-उपवास

यह बिल्कुल भी नई बात नहीं है कि उपवास या व्रत रखना अच्छी बात है । सदियों से प्रथा चलतीआयी है लगभग सभी देशों व अनेकों समुदायों में, अलग अलग नामों से ।कहीं नवरात्र तो कहीं लेंट अथवा रोजे । ये सब धार्मिकता की वजह से है। इनमें सामान्य तथ्य एक ही है – भोजन पर रोक – कुछसमय या पहर के लिये ! और फिर ये सुनिश्चित घंटे खत्म होते ही – प्रीति भोज । साधारण दिनों से भीअधिक रुचि व स्वाद से ज्यादा खाना खा लेना, खुद को ज्यों इनाम देना हो ।

क्या इतना ही सीमित है व्रत और उप. वास का अर्थ ? और प्रयोजन?

उपवास – उप यानि पास , नजदीक य वास अर्थात् बैठना । प्रभु के ध्यान में – ईश्वर के साथ मनलगाकर ।बाहरी विकल्पों से अपने आप को सीमित करके, आत्मा को आत्मा में रमाना, शुभ में रमेंरहना, अशुभ विकल्पों से अपने आप को बचाना उपवास है।

उपवास से ज्ञान, विचार, धैर्य ,पवित्रता बुद्धि का विकास होता है । इसी कारण तो उपवास व्रत को हरपूजा पद्धति में शामिल किया गया है ।

व्रत यानि संकल्प – या किसी कामना की पूर्ति के लिए अनुष्ठान । कसम उठा लेना– जब तक एक निर्धारित उद्देश्य नहीं पूर्ण हो जाये – तो कोई एक प्रिय खाने की वस्तु का त्याग। जबकि त्याग तो गुस्से का, बुरी आदतों का , झूठ का , आलस्य, नकारात्मकता का करना चाहिये ।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए उपवास अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है । नियमित उपवास से पाचन शक्तिअच्छी होती है व शरीर में ऊर्जा का विकास होता है ।मोटापा कम होने के साथ साथ मधुमेह, रक्तचाप(डाइबिटीज , ब्लड प्रेशर) जैसी बिमारियों से निजात / छुटकारा अवश्य मिलता है।वैज्ञानिकों औरडॉक्टर ने भी माना है कि 10–16 घंटों के अंतराल में भोजन करने से मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्यबेहतर होता है ।

जहाँ तक बने अपनी प्रवृत्तियों को कम से कम करें और जब आप संकल्प–विकल्प से बचेंगे, निश्चितरूप से आपके जीवन में आनन्द की अनुभूति होगी और वो उपवास आपके लिए कल्याणकारी बनेगें।

❑❑

विनीता तिवारी
वर्जीनिया

आस्ट्रेलिया की राजधानी कैनब्रा

2016 के बाद इस वर्ष एक बार फिर से आस्ट्रेलिया जाने का अवसर मिला। आस्ट्रेलिया में मेरा सगा छोटा भाई, दो फूफेरे भाई, कुछ बचपन के दोस्त और बहुत से जानने पहचानने वाले रहते हैं इसलिए कभी–कभी भारत की बजाय आस्ट्रेलिया में पारिवारिक मिलन सुनिश्चित किया जाता है।

पिछली बार जब आस्ट्रेलिया गये थे तो सिडनी से ऊपर के हिस्से यानी क्वींस लैंड की तरफ रूख किया था वहाँ की ग्रेट बैरियर रीफ (Great Barrier Reef) दुनिया की सबसे बड़ी मूंगा चट्टान (Coral reef) है। इस मूंगा चट्टान को सी एन एन द्वारा 1997 में दुनिया के 7 प्राकृतिक अजूबों में से एक घोषित किया गया था। इसे देखने के लिए एक छोटे जहाज द्वारा किनारे से काफी दूर समुद्र में जाकर स्नोर्कलींग करनी पड़ती है स्नोरक्लींग समुद्र में की जाने वाली एक ऐसी क्रिया है जिसमें तैरते तैरते समुद्र के अंदर होने वाली गतिविधियाँ देखी जा सकती हैं। स्नोर्कल को हिन्दी में क्या कहा जाता है ये तो पता नहीं मगर एक लम्बी नली जिसके एक सिरे को मुँह में और दूसरे सिरे को पानी से बाहर रखने पर आप आसानी से मुँह से साँस लेने में समर्थ हो जाते हैं और तैरने के लिए बार बार मुँह पानी से बाहर निकालने की जरूरत नहीं पड़ती। आँखों पर चश्मा (goggle) लगाकर, मुँह से साँस लेते हुए आराम से पानी की सतह के नीचे तैरने वाली मछलियों, पेड़ पौधों और रीफ को देखा जा सकता है। दुनिया की सबसे बड़ी रीफ देखने का मेरा यह अनुभव अपने आप में बिलकुल अनूठा था।

2016 के बाद इस साल 2022 में एक बार फिर से आस्ट्रेलिया यात्रा का मौका लगा तो सोचा कि इस दफा सिडनी से नीचे के दक्षिणी प्रदेशों को देखा जाए। सिडनी का ओपेरा हाउस(Opera House) और नीले पहाड़ (Blue mountains) पिछली यात्रा के दौरान ही देख लिए गए थे, तो इस बार का रूख रहा आस्ट्रेलियन कैपिटल टैरिटिरी की तरफ।

सिडनी से करीब ढाई–तीन घंटे की दूरी पर है एक छोटा सा शांतिप्रिय शहर, कैनब्रा। कैनब्रा जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से तो सिडनी और मेलबर्न दोनों से ही काफी छोटा है, मगर है आस्ट्रेलिया देश की राजधानी। आप सोच रहे होंगे कि ऐसे कैसे? कहानी कुछ इस तरह है कि मेलबर्न ठहरा आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र, इसे आप अमेरिका का न्यू यॉर्क समझ सकते हैं। वहीं दूसरी तरफ सिडनी, जो कि जनसंख्या की दृष्टि से आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा शहर है। दोनों ही शहर अपने अपने कारणों की वजह से राजधानी बनने की चाह रखते थे मगर हुआ यूँ कि आपसी मतभेद के चलते दोनों में से कोई भी देश की राजधानी नहीं बन पाया और राजधानी बनने की होड़ में चल रहे मुकाबले से निजात पाने के लिए दोनों शहरों के बीच एक छोटे से शहर, कैनब्रा को बसाकर उसे देश की राजधानी घोषित कर दिया गया। यही कारण है कि कैनब्रा आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध शहरों में से एक नहीं है क्योंकि न तो वह बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र है और न ही जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से ही बहुत बड़ा है और तो और पर्यटन के लिहाज से भी बहुत सुविधाजनक शहर नहीं है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर की सभी विमान सेवाएँ सिडनी और मेलबर्न में ही अधिक आसानी से उपलब्ध है कैनब्रा में नहीं। तो ये हुई बात आस्ट्रेलिया की राजधानी कैनब्रा की। कैनब्रा में एक सप्ताह रुककर हमने संसद भवन (Parliament House), बोटैनिकल गार्डन(Botanical Garden), नेशनल म्यूजियम आव आस्ट्रेलिया (National Museum of Australia), नेशनल आरबोरिटम (National Arboretum) और टिडबिनबिला नेचर रिजर्व (Tidbinbilla Nature Reserve) देखा। टिडबिनबिला में कुछ कंगारू आराम फरमाते हुए तो कुछ चौकीदारी करते हुए नजर आए। नेशनल म्यूजियम में इन दिनों ग्रीस से सामान आया हुआ था और ग्रीस का वैभवशाली इतिहास दिखाया जा रहा था। आरबोरिटम में उजाड़ पहाड़ों को सरकारी मेहनत द्वारा खूबसूरत जंगलों में तब्दील किया गया था। कुल मिलाकर कैनब्रा में समय अच्छा और उपयोगी जानकारियों से लबरेज बीता। ❑❑

डॉ. सुनीता श्रीवास्तव
इंदौर, मध्य प्रदेश

यमराज या रक्षक?

वर्ष 1993 की बात हैं, मैं खरगोन में एक प्रसिद्ध पत्रकार सुभाष यादव के न्यूज नेटवर्क ''विजन प्लस'' में 'ब्यूरो इन चीफ एडिटर' के पद पर कार्यरत रहीं।

मेरे हसबैंड अरुण यादव के पिताजी की शुगर फैक्ट्री (बोरावा गांव स्तिथ) में कार्य करते थे। अपने व्यवसाय के चलते कंपनी द्वारा ही बोरावा में अच्छा–खासा मकान मिल गया था। इसलिए डेली अप–डाउन करती थी।

गांव में अच्छा मकान सुख का स्त्रोत बन चुका था, यहां के प्राकृतिक वनस्पति और पेड़ो की शुद्ध हवा मन को शांत रखती थी। बच्चे भी देवास के स्कूल जाते थे। इसी समयकाल के बीच, एक बेहद रोचक और दिलचस्व घटना की स्मृतियां आज भी मन और रूह को कपा देती हैं।

अगस्त का महीना था, उस दिन सुबह से भयंकर बारिश हों रही थी, उसी दिन दुर्भाग्यवर्ष क्राइम रिर्पोटर देरी से दफ्तर आए तो न्यूज एडिट करने में काफी देर लगी, काम छोड़ा भी नहीं जा सकता था, क्योंकि समाचार सही वक्त पर जनता को पहुंचाना था। लगभग रात के 8.30 बज चुके थे, बाहर देखा तो काफी अंधेरा छाह गया था।

प्रेस की गाड़ी तो निकल गई थी। आखिरी विकल्प बस से सफर करना समझा, खरगोन से अंतिम बस उस समय 9 बजे मिलती थी अतः जल्द से जल्द काम खत्म कर बस स्टेशन पहुंच, बस में जा बैठी और निश्चिंता की सांस लेकर बस की खिड़की से झांका तो बहुत तेज बारिश हों रही, रास्ता खराब था, और डरावने अंधेरे ने तो भूतिया फिल्म का मंजर बना रखा था। किन्तु बस के अंदर होने से तसल्ली थी, बारिश के कारण बस रात के 11% 00 के आस–पास बोरावा गांव पहुंची, जब बस से उतर कर देखा तो चारों तरफ गुप्प अंधेरा, न कोई रोशनी! सिर्फ चारो ओर अंधेरा और अंधेरा३। बारिश जमकर हो रही थी, सुबह के मौसम को देख अपने बैग में रेनकोट रख लिया था।

बेग में से रेन कोट निकाल कर पहनने लगी, अपने हसबैंड को तलाशी तो सूनापन का अहसास हुआ। वह कही नजर नही आए। यहां से 20–25 किलोमीटर की दूरी पर शुगर फैक्ट्री थी वही के स्टाफ क्वाटर्स में हम रहते थे। नित्य वे रात में मुझे लेने फैक्ट्री से यहां ऑफिस आ जाया करते थे। उस समय बोरावा गांव के बारे में कहा जाता था की, बड़ा खराब गांव है। अधिकतर लूटपाट की घटना यहा होती रहती थीं, इसलिए शाम के 6 बजे ही सब दुकानें आदी बंद हों जाती थी। शाम को कोई घर से बाहर नहीं निकलता था। शायद बस मैं और मेरे हसबैंड ही अकेले घर से बाहर रहते थे।

ऐसी हालत में बस स्टॉप पर अकेले खड़े होने पर बड़ी घबराहट हो रही थीं, उस वक्त मोबाइल इतना अधिक प्रचलित नही था। तब तो पेजर होते थे पर नेट कवरेज न होने से सब बेकार।पैदल जाने का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि 25 किलोमीटर की दूरी वह भी कंटीली झाड़ियां, अंधेर, सूनापन और उबड़ खाबड़ रास्ता... कुछ क्षण माहौल को समझने का प्रयास किया। कुछ दूरी पर एक झोपड़ी में एक दीया जलता दिखाई दीया, विचार आया यदि कोई यहां आता है तो उस झोपड़ी में जाया जा सकता है फिर मन घबरा गया, उस झोपड़ी में पता नही कोन होगा..?

एक ही चारा था, भगवान का नाम लेकर चुपचाप खड़े रहकर हसबैंड का इंतजार करू, पास की एक झाड़ी में दुबक कर छुपने का प्रयास करने का सोचा, पर कीड़ों के डर से मन परेशान हो गया।

कुछ देर बाद घोड़ों की आवाज आई, दूर से देखा तो दो घुड़सवार, हाथ में लालटेन लेकर हथियार से सजे आ रहे थे! उन्हें देख होश उड़ गए, मानो यमराज से आज मुखातिब होना पड़ेगा!!

मैं पूरा प्रयास कर रही थी की इनकी भनक न लगे पर, जैसे ही मेरे पास से गुजरे पता नही कैसे उनकी मुझ पर नजर पड़ गई, एक घुड़सवार पास आकर घोड़े पर बैठे ही बैठे बोला– "का.न हो तुम, यहां छुपकर क्या कर रही हों..?" तब तक दूसरा घुड़सवार भी आ गया, उनको सुभाष यादव जी के न्यूज नेटवर्क के बारे में बताया तो बोले– "कोई बात नहीं बहुत तेज बारिश हो रही है, आप हमारे घोड़े पर बैठ जाए, आपको हम सुरक्षित घर छोड़ आएंगे।" और उन्होंने घोड़े को नीचे सड़क पर बैठा दिया, यह सब देख मना किया।
मैं बोली– "मुझे आपके साथ नही जाना३ मेरे हसबैंड रास्ते में होंगे, मुझे पूरा विश्वास हैं।"
वे बोले– "आपको मालुम है यह इलाका अच्छा नहीं है, आज–कल माहौल खराब हैं। हम आपको अकेला यहा नही छोड़ सकते है।"
जब उनके साथ जाने के लिए साफ इंकार किया तो दोनो घुड़सवार ने आपस में बात करने लगें। थोड़ी देर हो गई३ कुछ पलो बाद एक घुड़सवार तेजी से घोड़े को दौड़ाता अंधेरे में गुम हो गया! अब वह दूसरा यमदूत बन मेरे सामने था। तब जिंदगी में पहली बार ईश्वर से किसी को भागने की प्रार्थना करी थी। अजीब सी हालत हों गई थी। लगभग 1 घंटे के बाद एक चमकती हुई काली जिप कीचड़ उड़ाती वहा आकर मेरे सामने खड़ी हो गई, वह जिप पह.चानी लग रहीं थी, देखा तो उसमें से 3–4 पुरुष बहार निकले, उसमें अपने हसबैंड को देख बड़ा सुकून हुआ! सारी घबराहट क्षण भर में खत्म तो हुई पर, झुंझलाहट से कहा– "आप आज क्यू नहीं आए?"
उन्होंने बताया की रास्ते में हमारी गाड़ी खराब हो गई थीं।
इसलिए अपने दोस्त के साथ आना पड़ा।

फिर वह गाड़ी में बैठने के लिए कहने लगे, तो मैं तुरंत गाडी में धम्म से बैठ गई, देखा मेरे हसबैंड की कंपनी के उनके दोस्त थे, रास्ते में उन्होंने बताया की वह मेरे हसबैंड के मित्र की गाड़ी थी। हसबैंड की गाडी खराब होने पर न तो वह कंपनी जा पा रहे थे, न बोरवा, भला हों उन घुड़सवार पहरेदार का जिसने भरी बरसात में सुभाष यादव जी के घर जाकर उनको बताया की, कोई महिला अकेली अपने पति के इंतजार में बस स्टॉप पर खड़ी हैं। तब उन्होंने मेरे हसबैंड के यहां यह सूचना भेजी और वह लोग आ पाए। तभी इनके मित्र बोले– "हम समझ गए कि श्रीवास्तव जी की मिसेज होंगी, जब क्वॉर्टर पर ताला देखा तो समझ आ गाया।"
यह सब जानकर बड़ा अखरा की, जिनको मैं यमराज के रूप में लुटेरे, डाकू या दुश्मन समझ बैठी थी। वे दरअसल रक्षक निकले। कई बार वहा से गुजरने पर सोचा काश किसी तरह से वे दोनो रक्षक मिल जाए तो आभार व्यक्त कर दे पर, मिलना ही नही हुआ।
आज भी उस घटना के बारे में सोचकर मन कांप जाता है, बोरावा में कुत्ते भी जंगली शेर से कम नहीं हैं, वो तो बस ईश्वर की कृपा हैं।

❑❑

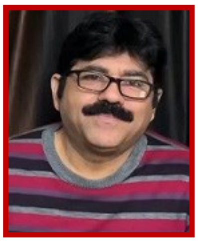

सुरेश मेहरा 'राज'
शाहदरा

आज की माँ .?

किसी ने धरती माँ को माँ से मिलाते हुए सपने में भी यह न सोचा होगा कि ऐसा दौर भी आएगा जब औरों की तरह माँ के व्यवहार में भी इतना परिवर्तन आ जाएगा ।कितने दुख की बात है कि, आज के दौर में भी यह बात कहनी आसान नहीं है कि ,अब माँ भी पहले जैसी माँ नहीं रही ।आज की माँ अगर गीले में सोती तो डायपर का व्यवसाय करोड़ों अरबों तक न पहुंच पाता । मैंने देखा है आज की माँ बच्चों को अपना दूध सिर्फ इसलिए नहीं पि. लाती कि कहीं उसकी फिगर खराब न हो जाए । आज की माँ अपने बच्चों को बचपन से ही पिता के खिलाफ सिर्फ इसलिए भड़काती रहती है क्योंकि उसे घर में राज करना है ।जिसने खुद किसी औरत की कोख से जन्म लिया है ।आज की उसी माँ को सिर्फ एक अँधा और गूंगा पति और एक बेटा चाहिए ।आज की माँ बच्चों को सिर्फ मारती ही नहीं अपितु गंदी गंदी गाली भी बकती है । आज की माँ पिता के काम पर जाने के बाद जब फोन में लगी रहती है तो उसे ये एहसास कौन दिलाए कि उसकी 15 साल की बेटी पार्क में किसी ऐसे लड़के के साथ बैठी है जो सिर्फ इस फिराक में है कि कैसे इस लड़की की अस्मत लूटी जाए ।

आज की माँ ने तो अपनी ही बेटियों से धंधा करवा कर वैश्याओं के काम में भी दखलंदाजी देना शुरु कर दिया है ।यह सब देखते हुए हम कैसे माँ की तुलना धरती माँ से कर सकते हैं ।

❑❑

नितिन तिवारी
जापान

हिंदी

हिन्दी की गूंज
मेरी आन बान शान हिंदी
देश की भाषा हिंदी
मेरी पहचान है हिंदी
देश के माथे पर
स्वाभिमान की बिंदी हिंदी
देश प्रदेश से लेकर
सात समंदर पार
परदेस में भी गूंज रही है
हिंदी
आओ अपनी हिंदी को बनाएं
भाषाओं का सिरमौर
मिलकर करें चहुंओर
प्रयास
तभी चारों दिशाओं में
फैलेगी हिंदी
तभी गूंजेगी
हिंदी की गूंज...

❑❑

शेफालिका श्रीवास्तव
भोपाल

काँपता सूरज

ग्रीष्म ऋतु में आग बरसाता सूरज ,
अपनी तपन दिखाता सूरज
देखो थर–थर काँप रहा है ।
किरणों पर इतराता सूरज ,
बादल की ओढ़ दुशाला ,
तन मन अपना छुपा रहा है ।
प्रचंड ताप का स्वामी भास्कर ,
आज हार गया हिमपात मे ,
है मगर स्वाभिमानी सदा से ,
कल चमकेगा नीलगगन मे ,
सुनहरी किरणों की आभा,
और दमकता यौवन लेकर ,
देने जन जीवन को प्राण सुधा
वापस लौटेगा आसमान मे !
आज ठंड से काँपता सूरज
बादल संग आँख मिचौली
खेलता सूरज ,

पूरी सुनहरी आभा के संग
कल चमकेगा आसमान

❑❑

नाम – साक्षी सिंह
आयु – 14वर्ष
कक्षा – 9

लोकार्पण

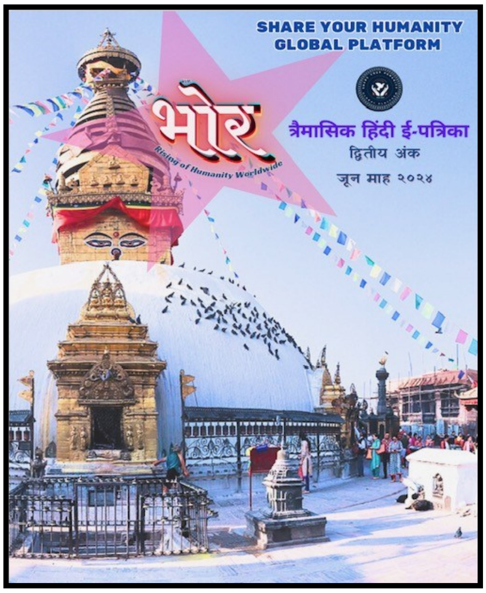
SHARE YOUR HUMANITY
GLOBAL PLATFORM
भोर
Rising of Humanity Worldwide
त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका
द्वितीय अंक
जून माह २०२४

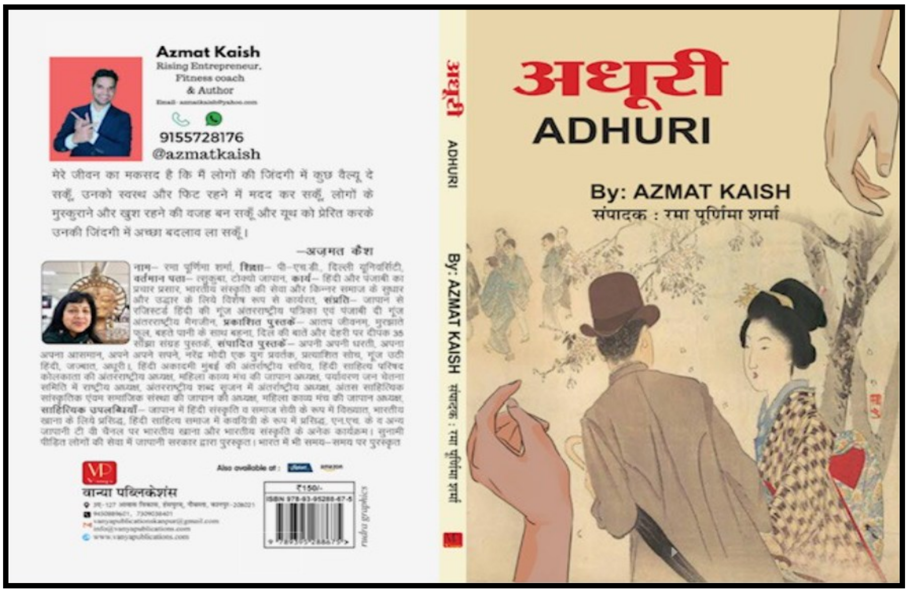
Azmat Kaish
Rising Entrepreneur,
Fitness coach
& Author
9155728176
@azmatkaish
मेरे जीवन का मकसद है कि मैं लोगों की जिंदगी में कुछ वैल्यू दे सकूँ, उनको स्वस्थ और फिट रहने में मदद कर सकूँ, लोगों के मुस्कुराने और खुश रहने की वजह बन सकूँ और यूथ को प्रेरित करके उनकी जिंदगी में अच्छा बदलाव ला सकूँ।
—अज़मत कैश
वान्या पब्लिकेशंस
अधूरी
ADHURI
By: AZMAT KAISH
संपादक : रमा पूर्णिमा शर्मा

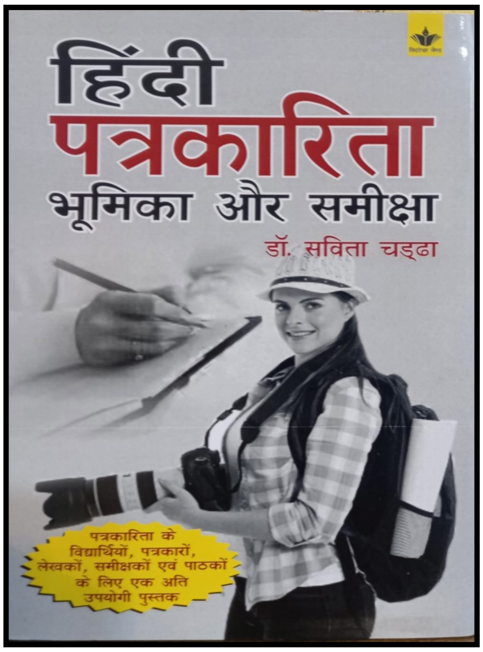
हिंदी
पत्रकारिता
भूमिका और समीक्षा
डॉ. सविता चड्ढा
पत्रकारिता के विद्यार्थियों, पत्रकारों, लेखकों, समीक्षकों एवं पाठकों के लिए एक अति उपयोगी पुस्तक

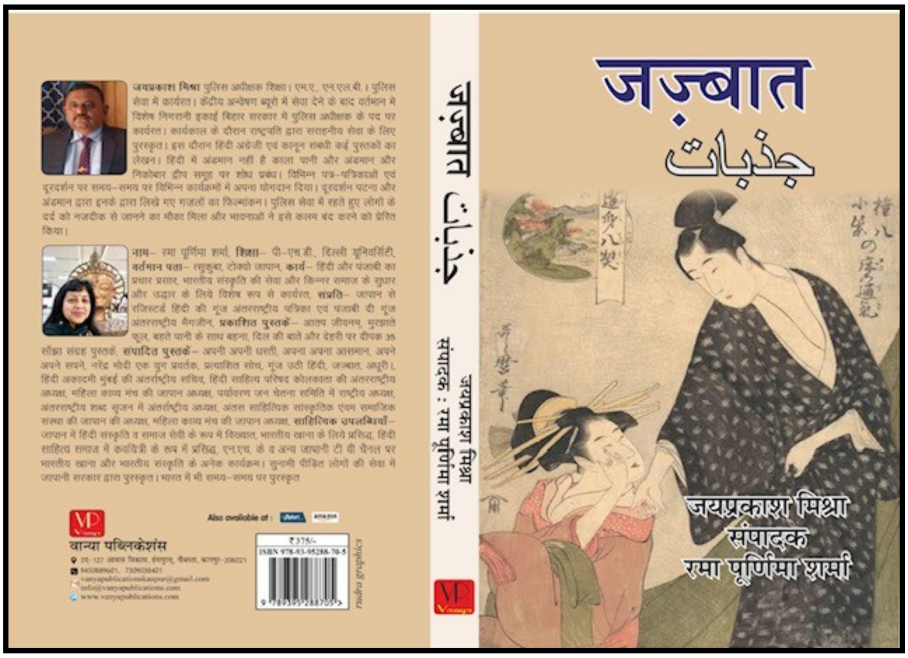
वान्या पब्लिकेशंस
जज़्बात
جذبات
जयप्रकाश मिश्रा
संपादक : रमा पूर्णिमा शर्मा
जयप्रकाश मिश्रा
संपादक
रमा पूर्णिमा शर्मा

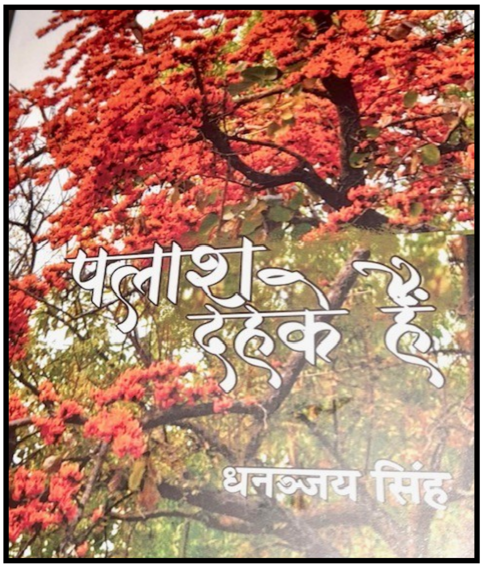
पलाश दहके हैं
धनञ्जय सिंह

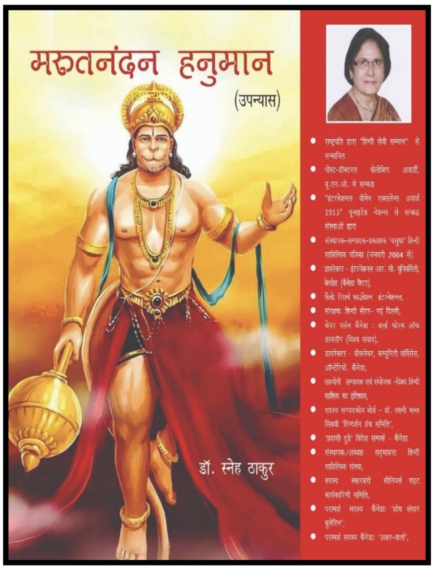
मरुतनंदन हनुमान
(उपन्यास)
डॉ. स्नेह ठाकुर

WORLDWIDE
BOOK OF RECORDS
सशक्त दिव्यांग
डॉ विदुषी शर्मा
डॉ. दुर्गेश नंदिनी

धनिष्ठा मित्तल
कक्षा 6–बी
आयु 11वर्ष

मायरा अरोड़ा
कक्षा –पांचवी
शिव नादर
स्कूल नोएडा

रितिका जाटव
उम्र 12 वर्ष

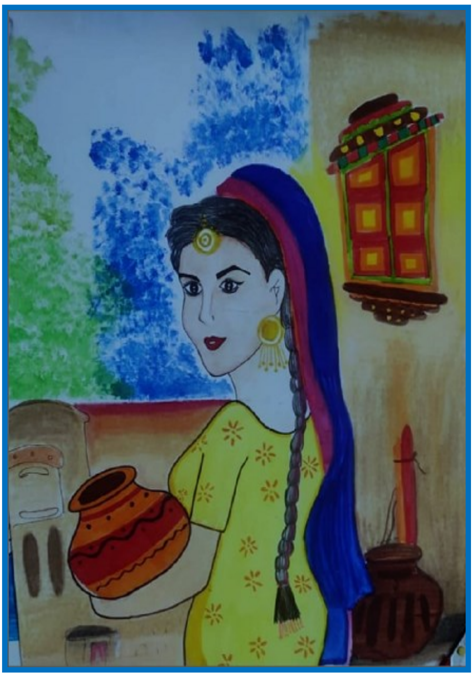

भूमिका
आयु – 12 वर्ष
कक्षा – 7
सुदीति ग्लोबल एकेडमी,

कवर पृष्ट
कुवेश सिंह
12 वर्ष,कक्षा–सात
साईं राम इंटरनेशनल स्कूल
नालागढ़,सोलन, भारत

ज्योति कौर
उम्र 13 वर्ष
कक्षा 7
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय
दादर(अलवर)राजस्थान, भारत

नाइशा चौरसिया
13 वर्ष
दिव्यांग